दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
Directorate of Distance Education
जम्मू विश्वविद्यालय
University of Jammu

जम्मू

पाठ्य सामग्री
Study Material
सस्ंकृत
B. A. SEMESTER - II

SUBJECT : SANSKRIT **Lesson No. 1 — 22**

Course No. SA-201

सत्र–द्वितीय

SEMESTER - II

DR. RAJBER SINGH SODHI
Course Co-ordinator

इस पाठ्य सामग्री का रचना–स्वत्व/प्रकाशनाधिकार
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जम्मू विश्वविद्यालय,
जम्मू – 180006 के पास सुरक्षित है।

http ://www.distanceeducationju.in
Printed and published on behalf of the Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu by the Director, DDE, University of Jammu, Jammu

Title of the Course : Poetry & Drama

© Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu, 2021

- All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permisison in writing from the DDE, University of Jammu.
- The script writer shall be responsible for the lesson / script submitted to the DDE and any plagiarism shall be his / her entire responsibility.

Printed By : Durga Printers, Ambphalla Jammu/ 2021/100

SYLLABUS OF B.A.-II SEMESTER

"नाटक एवं नाट्यशास्त्र" अंक 80

उद्देश्य – विद्यार्थियों में संस्कृत नाटक के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना तथा नाट्यशास्त्र का ज्ञान देना।

प्रथम खण्ड – "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के पद्याशों में से किन्ही दो की सप्रसङ्ग व्याख्या।
$7^{1/2}$ x 2 =15 अंक

द्वितीय खण्ड– "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के गद्याशों में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या।
$7^{1/2}$ x 2 =15 अंक

तृतीय खण्ड– (भाग–क) "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक सम्बन्धी प्रश्न 10 अंक

i) नाटक का कथानाक तथा नाटक के नाम की सार्थकता।

ii) नाटक के अंकों को आलोचनात्मक सार।

iii) नाटक के पात्रों का चरित्र–चित्रण।

iv) नाटक की नाटकीय विशेषताएँ।

v) नाटक की भाषा–शैली तथा रस विवेचन।

vi) नाटककार भास का साहित्यिक परिचय तथा उनकी नाट्यकला

(भाग–ख) "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के निम्नलिखित पात्रों के विषय में संस्कृत में दस–दस वाक्य। 5 अंक

उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती, यौगन्धरायण, विदूषक।

चतुर्थ खण्ड–

i) संस्कृत नाटक की उत्पति विषयक विभिन्न मतों का विवेचन।

ii) संस्कृत नाटकों की सामान्य विशेषताएँ।

iii) कालिदास – नाटककार के रूप में।

iv) शूद्रक– नाटककार के रूप में।

v) हर्षवर्धन–नाटककार के रूप में

vi) भवभूति की नाट्यकला।

पञ्चम खण्ड – (भाग–क) साहित्यदर्पण के आधार पर निम्नलिखित विषयों का विवेचन

i) रूपक का लक्षण एवं भेद।

ii) नायक का लक्षण एवे भेद।

iii) नायिका का लक्षण एवं भेद। 10 अंक

(भाग–ख) बहुविकल्पीय प्रश्न (Objective Type Questions)
10 अंक

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' – प्रकाशक–सहित्यपुस्तक भण्डार, मेरठ, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, मोतीलाल वनारसीदास दिल्ली।

2. भास नाटक चक्रम – पं॰ बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक–चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।

3. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा– डॉ॰ चन्द्रशेखर पाण्डेय, प्रकाशक–साहित्य निकेतन कानपुर।

4. संस्कृत कविदर्शन – डॉ॰ भोलाशंकर व्यास, प्रकाशक–चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

5. साहित्यदर्पण – प्रकाशक–चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, मातीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

पाठ (1)

प्रथम खण्ड

रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 अन्वय

1.4 व्याख्या

1.5 अलंकार

1.6 बोध प्रश्नाः

पाठ – 1

स्वप्नवासदत्तम नाटक के प्रथम अंक के पद्यों की सप्रसङ्ग व्याख्या–

रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में भास का विशिष्ट स्थान है और भास के नाटकों में 'स्वप्नवासवदत्तम्' काव्य गुणों एवं नाट्कीय तत्वों की दृष्टि से निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ कृति है। कथावस्तु की रोचकता और भाषा शैली की सरसता एवं सरलता के कारण, यह नाटक संस्कृत के कतिपय लोकप्रिय नाटकों में प्रमुख स्थान रखता है।

नाटक के प्रथम श्लोक में ही चन्द्रमा की सुन्दरता का वर्णन बड़ी कौशलता से किया है–उदयकालीन नूतन चन्द्रमा के समान कान्ति वाली, मदिरा के पान करने से विशेष बल सम्पन्न या आलस्ययुक्त अथवा अपनी प्रेयसी रेवती जी को मदिरा समर्पण करने वाली तथा वसन्त के समान मनोहर श्री बलदेव जी के घुटनों तक लम्बी और शोभा वाली दोनों विशाल भुजायें तुम्हारी, अर्थात दर्शक समाज की रक्षा करें।

स्वप्नासवदत्तम प्रकृति वर्णन में भी पीछे नहीं है, किस तरह आश्रमवासी फल, कन्दमूल खाकर उस वन में प्रसन्न रहते हैं, यदि उन्हें कोई अकारण तंग करें तो वह क्रोधित हो जाते हैं। इस लिये कहा है कि नश्वर सम्पत्ति से प्रमत्त हुए ऐसा कौन ढीठ तथा विनय शून्य पुरूष है जो अपनी आज्ञा से इस शान्त तपोवन को अशान्त सा बना रहा है।

इसी तरह भास–नाटकों में स्वप्नवासवदत्त की लोकप्रियता का ज्वलन्त प्रमाण है।

1–2 उद्देश्य

1. छात्रों में संस्कृत साहित्य प्रति रूचि उत्पन्न करना
2. छात्रों को संस्कृत नाटकों के मचंन में योग्यता पैदा रहना
3. छात्रों में कल्पना शक्ति का विकास करना
4. छात्रों में सरल संस्कृत वाक्य निर्माण की योग्यता पैदा करना
5. छात्रों में संस्कृत के छोटे–छोटे वाक्यों द्वारा संस्कृत पढ़ने के लिये रूचि पैदा करना।
6. छात्रों को भाषण कौशल तथा संस्कृत लेखन का विकास करना।
7. छात्रों में संस्कृत शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
8. छात्रों को शुद्ध उच्चारण के लिये प्रोत्साहित करना।
9. छात्रों को संस्कृत नाटकों की रचना के लिये प्रेरित करना।
10. छात्रों में प्राचीन संस्कृत साहित्य में रूचि पैदा करना।

1–3 अन्वय

प्रथम अंक के पद्य संख्या 3, 5, 6, 8, 10, 11, 16, का अन्वयः

श्लोक संख्या–3

धीरस्य आश्रम संश्रितस्य वसतः तुष्टस्यः वन्यैः फलैः
मानार्हस्य जनस्य वल्कलवतस् त्रासः समुत्पाद्यते। भो उत्सिक्तः
विनयादपेतपुरूषः चलैः भाग्यैः विस्मितः अंय कः इंद निभृतं
तपोवनं आज्ञया ग्रामी करोति ।। 3 ।।

श्लोक–सं 5

भवान नृपाऽपवादं परिहरतु आश्रमवासिषु पुरुषं वाक्यम् न प्रयोज्यम यतोहि एते मनस्विनः नगरपरिभवान् विमोक्तुं वनमभिगम्य वसन्ति ।। 5 ।।

श्लोक सं–6

तपोधनानि तीर्थोदकानि समिधः कुसुमानि दर्भान् वनात् स्वैरम् उपनयन्तु। हि धर्मप्रिया नृपसुता तपस्विषु धर्मपीड़ां न इच्छेत्–एतत् अस्याः कुलव्रतम् ।। 6 ।।

श्लोक–सं–8

कस्य कलशेन अर्थः कः वासः मृगयते यथानिश्चितं दीक्षां पारितवान् पुनः कः किमिच्छति यत गुरोः देयं भवेत। धर्माभिरामाप्रिया नृपजा आत्मानुग्रहमिच्छति अतः यस्य यत् समीप्सितं अस्ति तद् वदतु अद्य कस्य दीयताम् ।। 8 ।।

श्लोक–सं. 10

अर्थः दातुं सुखं भवेत प्राणाः दातुं सुखम् तपः दातुं सुखम् अन्यत् सर्वं सुखम् भवेत् किन्तु न्यासस्य रक्षणं दुखम् ।। 10 ।।

श्लोक–सं. 11

यैः प्रथमं विपत्तिः दृष्टा तैः अथ पद्मावती नरपतेः महिषी भवित्री तत्प्रत्ययात् इदं कृतम हि विधिः सुपरीक्षितानि सिद्धवाक्यानि उत्क्रम्य न गच्छति ।। 11।।

श्लोक–सं–16

खगा वासोपेताः मुनिजनः सलिलमवगाढ़ः प्रदीप्तः अग्निः भाति धूमः मुनिवनं प्रविचरित अपि च असौ दूरात् परिभ्रष्टः रविः संक्षिप्त किरणः सन रथं व्यावर्त्य शनैः अस्तशिखर प्रविशति ।।16।।

1.4 व्याख्या

धीरस्या श्रमसंश्रितस्य..

....ग्रामी करो त्याज्ञया।

सप्रसंगः–

प्रस्तुत श्लोक भास विरचित "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के प्रथम अंक से उद्धृत् है! सूत्रधार कहता है कि हटो हटो महानुभावों क्योंकि राजकन्या पदमावती इस तपोवन में अपनी माता के दर्शनों के लिये आ रही है, तदुपरान्त सन्यासर वेषधारी यौगन्धरायण और अवन्ति देश के नारी के वेष को धारण किये हेयु वासवदता का प्रवेश। यौगन्धरायण (कान लगाकर) क्या जहां भी लोगों को हटाया जा रहा है क्योंकि–

व्याख्या :–

धीर आश्रमवासी तथा स्थिरचित वाले, वन के फल खाकर संतुष्ट रहने वाले, वृक्षों की छाल के वस्त्र पहनने वाले पूजायोग्य आश्रमवासी जनों को त्रास दिया जा रहा है। अहो, नश्वर सम्पत्ति से प्रमत्त हुआ ऐसा कौन बेशर्म तथा विनय शून्य पुरुष है जो अपनी आज्ञा से इस शान्त तपोवन को अशान्त सा बना रहा है।

विशेष :–

मगध राजकुमारी पद्मावती तपोवन में निवास करने वाली अपनी माता महादेवी के दर्शन करने आ रही है। अतः उसके पीछे आने वाले सेवक वर्ग सभी तपोवन वासियों को उद्दण्डतापूर्वक मार्ग के मध्य से हटा रहा है। सेवक वर्ग राजकुमारी का प्रिय है। एवं कृपापात्र है। अतः उसके द्वारा दर्पित होकर धृष्टता प्रदर्शित करना स्वाभाविक है। प्रस्तुत पद्य में महाकवि ने तपोवन एवं तपस्वियों का यथार्थ एवं स्वभाविक चित्रण किया है, तपस्वी लोग धीर अर्थात् स्थिरचित होते

है। महान कवि कालिदास ने कुमार सम्भव में धीर शब्द की परिभाषा सुरम्य रूप में की है।

श्लोक–

परिहरतु भवान्....................मनस्विनो वसन्ति !

सप्रसंग :–

प्रस्तुत पद्य "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के प्रथम अंक से लिया गया है इस पद्य में यौगन्धरायण तथा वासवदता का सम्भाषण चल रहा है। इसी बीच कञ्चुकी का प्रवेश हो जाता है।

व्याख्या :–

कञ्चुकी के अनुसार कि आप राजा पर कलंक न आने दे आश्रम–वासियों पर कठोरता का व्यवहार नहीं करना चाहिये ये मनस्वि लोग नगरों के तिरस्कारों से बचने के लिये वन में आकर निवास करते हैं।

विशेष :–

भास ने इस पद्य से तपोवन वासियों की मान मर्यादा का सुन्दर दिग्दर्शन किया है। तपस्वीजन मनस्वी होते हैं। अतः वह सदैव पूजनीय जनों का तिरस्कार अनिष्टकारक है।

श्लोक–

तीर्थोदकानि समिधः....................कुलव्रतमेत तदस्याः !

सप्रसंग :–

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक से समादृत् है कञ्चुकी तथा यौग–धरायण मध्य वार्तालाप चल रहा है। कंचुकी के अनुसार कि हमारे महाराज दर्शक पधारे हैं, जिस का नामोच्चारण गुरूजनों ने किया है। यह उस की बहिन पदमावती है वह अपनी माता जी के दर्शनार्थ आई हुई हैं इस कारण आज इसने आश्रम में रहना पसंद किया है।

व्याख्या :–

वन से तपस्या के साधन–तीर्थों का जल, हवन की लकड़ियां फूल कुशायें वे रोकटोक ले आया करें यह राजकुमारी धर्म पर प्रेम रखने वाली है। यह तपस्वियों के धर्म कार्यों में बाधा डालना नहीं चाहती। यह सदा से इनकी कुल परम्परा का आचरण है।

विशेष :–

जहाँ महान कवि भास ने तत्कालीन राजाओं के चरित्र का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। राज परिवार के लोग भी उस समय आश्रम मर्यादा का सतर्कता से पालन किया करते थे। यह सांसारिक सुखों को लात मारकर वृद्धावस्था में आश्रम में जाकर तपश्चर्या का जीवन व्यतीत किया करते थे।

श्लोक–

कस्यार्थ कलशेन...................तत कस्याध किं दीयताम !

सप्रसंग :–

प्रस्तुत श्लोक भास विरचित "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के प्रथम अंक से उदधृत् है। कंचुकी तथा पद्मावती के मध्य वार्ता हो रही है। कंचुकी के अनुसार उन आश्रम वासियों को कहता है कि यहाँ पूजनीय मगधराजपुत्री पद्मावती आप के स्वागत से विश्वस्त होकर धर्माचरण की कामना से आप लोगों को दान देने के लिये निमन्त्रित कर रही है।

व्याख्या :–

किसे कलश की आवश्यकता है। किस को वस्त्र की इच्छा है। निश्चित रूप से दीक्षा प्राप्त किया हुआ कौन दीक्षित जन क्या चाहता है। जो कि गुरुदेव के लिये (गुरु दक्षिणा में) देने योग्य हों। धर्मात्मा तपस्वियों पर श्रद्धा रखने वाली धर्मशीला राजकुमारी इस तपोवन में अपने ऊपर आप का अनुग्रह चाहती है। अतः जिसको जिस किसी भी वस्तु की इच्छा हो वह कहे आज किस को क्या दिया जाये।

विशेष :–

इस पद्य में पदमावती की दानशीलता का सुरम्य चित्रण प्रस्तुत किया गया है। तपस्विजन निःसंकोच होकर अपनी आवश्यकताओं को उनके सामने रखें वह जो चाहे सो मांगें पदमावती तपस्वियों को यथेच्छा दान देकर ही अपने को कृतार्थ समझती है। महान कवि भास ने जहाँ कंचुकी द्वारा गुरु दक्षिण का निर्देश किया है। यह भारत की एक परमपुनीत परम्परा थी। विद्यार्थी आश्रमों में रहकर गुरु के चरणों में शिक्षा प्राप्त किया करते थे शिक्षा की समाप्ति के बाद शिष्य अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य के अनुसार गुरू दक्षिणा देते थे।

श्लोक–

सुखमर्थो भवेत दातुं...................न्यासस्य रक्षणम् ।

प्रसंग :–

प्रस्तुत पद्य भास विचरित "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के प्रथम अंक से समादृत् है। यौगन्धरायण वासवदता, तथा कञ्चुकी का वार्तालाप हो रहा है क्योंकि यौगन्धरायण वासवदता को पदमावती के पास रखना चाहते हैं। जब यौगन्धरायण पदमावती से वासवदता को प्रार्थना करते है तो कंचुकी कहता है कि राजकुमारी इसकी प्रार्थना निस्संदेह बहुत बड़ी है। किस तरह अग्डीकार कर ले क्योंकि–

व्याख्या :–

धन सुख से दिया जा सकता है। प्राण सुख से दिये जा सकते हैं तप सुख से दिया जा सकता है। और सर्वस्व भी सुख से दिया जा सकता है। किंतु धरोहर का रखना अत्यन्त कठिन कार्य है।

विशेष :–

कञ्चुकी की इस उक्ति में एक वास्तविकता का उद्घाटन हुआ है उत्तरदायित्व विश्व में सबसे बड़ी वस्तु है। और फिर

धरोहर की रक्षा का उत्तरदायित्व तो और भी महत्वपूर्ण है उस का निर्वाह सरल नहीं है।

श्लोक–

पदमावती नरपते र्महिषी भवित्री...................विधि सुपरीक्षितानि !

प्रसंगः–

प्रस्तुत पद्य भास विचरित स्वप्नवासवदत्तम नाटक के प्रथम अंक से समादृत है। यौगन्धरायण के अनुसार मेरा आधा भार हलका हो गया, जैसा मन्त्रियों के साथ परामर्श किया था वैसा ही कार्यरूप में हो रहा है। जब वासवदता के चरित्र पवित्रता की बात आयेगी तो पदमावती ही इसकी साक्षिणी होगी। क्योंकि–

व्याख्या :–

यौगन्धरायण के अनुसार पदमावती हमारे महाराज की पटरानी होगी। इसलियेयह कार्य (वासवदता को पदमावती के पास सौपना) हमने उन भविष्यवक्ताओं के कहने के विश्वास पर कर दिया है। जिन्होंने हमारे स्वामी पर आने वाली विपत्ति को पहले ही अपने चमत्कारिक ज्ञान के बता दिया था जिसे हमने प्रत्यक्ष देख लिया। निस्सन्देह भक्तिव्यता भी अच्छी तरह परखे गसे सिद्ध–वाक्यों के अनुसार ही चलती है।

विशेष :–

यौगन्धरायण की इस उक्ति से एक सार्वभौम सत्य के दर्शन होते हैं। सिद्धों की वाणी का भाग्य अतिक्रमण नहीं करता भक्तिव्यता उन की वाणी के पीछे दौड़ती है। महान कवि भवभूति ने भी कहा है। **"लोकिकनाम हि साधुनामर्थं वागनुवर्तते"** इत्यादि।

श्लोक–

खगा वासोपेताः....................प्रविशति शनैरस्त...........शिखरम् !

प्रसंग :–

प्रस्तुत पद्य भास विरचि "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के प्रथम अंक से समाधृत् है। वासवदत्ता तथा कंचुकी के मध्य वादविवाद चल रहा है। तथा बीच में तापसी आ जाती है और कहती है कि तुम्हें तुम्हारा पति जल्द ही मिल जायेगा।

व्याख्या :–

क꣡चुकी के अनुसार क्योंकि इस समय पक्षी अपने घोसलों में बैठ गये हैं। मुनिजन नहाने के लिये पानी में उत्तर पड़े हैं। जलती हुई अग्नि चमक रही है। तपोवन के ऊपर धुंआ उठ–उठकर फैल रहा है। सुदूर आकाश से गिरा हुआ वह सूर्यदेव भी अपनी किरणों को समेटकर और एक गति को रोककर धीरे धीरे अस्ताचल के शिखर की ओर जा रहा है।

1.5 अलंकार :

पद्य–संख्या (3) तीन में परिकर अलंकार है !

पद्य सं. (5) में काव्यलिङ्ग अलंकार है।

पद्य सं. (6) में काव्यलिङ्ग अलंकार है।

पद्य सं. (10) में अर्थान्तयास अलंकार है।

पद्य सं. (11) में काव्यलिङ्ग अलंकार है।

पद्य सं. (16) में स्वभावोक्ति अलंकार है।

1.6

बोध प्रश्नाः

1. वत्सराज उदयन का मन्त्री यौगन्धरायण किस वेश में तपोवन में आता है।
2. कञ्चुकी तपोवन में पदमावती के साथ क्या घोषणा करता है।
3. यौगन्धरायण पदमावती के सामने क्या प्रस्ताव रखता है।
4. पदमावती कञ्चुकी के द्वारा क्या स्वकृति प्रधान करती है।
5. ब्रह्मचारी तपोवन में आकर क्या वृत्तान्त सुनता है।
6. पदमावती के विषय में भविष्यवक्ताओं ने क्या भविष्यवाणी की थी।
7. यौगन्धरायण का क्या मनोरथ था।
8. तपोवन में किस द्रव्य की सुगन्धि आ रही थी।
9. ब्रह्मचारी किस गांव से आया था।
10. ब्रह्मचारी किस लिये उस गांव में निवास करता था।

रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 अन्वय

2.4 व्याख्या

2.5 अलंकार

2.6 बोध प्रश्नाः

पाठ (2)

स्वप्नवासवदत्तम के चतुर्थ अंक का सप्रसंग व्याख्या

2.1 रूपरेखा

प्रस्तावना

कविता कामिनी के हास कविवर भास पर सुरभारती को गर्व हैं। भास प्रथम कलाकार है। जिन्होंने नाटयकला को कमनीयता प्रधान की ! स्वप्नवासवदत्तम भास की अमर कृति है। इस में उदयन और वासवदत्ता की प्रणयकथा को पल्लवित किया है। उदयन की कमनीय कथा बहुत प्राचीन काल से भारतीय परिवारों में प्रचलित रही है।

भास की वर्णन शक्ति बड़ी प्रबल है। ये जिस पदार्थ को देखते हैं उसकी विशेषताओं को शीघ्र ग्रहण कर लेते है किसी भी वस्तु को किन विशेषताओं का वर्णन करना चाहिये इस का निर्णय करने में ये बड़े निपुन्न हैं। वर्णनीय विशेषताओं का निर्णय करके ये उन्हें सरल भाषा में सीधे कह देते हैं। इसका किया किसी भी पदार्थ का वर्णन उस पदार्थ के चित्र को आंखों के सामने खड़ा कर देता है। उदाहरण प्रस्तुत है।

(कामेनोज्जयिनी गते मयि तदा कामप्यवस्थां गतं) इत्यादि अर्थात् मेरे उज्जयिनी जाने पर और तव अवन्ति राजकुमारी को जी भर देखकर किसी अनिर्वचनीया दशा को प्राप्त हो जाने पर कामदेव ने मुझ पर पांचों बाण छोड़ दिये उनसे मेरा हृदय अभी तक घायल है, और पुनः भी बेध डाला गया, तो पता नहीं चलता उसने यह छठाबाण कहाँ से छोड़ा।

प्रस्तुत पद्य में भास ने अपनी कमनीय काव्यशैली द्वारा ध्वनित किया है कि वासवदता के प्रति उदयन का प्रेम अब ज्यों का त्यों बना हुआ हैं, साथ ही उसके हृदय में पदमावती के प्रति भी प्रेम का उदय हो रहा है। महान कवि भास ने इस पद्य में सारस पंक्ति की गति का हृदय ग्राही स्वाभाविक चित्रण किया है।

2.2 उद्देश्य

1. सरल एवं कठिन सभी प्रकार के पद्य–खण्डों को उचित विराम एवं उच्चारण सहित पढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना।
2. सभी प्रकार के अगाध साहित्य का अवगाहन करने की क्षमता प्रदान करना।
3. संस्कृत के अगाध साहित्य के प्रति अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना।
4. भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण प्रधान करना।
5. संस्कृत साहित्य का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता प्रदान करना।
6. मातृभाषा के सभी के वाक्य सांचों को संस्कृत में अनुदित करने को योग्यता प्रदान करना।
7. आवश्यकतानुसार उचित अवसरों पर संस्कृत भाषा में बोलने की क्षमता प्रदान करना।
8. संस्कृत भाषा में पत्र–लेखन, निबंध लेखन, संवाद–प्रेषण आदि की योग्यता उत्पन्न करना।

2.3 अन्वय, चतुर्थ अंक के पद्यों का अन्वय (पद्य सं 1, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 10)

पद्य सं.1 मयि उज्जयिनी गते सति तदा स्वरैं अवन्तिराजतनयां दृष्टवा।
कामपि अवस्थां गते सति कामेन पञ्चेषवः पातिता।।
नैः अद्यापि ह्रदयं सशल्यं एवं भूमश्च वयं विद्धाः।
यदा मदनः पञ्चेषु अयं पष्ठः शरः कथं पातितः।।

पद्य सं.(3)
मधुमदकलाः मदनार्तामः प्रियामिः उपगूठाः मधुकरा ।
पादन्यास विषण्णाः सन्तः वयमिव कान्तावियुक्ताः स्युः ।।

पद्य सं.(4) पुष्पाणि पाद्यक्रान्तानि च इदं शिलालं सोष्म।
नूनम काचित् इह आसीना मां दृष्टवा सहसा गता।।

पद्य सं.(5) तद्यपि पदमावती रूपशीला माधुर्येः मम बहुमता।
वासवदताबद्धम मे मनः तु न तावत् हरति।।

पद्य सं.(6) त्वया अनेन परिहासेन मे मनः, व्याक्षिप्तम्।
ततः पूर्वाभ्यासेन इयं वाणी तथैव निःसृता।।

पद्य सं.(7) बद्धमूलः अनुराग त्युक्तं दुखम स्मृत्वा दुखं नत्वं याति

तु यात्रा एषा यत इह वाष्पं विमुच्य प्राप्तानृण्या वुद्धिः प्रसादं याति।।

पद्य सं.(9) वाला नवोद्वाहाच इयं पदमावती सत्यं श्रुत्वा।

व्यथां ब्रजेत इयं कामं धीरस्वभावा तु स्त्री स्वभावः कातरः।।

पद्य सं.(10)

विशालानां गुणाना सत्कारणां व कर्तारो लोके नित्यशः।

सुलभाः विज्ञातारस्तु दुर्लभाःसन्ति।।

2.4 व्याख्या

कामेनोज्जयिनीं गते मयि..

....यदा कथमयं षष्ठः शरः पातितः !

अर्थ– उज्जयिनी जाने पर जब मैंने अवन्तिराज की कन्या को भली भांति देखा था उस समय मेरी विचित्र सी दशा हो गई थी तो कामदेव ने मुझ पर अपने पाँचो बाण छोड़ दिये थे। उन से मेरा हृदय अभी तक भी कसक ही रहा था कि जहाँ आकर उसने पुनः वेघ डाला। यदि मदन पाँच शर है तो पता नहीं चलता यह छठा वाण कहाँ से छोड़ा।

प्रसंग.......

उपरलिखित पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदम्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया राजा उदयन विदूषक से अपनी मनोदशा प्रकट कर रहा है।

विशेष –

प्रस्तुत पद्य में भास ने अपनी कमनीय काव्यशैली प्रस्तुत की है। वासवदत्ता के प्रति उदयन का प्रेम अब ज्यों का त्यों बना हुआ है। साथ ही उसके हृदय में पदमावती के प्रति भी प्रेम का उदय हो रहा है।

पद्य सं.(3)

मधुमदकलाः मधुकरा..कान्तावियुक्ताः स्युः !

प्रसंग.......

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के चतुर्थ अंक से समाद्यृत् है। पदावती, उदयन तथा विदुषक में संवाद चल रहा है। विदुषक को भैरों ने आकर घेर लिया और विदुषक राजा को भी रोकता है कि आप भी उस और मत जायें।

अर्थ :

कामदेव से सताई हुई अपनी प्रियतमाओं से चिपटे हुये मधु के मद में भनभनाते हुये भौंरे पांवों की आहट से दुःखित होकर हमारी तरह अपनी प्रियाओं से बिछुड़ जायेंगे। इसलिये राजा विदुषक से कहता है कि आयों जहाँ मिलकर

बैठ जाते हैं।

विशेष –

"वयमिव कान्तावियुक्ताः" हमारी तरह कान्तावियुक्त अर्थात् जैसे मैं अपनी कान्ता वासवदत्ता से वियुक्त हूँ उसी तरह कहीं ये भौरें भी अपनी कान्ताओं से वियुक्त न हो जाये। उदयन की यह उक्ति धीर ललित एवं सामान्यतः पत्नी के लिये प्रयुक्त होता है। कान्ता शब्द सामान्यतः पत्नी के लिये प्रयुक्त होता है। परन्तु इसका मुख्यार्थ प्रेयसी है। इस उक्ति से यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि उसके मन में पदमावती के प्रति प्रेम का उदय हो रहा है। परंतु वासवदता के प्रति उसका प्रणय ज्यों का त्यों बना हुआ है।

पद्य सं.(4)

पादाक्रान्तानि पुष्पाणि..सहसा गता !

प्रसंगः

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया है। विदुषक तथा राजा शिलातल पर बैठकर पदमावती के बारे में सोच रहे हैं।

अर्थ –

फूल पैरों से रोदें हुये दिखाई दे रहे हैं। और यह शिलातल भी गरम प्रतीत हो रहा है। ऐसा जान पड़ता है कि अवश्य ही यहाँ पर बैठी हुई कोई मुझ पर नज़र पड़ते ही सहसा चल पड़ी है।

विशेष –

शिलातल को जल्द ही छोड़ना पर आभास राजा को पहले ही हो चुका है। यद्यपि यह महाराज उदयन की सुक्ष्म दर्शिता का परिचयाक है। तथापि आगे का संवाद जिन में आर्य वसन्तक द्वारा आनन्दवन बिल्कुल सूना बतलाया गया है। कुछ युक्ति संगत सा प्रतीत नहीं होता। यही कारण है कि ऐसे श्लोकों का पाठ नहीं मिलता। नाटकीय दृष्टि से यह बाधा उपस्थित होती है। किंतु काव्य की दृष्टि से यह एक सुन्दर श्लोक है।

पद्य सं. 5

पदमावती बहुमता मम..तावन्मे मो हरति !

प्रसंगः

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया है। विदुषक राजा से पूछता है कि आप ईमानदारी से यह बतलायें कि दोनों में से अधिक कौन प्रिय है वासवदत्ता या पदमावती प्रत्युत्तर राजा विदुषक को कहता है कि आप मुझे किस संकट में डाल रहे हैं। विदुषक पुनः उसे बतलाने के लिये ज़ोर डालता है। उदयन कहता हैं।

अर्थ –

पदमावती यद्यपि रूपशील, और वचन मधुरता से अति प्रिय लगती है। परन्तु यह वासवदत्ता में लगे हुये मेरे मन को नहीं हर सकती।

विशेष –

विदुषक द्वारा उत्पन्न की गई इन विशेष परिस्थितियों में राजा का प्रस्तुत उत्तर उन की बुद्धिमता का आभास कराता है। मरणोपरान्त वासवदत्ता के प्रति अगध प्रेम का प्रदर्शन महाराज उदयन की उदारता का परिचायक है।

पद्य सं. 6

अनेन परिहासेन व्याक्षिप्तं..पूर्वाम्यासेन निःसृता !

प्रसंगः

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासदत्तम्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया है। विदुषक तथा राजा के मध्य पदमावती तथा वासवदता को लेकर वार्तालाप चल रहा है। उदयन कहता है कि मैं वासवदता को कहूँगा लेकिन कुछ समय पश्चात् कहता है कि अब वासवदत्ता इस दुनिया में कहाँ।

अर्थ –

राजा बड़े दुख के साथ कहता है कि अब वासवदता कहाँ सखे। इस परिहास से तुमने मेरा मन वासवदत्ता पर संसक्त कर दिया इसलिये पहले के चिर अभ्यास के कारण यह वाणी पहले जैसे ही वरवस मेरे मुख से निकल पड़ी।

विशेष–

यहाँ महाराज उदयन की कोमल भावनाओं का उदगार अत्यन्त सुरूचिपूर्ण ढंग से प्रदर्शित किया गया है। बहुत समयपूर्व मृत्यु को प्राप्त हुई वासवदता के प्रति आज भी उनकी भावनायें उतनी ही संजीव है जैसे पहले थी।

पद्य सं.(7)

दुःख त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुराग..याति बुद्धिः प्रसादम् !

प्रसंगः

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के चतुर्थ अंक से लिया गया है। पदमावती के साथ उपवन में वासवदत्ता भी विराजमान है। वासवदत्ता को परोक्ष में अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा लग रहा है। लकिन पदमावती कहती है कि इन निर्दयी ने कथा प्रसंग ही बिगाड़ दिया तदुपरांत विदुषक कहता है महाराज धीरज धरिये जो होनी हैं उस को कौन टाल सकता है।

अर्थ –

राजा के अनुसार कि तुम मेरी मानसिक दशा को नहीं जानते क्योंकि अत्यन्त दृढ़ प्रेम भुलाये नहीं भुलाया जा सकता ! बार बार स्मरण करने से दुःख नया–नया होता जाता है। इस संसार में जब आदमी (दिवंगत के शोक में) रोकर आँसू बहा लेता है तो चित अश्रु पातन रूप ऋण से मुक्त होकर शन्त हो जाता है। यहीं संसार की रीति है।

इसी तरह उदयन के मुख से आँसू आते हैं और राजा का मुख भीग जाता है।

पद्य सं.(9)

इयं बाला नवोद्वाहा...स्वोस्वभावस्तुकातरः !

प्रसंग :

प्रस्तुत श्लोक भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के चतुर्थ अंक से लिया गया है। विदुषक, पदमावती तथा महाराज उदयन उपवन में बैठे हुये राजा की आँखें में आँसू का आ जाना उसी समय पदमावती का समीप आ के बैठ जाना, और यह देखना को विदुषक जल ला रहा है। यह सब बातें पदमावती के मन के संदेहयुक्त बना रही है। राजा कहता है कि कोई शुभ्र पराग हवा से उड़कर मेरी आँखों में आ पड़ा इसी कारण मेरी आँखों में आँसू आ निकले हैं।

अर्थ –

यह बाला नव विवाहिता है यदि सच्ची कह दूं तो सुनकर इसे बड़ा दुःख होगा। माना कि यह बहुत ही धीर स्वभाव वाली है। पर नारी–प्रकृति स्वभावतः कातर हुआ करती है।

विशेष–

सत्यं श्रुत्वा–रोने का वास्तविक कारण सुनकर उदयन अश्रुपात के वास्तविक कारण को छिपाने के औचित्य के विषय में मन ही मन सोचता है यदि सच कह देता कि मैं वासवदता के वियोग में आँसू बहा रहा हूँ तो यह सुनकर पदमावती बड़ी व्यथित हो जाती जैसे कहा भी गया है –"स्त्रीभावस्तु कातरः" इति। उदयन ने जहां पदमावती के इसी स्त्री प्रसिद्ध स्वभाव का उल्लेख किया है। महान कवि ने भी स्त्रियों के चित्त की कोमलता व अधीरता का चित्रण किया है।

पद्य सं.(10)

गुणानां वा विशालानां...विज्ञातारस्तु दुर्लभाः !

प्रसंग :

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के चतुर्थ अंक से समाधृत् है। उदयन, पदमावती तथा विदुषक का संवाद चल रहा है। विदुषक केले के पत्ते में जल ले आता है और राजा का मुख प्रक्षालन करवाता है। विदुषक के अनुसार कि राजा को बहुत से अतिथियों से मिलना है इसलिये आप जल्द करें अतिथिगण पधार चुके हैं निश्चय ही सत्कारपूर्वक स्वीकृत सत्कार ही प्रेम को उत्पन्न करता है। तो अब आप उठें।

अर्थ –

महान गुणों एवं सत्कारों के करने वाले लोग तो संसार में सदा सुलभ हैं परंतु उनके जानने वाले दुर्लभ हैं।

विशेष–

विज्ञातारस्तु दुर्लभाः–दया उदारता, आदि अच्छे कामों को करने वाले तथा दूसरों को सत्कार करने वाले संसार में बहुत से मिल जाते है। परंतु उन को समझने वाले अर्थात् पारखी बहुत कम मलते हैं। प्रस्तुत पद्य में कवि ने इसी

और संकेत किया है। अतः वह सत्कर्ता है। और उदयन गुणग्राही व सत्कारज्ञ है इसलिये वह सत्कार के प्रत्युत्तर में दर्शक का सत्कार करने लिये उसके समीप जा रहा है।

2.5 अलंकार –

पद्य सं॰ (1) इस श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार है, महान कवि भास ने इस पद्य में सारसपंक्ति की गति का स्वभाविक चित्रण किया है। अतः यहां स्वभावोक्ति अलंकार है। साथ ही जहां सारसपंक्ति को विभक्त होती हुई गगनतल की सीमा रेखा के रूप में सम्भावित किया गया है। अतः उत्प्रेक्षा की छठा भी मनोहारिणी है।

पद्य (3) इस पद्य में उपमा अलंकार है।

पद्य सं. (4) प्रस्तुत पद्य में अनुमान अलंकार है।

पद्य सं. (9) प्रस्तुत पद्य में वाला एवं नवोद्वाहा दोनों विशेषणों के साभिप्राय होने के करण परिकर अलंकार है।

पद्य सं. (10) यह सत्कार का प्रसंग प्रस्तुत है और इसके साथ ही अप्रस्तुत गुणों के विषय में भी कह दिया गया है।

अतः जहाँ दीपकालंकार है।

2.6 बोध प्रश्न :

1. क्या विदुषक अपनी अस्वस्थता पर चिन्ता करता हुआ रंगमंच पर प्रवेश करता है?
2. जब चेटी प्रवेश करती है तो विदुषक से क्या पूछती है?
3. प्रतदवन में पदमावती तथा वासवदता क्या बातें करती है?
4. राजा को देखकर पदमावती तथा वासवदता कहाँ चली जाती है?
5. राजा तथा विदुषक आपस में क्या बातें करते हैं?
6. विदुषक के पूछने पर कि दोनों में कौन प्रिय है राजा क्या उत्तर देता है?
7. जब राजा की आँखें में आँसू आ जाते हैं तो विदुषक क्या लेने जाता है।
8. आँसू के कारण पूछने पर राजा क्या कारण बताता है?
9. विदुषक के कहने पर राजा किन से मिलने जाता है?
10. पद्य संख्या (10) में कौन सा अलंकार हैं ?

————

रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 अन्वय

3.4 व्याख्या

3.5 अलंकार

3.6 बोध प्रश्नाः

पाठग (3)

स्वप्नवासवदत्तम् के पच्चम् अंक की सप्रसंङ्ग व्याख्या

3.1 रूपरेखा

प्रस्तावना

उदयन महाराज दर्शक के राजप्रसाद में ही निवास कर रहा है। वह विदुषक से पदमावती की सिरवेदना का समाचार और साथ ही उससे यह जानकर कि उसकी शय्या पर स्वयं लेट जता हैं। तदुपरांत आवन्तिका भी पदमावती के सिरदर्द की खबर पाकर वहाँ आती है और जहाँ उदयन लेटा हुआ था वहाँ लेट जती है। इसी समय राजा स्वप्न में वासवदता को देखता है। उसी घटना को लेकर इस नाटक का नाम स्वप्नवासवदतम रखा गया है।

प्रस्तुत नाटक की श्रेष्ठता का आधार इसकी कतिपय काव्य संबंधी तथा नाटकीय विशेषतायें हैं। जो हमें वास्तुयोजना, चरित्र चित्रण, संवाद, रस, भाषा शैली, नाटयशिल्प रंगमञ्च आदि विभिन्न क्षेत्रों में दीख पड़ती है। नाटक के नामरकण का आधार कथावस्तु का वह अंश है जो स्वप्न दृश्य नाम से प्रसिद्ध हैं। यह दृश्य नाटक का एक प्रमुख और संभवतः सर्वोत्तम अंश है। यह वस्तुतः नाटक की कथावस्तु का हृदय है। स्वप्नवस्था में स्थित प्रिय और जागरित अवस्था में विद्यमान प्रेयसी के बीच वार्तालाप एवं उनके मधुर किंतु क्षणिक मिलन का यह दृश्य नाटक का एक मार्मिक प्रसङ्ग है। स्वप्नवासवदता और स्वप्ननाटक के सम्बंध में भी कही जा सकती है। वस्तुतः स्वप्न दृश्य के आधार पर नाटक का नाम रखना भास की उर्वर नाटकीय कल्पना का सुन्दर निदर्शन है। प्रस्तुत है एक उदाहरण– राजा के अनुसार–

वासवदता के चले जाने से बहुत समय बाद यद्यपि मैंने पुनः विवाह कर लिया है। किंतु अपने पिता अवन्तिराज के समान गुणों वाली अति प्रशंसा योग्य उस वासवदता का प्रतिक्षण स्मरण आता रहता है जिसका छड़ी जैसा सरहरा कोमल शरीर हिम से नष्ट हुई कमलिनी के समान लावाणक में अग्नि से जल गया।

3.2 उद्देश्य

(1) सरल एवं कठिन सभी प्रकार के पद्यों को उचित विराम एवं उच्चारण सहित पढ़ने की योग्यता करवाना।

(2) सभी प्रकार के श्लोकों का अभीष्ट लय के अनुसार पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(3) संस्कृत के आगाध साहित्य के प्रति अनुसन्धनात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।

(4) भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुसन्धनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना।

(5) संस्कृत साहित्य का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता प्रदान करना।

(6) मातृभाषा के सभी प्रकार के वाक्य–सांचों को संस्कृत में अनुदित करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(7) आवश्यकतानुसार उचित अवसरों पर संस्कृत भाषा में बोलने की क्षमता प्रदान करना।

(8) संस्कृत भाषा में पत्र लेखन, निबन्ध लेखन, संवाद–प्रेषण आदि की योग्यता उत्पन्न करना।

(9) छात्रों को संस्कृत भाषा के ध्वनि–तत्त्व से परिचित कराना।

(10) शुद्ध वाक्य रचना की योग्यता करना।

(11) छात्रों की तर्क शक्ति एवं रचनात्मक वृत्ति का विकास करना।

(12) काव्यगत सौन्द्रर्य अनुभूति करने की क्षमता प्रदान करना

3.3 अन्वय

पच्चम अंक के पद्यों का अन्वय

पद्य संख्या (1)

कालक्रमेण पुनरागदारतभारः लावाणर्के हुतवहेन हताग्ङयष्टि श्लाध्यां अवन्तिनृपतेः सदृशीं तनुजां तां हितहतां पदिम्नीम् इन चिन्तायामि !

पद्य संख्या (2)

अथ रूपश्रिया समुदितां च गुणतः युक्तां प्रियां लब्ध्वा मम शोकः तु मन्द इव सज्जात इति अनुभूत दुःख सोऽहं पदामावती आपे तथैव पूर्वाभि धातसरूजः समर्थयामि।

पद्य संख्या (5)

प्रस्थानकाले स्वजनं सनेहात् स्मरन्त्याः प्रवृत्तं नयानान्तलग्नं वाष्पं ममैव उरीस पातयन्त्याः अवन्त्याद्यिपतेः सुतायाः स्मारामि !

पद्य संख्या – (8)

हे सखे शय्यायाम अवसुप्तं मां बोधमित्वा सा गता पूर्व दग्धा इति ब्रुवतारूमणवता (अहम) वञ्चितः अस्मि।

पद्य संख्या (12)

ते रिपवो भिन्ना भवद गुणरताः पौराः समाश्वासिताः अपिभवत् प्रयाणसमये या पार्ष्णौ तस्याः विधानं कृतम अरिप्रमाथजननं यत् साध्यम तत तद् मया अनुष्ठितम्। अपि च वलैः त्रिपथगा नदी तीर्णा च वत्सां हव हस्ते।

पद्य संख्या (13)

उपेन्द्र नगेन्द्र तुरग्ङतीर्ण वकीर्ण बाणोग्रतंरभग्ङे महावर्णभावे युधि दारूणकर्मदक्षम् तम् नाशयामि।

3.4 व्याख्या –श्लाघ्यामवन्तिनृपतेः:..........................हितहताभिव चिन्तयामि। (1)

सप्रसंगः–प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" के चतुर्थ अंक से समाधृत् है। विदुषक तथा मधुरिका के मध्य वादविवाद चलता है। विदुषक के अनुसार आज निश्चय ही वासवदता के विरह से विकलकर हृदय तथा पदमावती के साथ विवाह करने के लिये उत्सुक श्रीमान वत्सराज के मदनकाल का ताप सुख प्रधान करने वाले इस उत्सव में बहुत अधिक उद्दीप्त हो रहा है। विदुषक कहता है पदमावती की सेज कहाँ रची गई है।

दासी कहती है कि वह शय्या समुद्रगृह नाम के कमरे में सेज बिछी है। तदुपरांत राजा का प्रवेश–

अर्थ –

वासवदता के चल बसने से बहुत समय के बाद यद्यपि मैंने पुनः विवाह कर लिया है किंतु अपने पिता अवन्ति राज के समान गुणों वाली अति प्रशंसा योग्य उस वासवदता का प्रतिक्षण स्मरण आता रहता है जिसका छड़ी–जैसा छरहरा शरीर हिम से नष्ट हुई कमलिनी के समान लावाणक में अग्नि से जल गया।

विशेष –

इस पद्य में कवि ने उदयन का चरित्र बड़ी मनोहारिता के साथ चित्रित किया है पता चलता है कि नायक वासवदता के प्रति प्रगाढ़ प्रेम रतिभाव रखता है वास्तव में उदयन का चरित्र एक धीरललित नायक का चरित्र है। उसका चरित्र उदात्त है। यही नहीं आगे चलकर वासवदत्ता भी पदमावती को कितना स्नेह करती है इस बात का पता चलता है।

पद्य संख्या –(2)

रूपश्रिया समुदितां युक्तां:..........................तथैव समर्थयाति।

प्रसंगः

प्रस्तुत श्लोक भास विरचित "स्वपनवासवदतम" के चतुर्थ अंक से समाधृत है। उस पद्य में राजा तथा विदुषक का संवाद चल रहा है। विदुषक के अनुसार कि महाराज जल्दी कीजिए, जल्दी कीजिए क्योंकि पदमावती के सिर में वेदना हो रही है। राजा यह सुनकर दुःखी हो जाता है।

अर्थ –

वासवदता के विरह रूपी पहले आघात से व्यथित हुये भी मेरा शोक अब सौन्दर्य शोभा से जगमगाती हुई और गुणों से युक्त पदमावती जैसी प्रिय पत्नी को पाकर तनिक मन्द सा था। किन्तु पदमावती के विषय में भी उसके बीमार होने की बात सुनकर मेरा मन उसी तरह दुःखी सा हो गया है।

विशेष–

जहाँ राजा वासवदता को कितना प्यार करता हैं इसका पता चलता है उसे यह संदेह हैं कि कहीं पदमावती भी नष्ट न हो जाये इसकी पुष्टि अति स्नेह पापशक्डी इस तथ्य से स्पष्टता हो जाती है।

पद्य संख्या (8) शय्यायामवसुप्तं मां:..........................वञिचतोऽस्मि रूमण्वता !

प्रसंग :

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम" के चतुर्थ अंक से समाधृत् है। राजा तथा विदुषक का वार्तालाप चल रहा है। राजा उदयन स्वप्न में वासवदता को देख रहा है। स्वप्न में कहता है कि तुम मुझे से दुःखी हों यदि तुम कुपित नहीं हो तो तुमने अलंकार क्यों नहीं धारण किये। राजा (एकाएक उठकर) वासवदते ठहर–ठहर, इसी तरफ उतावली में जाता हुआ मैं दरवाजे से टकरा गया, इसलिये स्पष्ट रूप से नहीं जान सकता कि यह सच बात थी या स्वप्न थी। विदुषक इस बात पर विश्वास नहीं करता।

अर्थ –

राजा कहता है कि ऐसा मत कहों।

हे सखे यह जो शय्या पर सोये हुये मुझे जगा कर चली गई अर्थात् वासवदता चली गई ऐसा कहते हुये रूमण्वान ने पहले मुझे धोखा दिया था।

विशेष :

जहां राजा के कथन का आशय यह है कि मैं यह नहीं जानता कि यह घटना सत्य है अथवा मेरे मन का भाव टक्कर लगने से मैं वासवदता को न पकड़ सका पकड़ लेने पर तथ्य का पता चल जाता। अब तो यह मेरे मन की भावना भी हो सकती है जो मूर्त रूप से स्वप्नोपरांत दिखायी पड़ी है।

पद्य संख्या – (12)

भिन्नास्ते रिपवो भवदगुणरताः पौराः समाश्वासिताः।
पार्ष्णी यापि भवत् प्रयागसमये तस्याः विधानं कृतम्।।
यद्यत् साध्यमरिप्रमाथजनं तत्तमयानुष्ठितं।
तीर्णा चापि बलैर्नदी त्रिपथगा वत्साचश्च हस्ते तव।। (12)

प्रसंगः

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" के चतुर्थ अंक से लिया गया है। राजा के अनुसार कि मेरा स्पर्श वासवदता के साथ हो गया था जिसका अनुभव मैं अभी तक कर रहा हूँ। तदुपरांत कञ्चुकी प्रवेश करता है। कि हमारे महाराज दर्शक ने आप से कहा है कि यह आप का मन्त्री भारी सेना लेकर आप से आरूणि का वध कराने के लिये आ पहुँचा है। और मेरी सेना जिस में हाथी, घोड़े, रथ और पैदल भी तैयार है। इसलिये आप उठिये और युद्ध के लिये तैयार हो जायें।

अर्थ –

आपके शत्रुओं में (फूट) पैदा हो गई है और उनमें से बहुतों को अपनी और मिला लिया गया है। आप के गुणों पर अनुरक्त हुये नगरवासियों को आश्वासन दे दिया गया हैं यात्रा के समय आप की पृष्ठ गामिनी सेना का भी सुप्रबन्ध कर लिया गया है। शत्रुओं का विनाश करने के लिये जो, जो साधन हो सकते है। उनका भी अच्छी तरह आयोजन कर लिया गया है। और हमारे सैन्यबल ने भागीरथी पार कर ली है। अब आप वत्स देश को अपने हाथ में ही आया हुआ समझो।

विशेष –

वत्स प्रदेश को जीतने की बात की है। प्रत्येक प्रकार के प्रबंध भी कर लिये गये है। अधिक क्या कहा जाये शत्रुओं के निवाश का समय उपस्थित हो गया है।

पद्य–संख्या (13)

उपेत्य नागेन्द्रतुरग्ङतीर्ण, तमारूणि दारूणकर्मदक्षम्।

विकीर्ण वाणोग्रतरग्ङभग्ङे।

महार्णवाभे युद्यि पाशयामि ।।

प्रसंग :

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" के चतुर्थ अंक से लिया गया है। कंचुकी तथा उदयन के बीच वार्तालाप चल रहा है। कंचुकी राजा को कहता है कि हमारी सेना तैयार खड़ी है और दुश्मन को मार गिरायेगी अतः आप भी युद्ध के लिये तैयार हो जाये !

अर्थ –

राजा उठकर ठीक है यह मैं अब जाकर शत्रु पर चढ़ाई कर हाथी और घोड़े की गति से संकुचित तथा चलाये हुये बाण रूपी भयंकर लहरों वाले रण–महासागर में दरूण कर्म करने में प्रवीण उस आरूणि का विनाश करूँगा।

विशेष –

इस श्लोक में युद्ध की उपमा महासमुद्र से उपन्यस्त की गयी है। जैसे महासमुद्र में जलहस्ती और जलघोटक घूमा करते है जैसे ही ममरागण में हाथी घोड़े घूम रहे है। महासागर उताल तरंगों से उद्वेलित हुआ करता है। तो समर क्षेत्र भी वाण–वर्षण की लहरों से तरंगित हो रहा है।

3.5 अलंकार परिचय :

पद्य. सं. (1) इस पद्य में उपमा तथा विशेषोक्ति अलंकार तथा वसन्ततिलक छन्द है।

पद्य. सं. (2)

प्रस्तुत पद्य में काव्यलिङ्ग अलंकार हैं। तथा वसन्ततिलका' छन्द है। जहाँ शोक की मन्दता के प्रति रूपवती और गुणसंपन्न पत्नी की प्राप्ति हेतु है तथा पदमावती के संबंध में अनिष्ट की संभावना के प्रति वासवदता की मृत्यु रूप विपत्ति की पूर्व अनुभूति हेतु है।

पद्य. सं. (5) इस पद्य में स्मरण अलंकार हैं।

पद्य. सं. 8 शय्यायामवसुप्तं मांः...........................में काव्यलिग्ङ अलंकार हैं।

पद्य. सं. (12) में भी काव्यलिङ्ग अलंकार यहां भिन्नास्ते–रिपवः आदि वाक्यों का अर्थ हेतुभूत है अतः जहां वाक्यार्थ काव्यलिङ्ग अलंकार है।

पद्य. सं. (13)

प्रस्तुत पद्य में उपमा अलंकार हैं।

3.6 बोध प्रश्ना :

(1) दासियों की वार्तालाप से क्या मालूम होता है?

(2) समुद्रगृह में क्या किया गया?

(3) पदमावती की अवस्थता का समाचार मिलता हैं तो वह दोनों कहाँ जाते हैं।

(4) चोटी वासवदता को कौन सा मार्ग दिखाती है।

(5) वासवदता क्या समझकर शय्या में लेट जाती है।

(6) उदयन स्वप्न में किस को देखता है।

(7) राजा किस के पीछे भागता है।

(8) भागते समय राजा किस से टकराता है।

(9) राजा किसके जीवित होने की संभावना व्यक्त करता है।

(10) कञ्चुकी राजा को क्या संदेश देता है।

....

रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 अन्वय

4.4 व्याख्या

4.5 अलंकार

4.6 बोध प्रश्नाः

पाठ (4)

स्वप्नवासवदत्तम् के षष्ठ अंक के पद्यों की सप्रसंग व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

षष्ठ अंक में आरूणि को पराजित करके उदयन अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त करता है। अब वह पदमावती के साथ कौशाम्बी में आ गया। पदमावती के साथ आवन्तिका भी गई है। एक दिन उदयन को घोषवती वीणा की जिसे वासवदता अक्सर बजाया करती थी। राजा उदयन को वीणा की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है।

राजा के अनुसार

श्रुति सुखनिनदे कथं नु देव्यः
स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता !
विहागगणरजोक्किीर्ण दण्ड़ा
प्रति भयमय्युषितास्यण्यवासम् !!

अर्थात्– ऐ कर्ण (वीणा) मधुर झंकार सुरीले शब्द वाली पहले तो तु देवी वासवदता के स्तनों और जांघों पर सुख से लेटा करती थी तो अब पक्षियों की वीठ से भरे हुये ड़ड़े वाली होकर तु किस तरह भयानक जंगल में वास करती रही।

स्तनयुगले जघनस्थले च सुप्ता वासवदता के स्तनों के मध्य एवं “जघनस्थल पर विलास करने” वाली घोषवती निश्चय ही पति के सदृश प्यारी थी। प्रस्तुत शब्द वीणा से वासवदता के असीम लगाव की अनुभूति कराते है। ये दोनों

ही स्थल विलास की भूमि है जो घोषवती को सहज ही प्राप्त है। पक्षियों के मल एवं धूल से भरी दण्ड़ वाली वीणा इसमें वीणा की दयनीय अवस्था का वर्णन है।

विरहे परिदेवितानि– वासवदता उदयन के वियोग में घोषवती वीणा को बजाकर अपनी विरह वेदना प्रकट करती है। जब उदयन वासवदता के वियोग में घोषवती को लेकर क्रन्दन कर रहा हैं। इसमें भी व्यड़्ग्यार्थ है।

इसी समय उज्जयिनी से प्रघोत का कंचुकी और वासवदता की धात्री राजद्वार पर उपस्थित होते है। वे दोनों प्रघोत की और उदयन को उसकी स्वराज्य प्राप्ति पर बधाई देने आये है। कंचुकी उदयन को प्रधोत का संदेश देते हुये उसके समक्ष उस चित्र को रखता। उस चित्र में अंकित वासवदता को देखकर पदमावती उदयन को बताती हैं कि ठीक उसी आकृति की एक स्त्री उसके पास रहती है। तदुपरांत वासवदता के पहचान हो जाती और सब सामने आ जाते है।

4.2 उद्देश्य

(1) सरल एवं कठिन सभी प्रकार के पद्यों को उचित विराम एवं उच्चारण सहित पढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना।

(2) सभी प्रकार के श्लोकों का अभीष्ट लय के अनुसार पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(3) संस्कृत के आगाध साहित्य का अवगाहन करने की क्षमता प्रदान करना।

(4) भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना।

(5) संस्कृत साहित्य का मातृभाषा में अनुवाद कने की क्षमता प्रदान करना।

(6) मातृभाषा के सभी प्रकार के वाक्य सांचों को संस्कृत में अनुदित करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(7) आवश्यकतानुसार उचत अवसरों संस्कृत भाषा में बोलने की क्षमता प्रदान करना।

(8) संस्कृत भाषा में पत्र लेखन, निबंध लेखन, संवाद लेखन आदि की योग्यता उत्पन्न करना।

(9) छात्रों की संस्कृत भाषा के ध्वनि तत्व से परिचित करना।

(10) शुद्ध वाक्य रचना की योग्यता प्रदान करना।

(11) छात्रों की तर्क शक्ति एवं रचनात्मक वृत्ति का विकास करना।

(12) शब्दों के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्रदान करना।

(13) सैद्धांतिक व्याकरण का ज्ञान प्रदान करते हुये सिद्धांतों का प्रयोग करने का अवसर प्रदान करना।

4.3 अन्वय

षष्ठ अंक के श्लोकों का अन्वय

पद्य सं. (2) श्रोणी समुद्वहनपार्श्वनिपीड़ितानि खेदस्तनान्तरमुखानि उपगूहितानि च विरह परिदेवितानि वाद्यान्तरेषु सस्मितानि कथितानि।

पद्य सं. 3 चिरप्रसुप्तः मे कामो वीणया प्रतिबोधितः यस्याः घोषवती प्रिया तां देवी तु न पश्यामि।

पद्य सं. (4) किं वक्ष्यतीति मे हृदयं परिशङ्कितम् मया कन्या अपहृता अपि न च रक्षिता चलैः भाग्यैः महदवाप्तगुणोपघातः पितृर्जनितः रोषः पुत्रः इव भीतः अस्मि।

पद्य सं. (5) सम्बन्धिराज्यमिदमेत्य महान प्रहर्षः पुनः नृपसुतानिधनं स्मृत्वा विषादः हे दैव परैः अपहृतं राज्य देव्याः कुशलं स्वाद् भवता किं नाम न कृतम्।

पद्य सं. (8) पूर्व अवजितः सुतैः रूह लालितो मया कन्या अपहृता भूयः न रक्षिता निधनं अपि श्रुत्वा तथैव मयि स्वता ननु उचितान्वत्सान प्रात्युं नृपो हि अत्र कारणम्।

पद्य सं. (15) नृपतेहितार्थ राज महिषी प्रच्छाद्यमया कामं हित–मित्यवेक्ष्य इदं कृतं मम् कर्मणि सिद्धेऽपि नाम असौ पार्थिव किं वक्ष्यति इति मे हृदयं परिशंकितम्।

पद्य सं. (19) सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम् एकातपत्राङ्का महीम् न+ राजः सिहः प्रशास्तु।

4.4 व्याख्या

प्रसंग– प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। कंचुकी तथा राजा के मध य वार्तालाप चल रहा है। राजा का वीणा के प्रति कि हे घोषवती तु तो मिल गई पर वह नहीं दीख पड़ती तदुपरांत कंचुकी निवेदन करता है। उसका निवेदन वासवदता से सम्बंध रखता है। राजा के अनुसार कि हे घोषवती तु पहले तु देवी वासवदता के स्तनों और जांघों पर सुख से लेटा करती थीं तो अभी पक्षियों की वीठ से भरे हुये ड़ड़े वाली होकर तु किस तरह भयानक जंगल में वास करती रही।

अर्थ :

ऐ घोषवती तु बड़ी स्नेह शून्य है जो उस बेचारी को बजाते समय अपनी जाँघ पर तुम्हरे पेंदे को उठाना और अपनी वंगल में तुम्हारे वीणा दण्ड़ को गोद से पकड़ने के समय प्रेमपूर्वक दबाना तथा बजाते बजाते थक जाने पर अपने कुचों के बीच में दबाकर सुख आलिंग्ङन करना व मेरे बिछोह के अवसर पर मुझे उद्देश्य पर विलापपूर्वक तुम्हें बजाना ओर संगीत के विरामों में स्मित भरे विरहगीतरूपी वचनों का कहना यह सब तनिक भी याद नहीं करती।

विशेष :

श्रुतिसुखनिनदे – घोषवती वीणा जिसकी झंकार कर्णकुहरों को आनन्दित करने वाली होती है यह सम्बोधन वीणा की विशिष्टता प्रकट करता है।

विहगगणरजो विकीर्णदण्ड़ा–पक्षियों के मल एवं धूल से भरी दण्ड़ वाली वीणा। इसमें वीणा को दयनीय अवस्था का वर्णन है।

श्लोक (3) (चिर प्रसुप्तः कामो मे वीणया प्रतिबोधितः।

तां तु देवी न पश्यामि यस्या घोषवती प्रिया।।)

प्रसंग–

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस श्लोक में राजा तथा विदुषक

का वार्तालाप चल रहा है।

अर्थ :

विदुषक राजा को कहता है कि महाराज बहुत संताप न कीजिये प्रत्युत्तर में राजा कहता है नहीं मित्र ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि घोषवती वीणा ने चिरकाल से सोई हुई विरहग्नि को जगा दिया है पर वह देवी तो दिखाई नहीं देती जिसे यह घोषवती इतनी प्यारी थीं।

विशेष :

इस श्लोक में वासवदता के प्रति उदयन के असीम प्यार का आभास होता है मानों वासवदता की मृत्यु के साथ ही उदयन की सारी अभिलाषायें भी सो गई और पुनः इस वीणा के दर्शन से जागरूक हो गयी है।

पद्य सं. (4)

किं वक्ष्यतीति मे हृदयं परिशक्ङितं में.......................

.... पुत्रः पितर्शर्जुनितःरोषः इवास्मि भीतः !!

प्रसंग– प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस श्लोक में पदमावती तथा राजा के बीच वार्तालाप चल रहा है। पदमावती के अनुसार के विवाह के उपरान्त माता तथा पिता जो ने क्या कहा होगा इस बात को लेकर मैं बड़ी बेचैन सी हो रही हूँ। राजा भी कहता है कि यह बात ऐसी ही है।

अर्थ :

वे न जाने क्या कहें इसी बात को लेकर मेरा उद्विग्न हैं मैं उन की कन्या को भगा लाया किंतु उसकी रक्षा न कर सका। मैं तो ठीक उन से उसी तरह डर रहा हूँ जिस तरह कि दुर्भाग्वश अपने सद्‌गुणों पर बड़ा भारी आघात् पहुंचने से अपने ऊपर कुपित हुये पिता से पुत्र डरता है।

विशेष :

भाग्यै–उपघातः–दुर्भाग्यवश–गुरूजनों के प्रति हो गया अपराध।

शीघ्र प्रवेश्यताम

शीघ्र ही बुलायें यह उक्ति राजा के अव्यवस्थित मस्तिष्क का आभास कराती है।

श्लोक सं. (5)

सम्बन्धिराज्यमिदमेत्य..कुशलं च देव्याः

सप्रसंग– प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। राजा प्रतिहारी, कंचुकी तथा घात्री के मध्यवार्तालाप चल रहा हैं। प्रतिहारी के अनुसार महाराज धात्री तथा कंचुकी द्वार पर खड़े है यदि आपकी आज्ञा हो तो उन को अन्दर बुलाऊँ तदुपरांत कञ्चुकी धात्री तथा प्रतिहारी का प्रवेश है।

अर्थ : कञ्चुकी कहता है कि एक ओर तो इस अपने सम्बन्धी के राज्य में आकर मुझे अपार हर्ष और दूसरी ओर राजकन्या की मृत्यु का स्मारण कर महान शोक हो रहा है शत्रुओं द्वारा छीने हुये राज्य प्राप्ति और देवी वासवदता की कुशलता–यदि दोनों बातें हो जाती तो, क्या था।

विशेष : किं नाम च देव्याः उदयन के शत्रुओं द्वारा अपहृत राज्य की प्राप्ति के साथ साथ मृत घोषिता वासवदता के कुशलता की कामना आगे आने वाली घटनाओ का आभस कराता है।

श्लोक संख्या (8) – अहमवजितः पूर्वतावत् सुतै............................नृपोऽत्र हिकारणम्

प्रसंग– प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। राजा और कंचुकी के मध्य वार्तालाप चल रहा है कंचुकी कहता है कि भाग्य से शत्रुओं से छीना हुआ राज्य पुनः वापस ले लिया गया है क्योंकि जो कायर एवं असमर्थ होते हैं उन में कभी उत्साह पैदा नहीं होता प्रायः राज्यलक्ष्मी का उपयोग उत्साही पुरूष ही करते है।

अर्थ :

राजा, आर्य अब महासेन का ही प्रभाव है क्योंकि पहले मुझे जीतकर जिसने अपने लड़कों के साथ पालन पोषण किया पुनः मैंने उनकी कन्या को कठोरतापूर्वक अपहरण तो किया किंतु उसकी रक्षा नहीं कर सका (अपनी बेटी की) मृत्यु भी सुनकर उसका मेरे ऊपर पूर्ववत् प्रेम बना हुआ है। निश्चय ही अपना उचित राज्य वत्स को जो मैंने पुनः प्राप्त किया है उसके कारण महाराज, महासेन ही है।

विशेष :

अहमजित :–पूर्व में वजित मृगया के लिये गये हुये उदयन को महासेन ने कैद कर लिया था।

सुतैः सह लालितो– अपने पुत्रों के साथ लालन पालन जिसको प्राप्त हुआ वैसा मैं उदयन महासेन की वत्सलता दृष्टिगोचर होती है।

नृपोऽत्र हिकारणम्–राजा ही राज्य प्राप्ति के कारण है यह भाव है।

श्लोक संख्या – 15 :

प्रच्छाद्यरजमहिषीं नृपतेहितार्थ.....................................किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशंक्डित मे

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के षष्ठ से लिया गया है। यौगन्धरायण, पदमावती राजा प्रतीहारी, के मध्य वार्तालाप चल रहा है। पदमावती कहती है कि उज्जयिनी से आया हुआ ब्राह्मण राजकुमारी के पास धरोहर रूप में रखी हुई अपनी बहन को वापस लेने के लिये खड़ा है। राजा के अनुसार कि वह वही ब्राह्मण है अतः इसे आदरपूर्वक अन्दर ले आयें प्रतीहारी वैसा ही करता है।

अर्थ :

यौगन्धरायण मन ही मन राजा के हित के लिये अपनी इच्छानुसार महारानी वासवदता को आग में जल गई इस षड़यन्त्र

के द्वारा छिपाकर महाराज का कल्याण किया मेरे सभी कार्य सिद्ध हो जाने पर भी राजा मेरे कार्यों के विषय में क्या कहेगा यह सोचकर मेरा हृदय शङ्कित हो जाता है।

विशेष :

नृपतेहितार्थ

राजा के हित के लिये राजा वासवदता के जीवन काल में पदमावती से विवाह नहीं कर सकता था। और खोये हुये राज्य की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक था अतः यौगन्धरायण का यह कार्य राजा के कलयाण के लिये था।

श्लोक संख्या–19 इमां सागरपर्यन्तां हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम।
महीमेकातपत्राङ्का राजसिहः प्रशास्तु नः ।।

प्रसंग :

प्रस्तुत पद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम" नाटक के षष्ठ अंक से समाघृत है। राजा तथा यौगन्धरायण के मध्य वार्ता चल रही है।

अर्थ :

हमारे राजासिंह (शौर्य आदि में सिंह के सादृश्य राजाओं में सबसे श्रेष्ठ महाराज वत्सराज अथवा महाकवि भास का आश्रयदाता राजासिंह नाम का कोई एतिहासिक राजा) सागर पर्यन्त विस्तृत तथा हिमालय और विन्ध्याचल रूपी दो कर्ण कुण्डलों से अलंकृत हुई राजच्छन्न से चिन्हित इस विशाल वसुधा का चिरशासन करें।

4.6 बोध प्रश्न :

(1) कञ्चुकी राजा को क्या संदेश देता है?

(2) प्रतीहारी राजा को क्या बताता है कि कौन आया है।

(3) घोषवती मिलने पर राजा के मन में क्या प्रतिक्रिया होती है।

(4) अन्ततोगत्वा प्रतीहारी राजा को क्या संदेश देता है।

(5) जब राजा को वीणा प्राप्त होती तो वीणा की क्या स्थिति थी।

(6) कंचुकी के संदेश देने पर राजा किस के आने को कहता है?

(7) पद्मावती चित्र को देख किस को याद करती है।

(8) यौगन्धरायण किस को मांगने के लिये आता है।

(9) पद्मावती किसे लेकर राजा के समक्ष आती है।

(10) क्या महासेन को धाई उसे पहचान लेती है।

रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 अन्वय

5.4 व्याख्या

5.5 बोध प्रश्नाः

स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम एवं द्वितीय अंकों के गद्य भागों की अनुवाद एवं व्याख्या

5.1 रूपरेखा

प्रस्तावना

प्रथम अंक में वत्सराज उदयन का मन्त्री यौगन्धरायण स्वयं परिव्राजक का वेश धारण कर आवान्तिका वेषधारिणी वासवदता के साथ तपोवन में आता है। इतने में मगध राजकुमारी पदमावती का कंचुकी घोषणा करता है जिसे जो कुछ मांगना हो मांगे इसी बीच उदयन का मंत्री योगन्धरायण सामने आ जाता है और प्रार्थना करता है कि इस का पति विदेश गया हुआ है यह मेरी बहिन वासवदता है इसे आप अपने पास रख लें। इतने में एक ब्रह्मचारी तपोवन में आता है। वह तपोवन के लोगों को वासवदता के वियोग से दुःखी राजा उदयन का वृत्तान्त बताता है। तदुपरांत अनुमति पाकर यौगन्धरायण भी चला जाता है। तापसी का आर्शीवाद लेकर पदमावती और वासवदता पर्णशाला` प्रवेश करती है।

द्वितीय अंक के प्रवेशक में चेटी आकर पदमावती के गेंद खेलने का समाचार देती है। शीघ्र ही धात्री आकर मगधराज द्वारा उदयन की पदमावती के दिये जाने तथा उदयन द्वारा उसके स्वीकार किये जाने का शुभ समाचार देती है। तदुपरांत एक चेटी आती है। वह पदमावती के मंगल की तैयरी की सूचना देती है। और वासवदत्ता को मंगल स्थान की तरफ जल्दी चलने को कहती है। दूसरे अंक में वासवदत्ता कहती है कि (स्वागत) ओह, मैंने आर्यपुत्र के स्नेहवश अज्ञातवास के उपयुक्त आचार का उल्लंघन कर दिया अब क्या करूंगी अच्छा सोच लिया (प्रकट) उज्जयिनी के लोग ऐसा कहते है। प्रत्युत्तर में पदमावती कहती है, ठीक है उज्जयिनी के लिये वे दुर्लभ नहीं है सुन्दरता सब ही जनों के मनों की अच्छी लगती है।

5.2 उद्देश्य

(1) सरल एवं कठिन सभी प्रकार के गद्यों को उचित विराम एवं उच्चारण सहित पढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना।

(2) सभी प्रकार के पद्य खण्डों का अभीष्ट लय के अनुसार पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(3) संस्कृत के आगाध साहित्य का अवगाहन करने की क्षमता प्रदान करना।

(4) भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना।

(5) संस्कृत साहित्य का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता प्रदान करना।

(6) मातृभाषा के सभी प्रकार के वाक्य सांचों को संस्कृत में अनुदित करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(7) आवश्यकतानुसार उचित अवसरों संस्कृत भाषा में बोलने की क्षमता पैदा करना।

(8) संस्कृत भाषा में पत्र लेखन, निबंध लेखन, संवाद लेखन आदि की योग्यता उत्पन्न करना।

नाटक की शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

1. छात्रों को उचित आरोह अवरोह तथा उचित भाव–भंगिमा के साथ संवाद करने का ज्ञान कराना।

2. छात्रों को अभिनय की कला का ज्ञान कराना।

3. विविध परिस्थितियों के अनुकूल मानवीय व्यवहार से छात्रों को परिचित करवाना।

4. मानव प्रकृत एवं मानव चरित्र से उन्हें परिचित होने के अवसर प्रधान करना।

5. छात्रों के भाषा ज्ञान की वृद्धि करना।

6. छात्रों की चिन्तन, प्रश्न–उत्तर, वार्तालाप, भाषण, कथनोपकथन आदि अवसरों पर प्रभावोत्पादक ढंग से अपने भावों को व्यक्त करने की कला का ज्ञान देना।

5.3 गद्य खण्डों की व्याख्या

1. भोः श्रूयताम् एषाखलु.......... तद अद्यास्मिन्नाश्रमपदे वासोऽभि प्रेतोऽस्याः तद भवन्तः।

सप्रसंग– प्रस्तुत गद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के प्रथम अंक से लिया गया है। वासवदता, कंचुकी तथा यौगन्धरायण के मध्य वार्तालाप चल रही है। कञ्चुकी के अनुसार आप राजा पर कलंक न आने दे आश्रम वासियों पर कठोरता का व्यवहार मत करें। ये मनस्वी लोग नगरों के तिरस्कारों से बचने के लिये वन में आकर निवास करते हैं। जब कञ्चुकी यौगन्धरायण को भी तपस्विन कह कर पुकारता हैं तो यौगन्धरायण कहता हैं इस तरह इस का पुकारना तो अच्छा है परन्तु मैं आपने लिये तपस्विन सुनने का अभ्यासी नहीं हूं। इसलिये यह मेरे मन को अच्छा नहीं लग रहा।

व्याख्या :

अजी सुनिये यह हमारे महाराज दर्शक की जिनका यह नामोच्चारण गुरूजनों ने किया है वहन पदमावती है। वह यह आश्रम में रहने वाली हमारे महाराज की माता महादेवी जी का दर्शन कर और उनसे आज्ञा पाकर पुनः राजगृह को जायेगी इस कारण आज इतने इस आश्रम में रहना पसंद किया है। इसलिये आप लोग वन से तपस्या के साधन तीर्थों का जल हवन, फूल कुशायें वे रोक–टोक ले आये !

यह राजकुमारी धर्म पर प्रेम रखने वाली है। यह सदा इस की कुल मर्यादा चली आ रही है।

विशेष :

महान कवि भास ने तत्कालीन राजाओं के चरित्र का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि राजा परिवार के लोग भी उस समय आश्रम मर्यादा का पालन करते थे। यह सांसारिक सुखों को लात मारकर वृद्धावस्था में आश्रम में जाकर तपश्चर्या का जीवन व्यतीत किया करते थे।

जहाँ पदमावती के लिये धर्म प्रिया विशेषण उसकी धर्म प्रियता को घोषित करता है। तपस्वियों के कार्य में विघ्न डालना उस समय पाप समझा जाता था। क्योंकि उस समय तपस्वियों को बड़ा समान प्राप्त था।

(2) (आत्मागतम) हन्त भोः अर्द्धमवसितभारस्य ....

मगधराजपुत्री विश्वासस्थानं भविष्यति कुतः !

प्रसंग–

प्रस्तुत गद्य भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के प्रथम अंक से लिया गया है। यौगन्धरायण चेटी के मध्य वार्तालाप चल रहा है। चेटी कहती है कि इस वासवदता ने सुख के दिन भी देखे है। यौगन्धरायण कहता है कि मेरा आधा भर हल्का हो गया जैसा मंत्रियों के साथ परामर्श किया था वैसा ही कार्य रूप में हो रहा है। पीछे स्वामी के राज्य लाभ होने पर जब माननीय वासवदता को मैं स्वामी के सम्मुख ले जाऊंगा तो उस वासवदता की चरित्र शुद्धता के विषय में माननीय राजपुत्री विश्वास दिलाने में साक्षिणी होगी।

व्याख्या :

यौगन्धरायण मन ही मन सोचता है कि मैंने वासवदता को पदमावती के समीप धरोहर के रूप में रख दिया हैं और भार हल्का हो गया है। जैसा हम सब मंत्रियों ने परामर्श किया था उसी के अनुरुप कार्य हो रहा है। जब वासवदता के चरित्र शुद्धता की बात चलेगी तो मैं मगधराज कन्या को साक्षी मानूंगा। इस सारे कर्य में स्वामी को पुरा राज्य लाभ भी होगा और पदमावती के साथ विवाह का अवसर भी प्राप्त होगा।

विशेष :

यौगन्धराण की इस उक्ति में एक सार्वभौम सत्य के दर्शन होते हैं। सिद्धों की वाणी का भाग्य भी अतिक्रमण नहीं करता भक्तिव्यता उनकी वाणी के पीछे दौड़ती है। महान कवि–भवभूति के अनुसार "लौकिकानां हि साधुनामर्थवागनुवर्तते" इत्यादि–अर्थात् लौकिक पुरूषों की वाणी अर्थों सिद्धियों का अनुगमन करती है परंतु सिद्ध पुरूषों की वाणी के पीछे समस्त सिद्धियां दौड़ती है।

गद्य :

(3) ब्रह्मचारी –उर्ध्वमवलोक्य स्थितो मध्याहनः दृढमस्मि परिश्रान्तः अथ कस्मिन् प्रदेशे विश्रमयिष्ये परिकम्य भवतु दृष्टम अमितस्यतपोवनेन भवितव्यम्।

प्रसंग–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" नाटक के प्रथम अंक से लिया गया है। लावाणक ग्राम से आया हुआ

ब्रह्मचारी इस तपोवन में आता है। जिस ग्राम में वासवदता जलकर भस्म हो गई थी यह उसी गांव में विद्या अध्ययन किया करता था।

व्याख्या :

ऊपर की ओर देखकर मध्याह्न हो गया मैं अत्यंत थक गया हूँ अब किस जगह विश्राम करूँ (घूमकर) अच्छा देख लिया चारों और तपोवन ही है क्योंकि परिचित स्थान होने से शंका रहित हुये हिरण आनन्द से चल फिर रहे हैं। तथा तपस्वियों के धन गायों के समुदाय में कपिला गायें अत्याधिकता से हैं। बहुत स्थानों से यह धुंआ ऊपर हुआ दिखाई दे रहा हैं। इसलिये निस्संदेह दिखाई देता हुआ यह तपोवन ही लगता है।

विशेष :

महान कवि भास ने जहाँ एक स्वभाविक एवं सुंदर चित्र खींचा है। आश्रमवासी तपस्विजन अपने पुत्रों के समान प्रेम से वृक्षों का पालन पोषण करते है।

आश्रमवासियों का सबसे बड़ा धन गौधन होता है। आश्रमवासी सदा गोधन की सेवा किया करते थे। आश्रमवासी उनकी सेवा करते थे इसीलिये वहाँ दूध, घी आदि की प्रचुरता रहती थी। आश्रमवासी प्रतदिन धार्मिक क्रियायें सम्यक प्रकारेण किया करते थे। और उनके यज्ञ की सुगंध से दिगदिगन्त सुरभित हो उठते थे।

गद्य :

(4) ब्रह्मचारी– तदिदानी न जानेः इह तया सहहसितुम......

.... संवृतः स ग्रामः ततोऽहमपि निर्गतोऽस्मि।

प्रसंग–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" नाटक के प्रथम अंक से लिया गया है। वासवदता, यौगन्धरायण तथा ब्रह्मचारी के मध्य वार्तालाप हो रहा है। यौगन्धरायण के अनुसार मेरा भार तो विश्राम युक्त भी है। किंतु उसका भार तो लगातार ही श्रम जनक है। प्रजा पालक का जीवन जिस पर अवलम्बित है उस पर सब निर्भर है। प्रकट होकर क्योंकि अब तो राजा की चित्त स्थिति ठीक हो गई है।

व्याख्या :

ब्रह्मचारी यह इस समय मैं नहीं जानता जहाँ उसके साथ हँसा जहाँ या उसके साथ वार्तालाप किया जहां उसके साथ रहा। जहाँ उसके साथ प्रणय कलह किया जहाँ उसके साथ सोया इस प्रकार विलाप करते हुये उस राजा को राजमंत्री बड़े यत्न से लेकर उस गाँव से चले गये। तब राजा के चले जाने पर वह गाँव नक्षत्रों और चन्द्रमा से शून्य आकाश की तरह शोभाहीन हो गया इसीलिये मैं भी वहां से चला गया।

विशेष :

महान कवि भास ने जहाँ भारत के पुरातन तपोवनों की सौर्य–संध्या का स्वभाविक चित्र प्रस्तुत किया है।

अथ द्वितीयोऽङ्कः

गद्य : (1)

ततः प्रविशिति चेटी कुच्जरिके कुत्र–कुत्र भर्तृदारिका पद्मावती। किं भणसि एषा भर्तृदारिका माधवीलता मण्डपस्य पार्श्वतः कन्दुकेन क्रीड़तीति यावद् भर्तृदारिकामुपसर्पामि अम्मां इयं भर्तृदारिका उत्कृत कर्ण चूलिकेन व्यायाम–सच्जातस्वेद बिंदु विचित्रितेन परिश्रान्तरमणीयदर्शनेन मुखेन कन्दुकेन क्रीड़न्तीत एवागच्छति यावदुपसर्पामि।

प्रसंग :

पीछले अंक में वासवदता कंचुकी तथा तापसी की वार्तालाप चल रही है। कंचुकी कहता है राजकुमारी जी इधर आइयें। क्योंकि इस समय पक्षी अपने अपने घोसलों में बैठ गये है। मुनिजन स्नान के लिये पानी में उतर पड़े हैं। जलती हुई अग्नि चमक रही है। तपोवन के ऊपर धुंआ उठ–उठ कर फैल रहा है। सुदूर आकाश से गिरा हुआ वह सूर्य देव भी अपनी किरणों को सिमटकर और रथ गति को रोककर धीरे धीरे अस्ताचल के शिखर की ओर जा रहा है।

व्याख्या :

दूसरे अंक में सर्व प्रथम चेटी का प्रवेश है। एक चेटी दूसरी चेटी को कहती है ओ कुंजरिके कहां हो कहाँ हो तदुपरांत राजकुमारी पदमावती उन दोनों चेटियों को पूछती है कि तुम दोनों कहाँ थी। पदमावती के अनुसार मैं तो माधवी लता मंडल के समीप गेंद खेल रही थी कि मैं आप के साथ उपवन में गेंद खेलने चलुंगी। दूसरी चेटी कहती है कि गेंद खेलने से राजकुमारी के मुख की क्या मनोहर छवि है। झूमते हुये कर्ण–फूल चेहरे पर से ऊपर की ओर किये हुये है। व्यायाम से उत्पन्न हुये पसीने की बूँदों के झलकने से मुख मण्डल की विचित्र शोभा हुई है। और राजकुमारी गेंद खेलती हुई इधर ही आ रही है। तो मैं पास चलूँ। गेंद खेलती हुई सहेलियों सहित पदमावती का वासवदता के साथ रंगमंच पर प्रवेश है।

गद्य : (2)

आर्यपुत्रपक्षपातेनातिक्रान्तः समुदाचारः किमिदानीं करिष्यामी भवतु दृष्टम। हला एवमुज्जायिनीयो जनो मन्त्रयते।

प्रसंग :

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" नाटक के द्वितीय अंक से समाघृत् है। इस पद्य में वासवदता पदमावती धात्री की वार्तालाप चल रही है। बात पदमावती के विवाह की चल रही है धात्री कहती है कि यदि वह राजा कुरूप हुआ तो वासवदता उत्तर देती है कि नहीं नहीं वह तो बडे दर्शनीय है। पदमावती कहती है कि तुम कैसे जानती हो।

व्याख्याः

वासवदत्ता मन ही मन ओह मैंने आर्यपुत्र के स्नेहवश अज्ञातवास के उपयुक्त आचार का उल्लंघन कर दिया अब क्या करूंगी अच्छा सोच लिया (प्रकट) उज्जायिनी के लोग ऐसा कहते हैं।

गद्य (3)

धात्री–नहि नहि अन्य प्रयोजनेनेहागतस्य अभिजन–विज्ञानवयोरूपं दृष्टवा त्वयमेव महाराजेन दत्ता।

प्रसंग :

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" के द्वितीय अंक से समाधृत है। इस गद्यांश वासवदता चेटी, तथा धात्री के बीच संवाद चल रहा है। धात्री के अनुसार कि आर्ये महापुरूषों के मन शास्त्रों के ज्ञान के प्रभाव से अनायास ही प्रकृतिस्थ हो जाते है। वासवदता कहती है आर्ये क्या उन्होंने स्वयं वरण की है।

व्याख्या:

धात्री कहती है कि नहीं नहीं वे जहाँ किसी अन्य प्रयोजन से आये थे। उनका उच्चकुल विशिष्ट ज्ञान तरूणवय और रम्य रूप देखकर स्वयं ही महाराज ने दे दी–

5.6 बोध प्रश्न :

(1) यौगन्धरायण तथा वासवदत्त तपोवन में किस वेष में जाते है?

(2) वह किस आश्रम में पधारते है?

(3) उस समय अपनी मां को मिलने कौन सी राजकुमारी तपोवन में आती है?

(4) राजकुमारी तपोवन में आकर क्या घोषणा करती है?

(5) यौगन्धरायण अवसर पाकर क्या मांगता है?

(6) क्या पदमावती उसकी प्रार्थना स्वीकार कर लेती है?

(7) ब्रह्ममचारी तपोवन आकर क्या समाचार सुनता है?

(8) राजकुमारी वाटिका में अपनी सखी के साथ क्या खेल रही थी?

(9) चेटी आवन्तिका (वासवदत्ता) को क्या बताती है?

(10) धात्री वासवदता को क्या सूचना देती है ?

——————————

रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 व्याख्या

6.4 बोध प्रश्नाः

तृतीय एवं चतुर्थ अंकों के गद्य भागों का अनुवाद एवं व्याख्या

6.1 प्रस्तावना

तृतीय अंक में अवन्तिका प्रमदवन के एक कोने में अपने भाग्य को कोस रही है। वह यह सोचकर दुःखी है कि उसका पति पराया होने वाला है। दूसरी और विवाह की तैयारियां चल रही है। उसी सिलसिले में अवन्तिका से जयमाला गूँथवाने के लिये उसे ढूँढती हुई महारानी की एक चेटी फूल लेकर उसके पास प्रमदवन पहुँचती है। और उसे शीघ्र ही जयमाला तैयार करने को कहती है। अवन्तिका अपने भाग्य को कोसती हुई जयमाला गूँथकर उसे पकड़ा देती है।

विवाह सूत्र में बाँधने के बाद उदयन राजकीय अतिथि के रूप में महाराज दर्शक के राज प्रसाद में निवास करता है। उसके साथ उसका प्रिय मित्र भी साथ रहता है। दोनों प्रमदवन में प्रवेश करते है। उसी समय पदमावती वासवदता और चेटी भी आ जाती है। उदयन और विदुषक लतामण्डप के पास जाते है एवं सहज भाव से उसके अंदर प्रवेश करना चाहते है। परंतु चेटी उन्हें बाहिर ही रोक लेती है। इसी बीच विदुषक उदयन को पूछता हैं कि आप को वासवदता प्रिय थी या पदमावती प्रिय है। उदयन उसके इस अटपटे प्रश्न को टालने का प्रयास करता है। किंतु विदुषक बहुत हठ करके प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर लेता है। इसी बीच उदयन की आँखे सजल हो जाती है। इसी बीच पदमावती सब कुछ जानकर भी चुप रहती है। इसके बाद स्थिति कहीं बिगड़ न जाये–यह सोचकर विदुषक राजा को वहां से चतुरता पूर्वक खिसका ले जाता है।

स्वप्नवासवदतम् की कथा ऐतिहासिक है उदयन, प्रद्योत और दर्शक इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति है। एवं वासवदता आदि कुछ अन्य पात्र भी संभवतः इतिहास से लिये गये है।

परंतु यह कहना कठिन है कि महा कवि भास ने अपनी कथा इतिहास अथवा पुराण से सीधे ग्रहण की हो। आगे चल उदयन सम्बन्धी कथा में लोककथा के तत्व जुड़ गये परिणामस्वरूप कथा को रूमानी वातावरण और रूप प्राप्त

हो गया कालक्रम से यह कथा लोककथा का एक भाग बन गई।

6.2 उद्देश्य

(1) सरल एवं कठिन सभी प्रकार के गद्यों को उचित विराम एवं उच्चारण सहित पढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना।

(2) सभी प्रकार के श्लोकों तथा गद्य खण्डों का अभीष्ट लय के अनुसार पाठ करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(3) संस्कृत के आगाध साहित्य का अवगाहन करने की क्षमता प्रदान करना।

(4) भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना।

(5) संस्कृत साहित्य का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता प्रदान करना।

(6) मातृभाषा के सभी प्रकार के वाक्य सांचों को संस्कृत में अनुदित करने की योग्यता उत्पन्न करना।

(7) आवश्यकतानुसार उचित अवसरों पर संस्कृत भाषा में बोलने की क्षमता प्रदान करना।

(8) संस्कृत भाषा में पत्र लेखन, निबंध लेखन, संवाद लेखन आदि की योग्यता उत्पन्न करना।

(9) छात्रों को संस्कृत की अक्षय निधि से परिचय प्राप्त करते हुये उच्चकोटि के गद्य काव्यों का अध्ययन करके उनसे आनन्द प्राप्त करें।

(10) वे विविध गद्य काव्यों तथा गद्य शैलियों का परिचय प्राप्त करके अनुकूल शैली में लिखे गये काव्यों का अध्ययन करके उनसे आनन्द प्राप्त करें।

(11) वे संस्कृत भाषा में अपने भावों को व्यक्त कर सके।

(12) वे समालोचनात्मक शक्ति का विकास करके अच्छे और बुरे की पहचान करने की क्षमता प्राप्त करें।

6.3 तृतीय अंक

गद्य (1)

विवाहोमोद संकुले अन्तः पुरचतुः शाले परित्यज्य........................

.........................आर्य पुत्रं पश्यामीत्येतेन मनोरथेन जीवामि मन्दभागा।

प्रसंग :

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" के तृतीय अंक से समाघृत है। इस गद्यांश में वासवदता तथा चेटी के मध्य वार्तालाप चल रहा है। चेटी कहती है जल्दी चलिये आज ही शुभ नक्षत्र है हमारी महारानी कहती है कि आज ही कौतुक मंगलाचार करना चाहिये। वासवदता कहती है कि मेरा ह्रदय अन्धकारमय हो रहा है।

6.4 व्याख्या :

चिन्तापुर वासवदता का प्रवेश, वासवदता के अनुसार, विवाह के आमोद से जनाकीर्ण हुये अन्तःपुर के आंगन में पदमावती को छोड़कर मैं जहाँ प्रमदवन में चली आई हूँ। तो अब कुछ देर दुर्भाग्यवश प्राप्त हुये दुःख को दूर करुँ। इधर उधर घूमकर ओह कैसा अंधेरा है। आर्य पुत्र भी पराये हो गये थोड़ी देरी यही बैठूँ, बैठकर धन्य है

चक्रवाकवधु जो पति विरह होने पर नहीं जीती। पर मैं अभी प्राणों को कैसे त्यागु कदाचित् आर्य पुत्र के दर्शन कर पाऊं इस लालसा से मैं अभागिनी जी रही हूँ।

गद्य :

आर्ये भेदानीमन्यच्चितांयितवा एष जामाता मणिभूमयां स्तानि शीघ्र तावद् गुम्फत्वार्या।

प्रसंग–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के तृतीय अंक से लिया गया है। चेटी कहती है कि आर्ये इस समय अन्य चिन्ता छोड़े क्योंकि आप उच्च कुलोत्पन्न स्नेह शीला और शिल्प कला होने से आर्या इस कौतुक माला को गूँथ दे।

व्याख्या :

वासवदता को चेटी कहती है कि आर्ये इस समय आप कोई दूसरी बात न सोचें। वह दामाद मणिमण्डित वेदिका पर स्नान कर रहे हैं। अतः आप शीघ्र ही कौतुक माला को गूँथ दीजिये।

गद्य : (3)

त्वरंता त्वरंतामार्या एष जमाता..........

.... शालं प्रवेश्यते।

परिकम्य भवतु दृष्टम अमितस्यतपोवनेन भवितव्यम्।

प्रसंग :–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" नाटक के तृतीय अंक से लिया गया है। वासवदता के अनुसार फूल कंड़ी से फूल निकालकर और देखकर इस औषधि का क्या नाम है चेटी कहती है कि सदा सोहागिन प्रत्युत्तर में वासवदता कहती है कि तब तो इन फूलों को अधिक मात्रा में गूंथना चाहिये प्रकट हो इस औषधी का क्या नाम है। चेटी कहती है कि सौत नाशिनी, प्रत्युत्तर इसे न गूँथना चाहिये। चेटी उत्तर में कहती है क्यों वासवदता कहती है कि उसकी पहली स्त्री मर गई इसलिये सौत के न होने से इसका गूँथना व्यर्थ ही है।

व्याख्या :

दूसरी चेटी का प्रवेश, चेटी के अनुसार आर्या शीघ्रता करें क्योंकि यह जमाता सोहागिनियों से भीतरी आंगन में ले जाया जा रहा है।

गद्य : (4)

गतैषा अहो अत्याहितम् .... दुःख विनोदयामि यदि निद्रां लभे।

प्रसंग :–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" नाटक के तृतीय अंक से लिया गया है। चेटी तथा वासवदता के मध्य वार्तालाप चल रहा है। वासवदता जल्दी जल्दी माला गूँथ रही है। चेटी के अनुसार जो आप ने माला बनाई है वह बहुत ही सुंदर है और चेटी माला ले के राजमहलों की ओर प्रस्थान करती है।

व्याख्या :

वासवदता यह दोनों चली गईं कैसा अंधेरा है आर्य पुत्र भी पराये हो गये बड़े दुःख की बात है शय्या पर लेटकर दुःख हलका करूँगी यरि नींद आ जाये तो

अनुवाद तथा व्याख्या चतुर्थ अंक

गद्य : (1)

भोः दिष्टया तत्रभवतो वत्सराज्य................

...........भोः सुखं नायमपरिभूतमकल्यवर्ते च

प्रसंग :–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया है। वासवदता के अनुसार गतैषा अहो–अत्याहित आर्यपूत्रोऽपि नाम परकीयः संवृतः। अविदा शय्यायां मम् दुःख विनोदयामि यदि निद्रां लभें।

अर्थात् :

यह तो गई ओह कैसा अंधेरा है आर्य पुत्र भी पराये हो गये बड़े दुःख की बात है। शय्या पर लेटकर दुःख हलका करूंगी यदि नींद आ जाये। दूसरे अंक में अर्थात् चौथे अंक में विदुषक तथा चेटी का प्रवेश है।

व्याख्याः

विदुषक (सहर्ष) अहो सौभाग्य से माननीय वत्सराज के अभीष्ट विवाह के मंग्ङलोत्सव से सुखमय समय देखने को मिला ओह्। यह कौन जानता था कि उस प्रकार के अनर्थ सलिल के भँवर में पड़े हुये हम पुनः उवर सकेंगे। इस समय राज महलों में रहना अन्तःपुर की वावडियों में न होना, स्वभावतः मधुर और सुकोमल लड्डू आदि पर हाथ फेरना बस सभी प्रकार के आनन्द लूट रहा हूं। कमी है तो कोमल अप्सराओं की। पर एक बड़ा दोष हो गया है। मुझे खाना अच्छी तरह नहीं पचता, सुकोमल शय्या पर भी नींद नहीं आती। वात–रक्त रोग सारे शरीर में व्याप्त हो गया है। ऐसा अनुभव कर रहा है ओह जब रोग घेरे हुये हो और थोड़ा सा कलेवा खा लेने में बदहजमी का डर बना रहे तब सुख कहाँ।

गद्य (2)

कुत्र नु खलु गता तत्र भवति पदमावती लता मण्डपगता भवेद

.... यावत समाहितं गच्छन्ती पश्यतु तवात भवान्।

अनुवाद तथा व्याख्याः

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वपनवासवदतम्" नाटक के चतुर्थऽक्ङ से समाघृत् है। वासवदता विदुषक राजा के बीच वार्तालाप चल रहा है। वात वीणा बजाने की हो रही हैं। तदुपरान्त राजा तथा विदुषक का प्रवेश होता है। विदुषक के अनुसार चुनते समय इधर–उधर बिखरे हुये बन्धुजीव के फूलों की महक से यह प्रमदवन (केलिवन) क्या रमणीय लग रहा हैं। सखे इधर से आइये महाराज इसी तरह विदुषक उदयन को रास्ता दिखाता है।

व्याख्याः

विदुषक कहता है कि माननीया पदमावती कहाँ गई लता मण्डप में गई क्या या पर्वत तिलक नाम के पत्थर के चबूतरे पर गई होगी जो चितकबरे असना के फूलों से छाकर वाघम्बर से ढका सा दिखाई देता है। या अधिक तीखी सुगन्ध वाले सप्तच्छद वन में गई है। अथवा दारू पर्वत पर गई है। जि पर मृग तथा पक्षियों के विचित्र चित्र बने हैं। ऊपर देखकर ह ह ह ह। शरद् काल के निर्मल आकाश में अच्छी तरह संघटित होकर एक साथ चलती हुई सारस पंक्ति को महाराज तनिक देखें तो सही वाह देखने योग्य है ऐसा जान पड़ता है मानों वलदेव जी की दीर्घ धवल भुजा फैली हुई है।

विशेषः

प्रस्तुत गद्याशों में भास ने अपनी कमनीय काव्य शैली द्वारा ध्वनित किया है कि वासवदता के प्रति उदयन का प्रेम अब ज्यों का त्यों बना हुआ साथ ही उनके हृदय में पदमावती के प्रति भी प्रेम का उदय हो रहा है। महान कवि भास ने इस गद्य में सारस पंक्ति की गाने का हृदय ग्राही स्वाभाविक चित्रण किया है।

गद्य (3)

इदानीं श्रृणोतु भवान् तत्र भवति वासवदता में बहुमता .... कुत्र न खलु गत आर्यवसन्तक।

प्रसंग :–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदत्त्म्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में पदमावती राजा तथा विदुषक के मध्य वार्तालाप चल रहा है। पदमावती के अनुसार कि आर्य पुत्र अब भी दाक्षिण्य युक्त ही है जो अब तक भी आर्या वासवदता के गुणों को याद करते हैं। विदुषक के बारम्वार पूछने पर राजा कह देता है कि मुझे दोनों प्रिय हैं। विदुषक भी कहता है इस सम्बन्ध में मेरा कहना व्यर्थ है। मेरे लिये दोनों ही अच्छी हैं। इसी बीच विदुषक नाराजा हो जाता है। राजा के अनुसार कि प्रसन्न हो महाब्राह्मण देवता तो आप की इच्छा हो तो कहिये।

व्याख्या

विदुषक कहता है कि माननीया वासवदता मुझे बहुत प्रिय थी। माननीया पदमावती नवयुवती है दर्शनीया है अकोपना है निरहंकारा है। एवं सुचतुरा है और वासवदत्ता में सब से बड़ा गुण यह है कि स्निग्ध भोजन लेकर मेरी खोज करती है कि आर्य वसन्तक कहां गये हैं।

गद्य (4)

उचि तत्र भवतो मगधराजस्थापराहनकाले भवन्तमग्रतः सत्कारो हि नाम सत्कारेण प्रतीष्टः प्रीतिमुत्पादयति तदुत्त्ष्ठितु–तावत् भवान्।

प्रसंग :–

प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के चतुर्थ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में विदुषक राजा तथा पदमावती के मध्य संवाद चल रहा है। राजा कहता है कि यह वाला एवं नव विवाहिता है यदि सच्ची बात कह दूँ तो सुनकर इस को बड़ा दुःख होगा। माना कि यह बहुत धीर स्वभाव वाली है पर नारी प्रकृति स्वभावतः कातर हुआ

करती है।

व्याख्या

विदुषक के अनुसार, महाराज अपराहन्काल में माननीय मगधराज आपको आगे करके अपने सुह्रदजनों से भेद करेंगे निस्सन्देह सत्कार सत्कार्य द्वारा आदरपूर्वक स्वीकार किये जाने पर ही परस्पर प्रीति को बढ़ाता है। राजा को कहता है कि आप उठिये।

विशेष

प्रस्तुत गद्यांश में दया, उदारता आदि अच्छे कामों को करने वाले तथा दुसरों का सत्कार करने वाले संसार में बहुत मिल जाते हैं। परन्तु उनके समझने वाले अर्थात् उनके पारखी बहुत कम मिलते हैं। प्रस्तुत गद्यांश में कवि ने इसी ओर संकेत किया है। अतः वह सत्कर्ता है और उदय गुणग्राही व सत्कारज्ञ है इसलिये वह सत्कार के प्रत्युत्तर में दर्शक का सत्कार करने के लिये उसके समीप जा रहे हैं।

बोध प्रश्ना

1. वासवदता क्या सोचकर दुःखी होती है?
2. विवाहोपरान्त उदयन राजकीय अतिथि के रूप में किस महल मे निवास करता है?
3. क्या विदुषक भी उदयन के साथ निवास करता है?
4. जब वे दोनों प्रमदवन में प्रवेश करते है तो इनसे पूर्व वहां कौन होता है?
5. उदयन का देखकर माधवी लता मण्डप में कौन छुप जाता है?
6. जब वे दोनो शिलातल बैठे थे तो विदुषक ने राजा से क्या पूछा?
7. वासवदता की स्मृति आते ही राजा की क्या प्रतिक्रिया थी?
8. जब पदमावती उनके पास आती तो विदुषक क्या बहाना बनाता है?
9. पदमावती यह सब देखकर क्या कहती है?
10. इसके बाद स्थिति बिगड़ न जाये, विदुषक और राजा क्या करते हैं?

रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 व्याख्या

7.4 बोध प्रश्नाः

"स्वप्नवासवदतम् नाटक के पंचम तथा षष्ठ अंकों के गद्य भागों की सप्रसंग व्याख्या"

रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

पंचम अंक उदयन महाराज दर्शक के राज प्रासाद में ही निवास कर रहा है। यह विदुषक से पदमावती की शिरोवेदना का समाचार पाकर और साथ ही उससे यह जानकर कि उस की शय्या उपचार आदि का प्रबन्ध समुद्रगृह में किया गया है। वहाँ पहुँचता है समुद्रगृह में पदमावती अभी नहीं पहुँची है। वह उस की प्रतीक्षा में उस की शय्या पर स्वयं लेट गया, लेटते ही उसे नींद आ जाती है। विदुषक ठण्ड से बचाव के लिये चादर लेने चला जाता है। तदुपरान्त अवन्तिका भी पदमावती के सिरदर्द की खबर पाकर वहाँ आती है। वह उसी शय्या पर चादर ओढे सोये उदयन को पदमावती समझकर लेट जाती है। उसी समय राजा उसे देखता है और प्रेमपूर्वक शब्दों से सम्बोधित करता है। यह सारी घटनायें स्वप्न में हो रही है। तदुपरान्त विदुषक लौटकर आता और राजा सारा वृत्तन्त विदुषक को सुनाता है। उसी समय कंचुकी युद्ध की सूचना देता है। उदयन युद्ध के लिये तैयार होकर निकल पड़ता है।

षष्ठ अंक में युद्ध में आरूणि को पराजित कर के उदयन अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर लेता है। और अपनी राजधानी लौट आता है पदमावती के साथ आवन्तिका भी आती है। एक दिन उसे वीणा, (घोषवती) मिल जाती हैं वीणा को पहचान कर राजा विलाप करता है। उसी बीच राजद्वार में कंचुकी तथा घात्री उपस्थित होते हैं। कंचुकी उस चित्र को राजा के समक्ष रखता है। उसे पदमावती देकर राजा को कहती है ठीक उसी आकृति की एक स्त्री उस के पास रहती है। कोई व्यक्ति जो संन्यासी था वह धरोहर के रूप में मेरे पास रख गया था। ठीक उसी समय यौगन्धरायण उपस्थित हो जाता सारा भेद खुल जाता है और सब प्रसन्न हो जाते हैं और नाटक का सुखान्त रूप में समाप्त हो जाता है।

स्वप्नवासवदत, भास का सर्वश्रेष्ठ नाटक है इस सम्बन्ध में प्राचीन और आधुनिक आलोचकों में पूर्ण सहमति है। प्राचीन आलोचक राजशेखर की यह घोषणा महत्वपूर्ण है कि काव्यमर्मज्ञों द्वारा की गई भास नाटकों की अग्निपरीक्षा में स्वप्नवासवदतम् खरा उतरा है।

"भाससनाटकचक्रेयिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम् स्वप्नवासवदतस्य दाहकोऽभून्न पावकः।"

7.2 उद्देश्य

1. सरल एवं कठिन सभी प्रकार के गद्य खण्डों को उचित विराम एवं उच्चारण सहित पढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना।
2. सभी प्रकार के गद्यों का अभीष्ट लय के अनुसार पाठ करने की योग्यता प्रदान करना।
3. संस्कृत के अगाध साहित्य का अवगाहन करने की क्षमता प्रदान करना।
4. भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुसन्धात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना।
5. संस्कृत साहित्य का मातृभाषा में अनुवाद करने की क्षमता प्रदान करना।
6. मातृभाषा के सभी प्रकार के वाक्य सांचों को संस्कृत में अनुदित करने की योग्यता उत्पन्न करना।
7. आवश्यकतानुसार उचित अवसरों पर संस्कृत भाषा में बोलने की क्षमता प्रदान करना।
8. संस्कृत भाषा में पत्र लेखन निबन्ध संवादप्रेषण आदि की योग्यता प्रदान करना।

7.3 गद्यः (1) तंन हि मुहूर्तक प्रतिपालयतु भवान्................. आत्मनः प्रावारं गृहीत्वा गमिष्यामि।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के पंचम अंक से लिया गया है। राजा विदुषक तथा चेटी के मध्य वार्तालाप चल रहा है। राजा विलाप करता हुआ वासवदता को स्मरण करता हुआ कहता है कि–जो मेरे संगीत सिखाते समय जाने कितनी वार एक टक मुझे देखती हुई आनन्द में तन्मय होकर हाथ से छुटे हुये वीणा वजाने के यान्त्र की मिजराज को भी न जानती हुई खाली हाथ से वीणा शून्य जगह में वीणा की तारें वजाने की सी क्रिया करती थी विदुषक दूसरी बात करता है राजा विदुषक को दूसरी बात सीखता है। लेकिन विदुषक जल्द ही भूल जाता है।

व्याख्या–विदुषक कहता है कि आप तनिक ठहरिये तब तक में इसे कण्ठस्थ कर लूँ राजा ब्रह्मदत्त नगर काम्पिल्य कई वार उसी को रटकर अच्छा अब आप सुनिये ऐं आप तो सो गये ओह– उसी समय बड़ी सर्दी पड़ रही हैं। मैं जल्दी चादर ले आऊँ।

गद्यः (2)

अहो अकरूणाः खल्वीश्वरा से........................ देशसंविभागतया शयनीयस्य सूचयति मामालिङगोति यावच्छमिष्ये

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के पंचम अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में चेटी तथा वासवदता के मध्य वार्तालाप चल रहा हैं। चेटी के अनुसार कि समुद्रगृह में शय्या बिछी हुई है। वासवदता के अनुसार कि आप आगे चले मैं आप के पीछे आती हूँ इसी तरह वह दोनों समुद्र गृह में प्रवेश करती हैं। वासवदता अपने भाग्य को कोसती हुई करती है।

व्याख्या–वासवदता के अनुसार कि ओह, ईश्वर सचमुच मुझे पर बड़े रूष्ट है। विरह से अधीर हुये आर्यपुत्र के मनवहलाव के लिये यह पदमावती ही एकमात्र आसरा थी सो वह भी अस्वस्थ हो गई है। अच्छा तो मैं अन्दर चलूं।

भीतर चल कर और देखकर, दासियों की असवाधानता तो देखूँ अस्वस्थ हुई पदमावती को केवल दीये के सहारे हि छोड़ गई है। वह पदमावती सो रही है। तो मैं भी जहाँ ही बैठती हूँ। किन्तु बीमार के साथ बैठना ठीक है। अलग आसन पर बैठने से स्नेह अल्प सा जान पड़ता है। इसलिये मैं इसी शय्या पर बैठती हूँ। पलंग पर बैठकर, ओह् यह कैसे आश्चर्य की बात है। इस के साथ बैठने से मेरा हृदय आनन्द पुल कित सा क्यों हो रहा है। सौभाग्य से उसका सांस अविच्छिन्न भाव से सुखपूर्वक चल रही है। ज्ञात होता है कि रोग निवृत्त हो गया हैं शय्या के एक किनारे पर सोने से क्या यह ऐसा सूचित कर रही है। मुझ को आलिङगन कर अच्छा तो मैं भी लेट जाती हूँ लेटती है।

वासवदता कहती है– हम आर्यपुत्रः न खलु पदमावती................ मम दर्शनेन निष्फल संवृता

अर्थात्–(एकाएक उठकर) ओह ये तो आर्यपुत्र है पदमावती नहीं। क्या उन्होंने मुझे देख लिया हाय, यौगन्धरायण का महान् प्रतिज्ञा भार मेरे दर्शन से निष्फल हो चला।

गद्यः (3) कंचुकीयः जयत्वार्यपुत्रः अस्माकं महाराजो दर्शकों............. तदुतिष्ठतु भवान् !

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के पंचम अंक से लिया गया है कंचुकी आकर सन्देश देता है कि महाराज दर्शक के अनुसार–कि आप का शत्रु बड़ी सेना लेकर आ गया, मेरी सेना भी तैयार आप भी जल्द सेना लेकर युद्ध भूमि में आ जायों।

व्याख्या– जय हो आर्यपुत्र की हमारे महाराज दर्शक ने कहलावा भेजा है कि ये आप के अमात्य रूमण्वान बड़ी भारी सेना लेकर आरूणि का बध करने के लिये आये हुये हैं। और इसी तरह मेरे भी हाथी, घोड़े रथ, और पैदल सारी विजय सेना तैयार है। इसलिये आप उठियै और युद्ध के लिये तैयार को जायो।

अथ षष्ठ अंक

गद्यः (1)ततस्तत्र गत्वा पृष्टः कुतोऽस्या वीणायाआगम इति

.............आर्य ईदृशोऽनवसरः कथं निवेदयामि।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में कंचुकी, प्रतिहारी के मध्य वार्तालाप चल रहा है। कंचुकी प्रवेश करता है कि महाराज उदयन का निवेदन कीजिये कि कंचुकी राजद्वार पर आये हुये है। इसी बीच प्रतिहारी कहता है कि महाराज ने वीणा घोषवती की आवाज सुनी है तब कंचुकी की उत्सुकता और बढ़ जाती है।

व्याख्या– प्रतिहारी के अनुसार तव वहाँ जाकर महाराज ने उस से पूछा यह वीणा कहाँ से आई उसने कहा हमने इसे नमर्दा के तट पर कुशाओं की झाड़ी में पड़ा पाया यदि महाराज का इसमें प्रयोजन हो तो इसे अपने पास रक्खें। उसे अक्ङ में लेकर महाराज मूच्छित हो जाते है। पुनः सचेत होने से आँसू बहाते हुये महाराज कहने लगे। घोषवती तू तो मिल गई पर वह नहीं दीख पड़ती है। आर्य इस तरह अनूकूल अवसर नहीं है। कैसे निवेदन करूँ।

गद्यः (2) राजा पदमावती कि श्रुंत महासेनस्य सकाशाद...........वासवदताधात्री च प्रतिहारमुपस्थितोविति !

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में कंचुकी, प्रतिहारी के मध्य वार्तालाप चल रहा है। कंचुकी प्रवेश करता है कि महाराज उदयन को निवेदन कीजिये

कि कंचुकी राजद्वार पर आये हुये है। इसी बीच प्रहिारी कहता है कि महाराज ने वीणा घोषवती की आवाज सुनी है तब कंचुकी की उत्सुकता और बड़ जाती है।

व्याख्या – प्रतिहारी के अनुसार तव वहाँ जाकर महाराज ने उस से पूछा यह वीणा कहाँ से आई उसने कहा हमने इसे नर्मदा के तट पर कुशाओं की झाड़ी में पड़ा पाया यदि महाराज का इसमें प्रयोजन हो तो इसे अपने पास रक्खें। उसे अङ्क में लेकर महाराज मूच्छित हो जाते है। पुनः सचेत हाने पर आँसू बहाते हुये महाराज कहने लगे। घोषवती तूं तो मिल गई पर वह नहीं दीख पड़ती है। आर्य इस तरह अनुकूल अवसर नहीं है। कैसे निवेदन करूँ।

गद्यः– (2) राजा पदमावती कि श्रुतं महासेनस्य सकाशाद .... वासवदताघात्री च प्रतिहारमुपस्थितोवित !

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में राजा तथा प्रतिहारी के मध्य वार्तालाप चल रहा है। प्रतिहारी, महाराज की जय हो वासवदता की धात्री, आर्य वसुन्धरा द्वार पर उपस्थित है। राजा के अनुसार कि पदमावती को बुला लाये। पदमावती आर्यपुत्र की जय हो,

व्याख्या– क्या तुम सुना है कि महादेसन के यहाँ से कंचुकी आये हुये और महारानी अग्ङारवती की भेजी हुई वासवदता की धात्री आर्य वसुन्धरा भी आई। दोनों द्वार पर खड़े है। पदमावती के अनुसार आर्यपुत्र वन्धुवान्धवों का कुशल समाचार सुने की मुझे बड़ी इच्छा है।

गद्यः (3) आह भट्टिनी उपरता वासवदता मम वा महासेनस्य या याद्वशो गोपालकपालको तादृश...

एषा चित्रफलका तव सकाशं प्रेषिता एतां दृष्टया निर्वृतो भव।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में धात्री, कंचुकी तथा राजा के मध्य वार्तालाप चल रहा है। कंचुकी के अनुसार कि महाराज धीरज धरिये इस तरह प्रेम से स्मरण करते है वे महासेन पुत्री वासवदता मरी हुई भी जीवित ही है। अर्थात् रस्सी के टूट जाने पर कौन घड़े को कूएँ से गिरने से बचा सकता है। मनुष्य तो जंगल के वृक्षों के समान धर्म वाला है। जिस तरह समय आने पर वृक्ष काटे जाते है और समय आने पर उगते है। उसी तरह मनुष्य भी समय पर मरता है और अपने समय पर पैदा होता है। राजा के अनुसर वासवदता महासेन की पुत्री, तथा मेरी प्रिय शिष्य थी उसे मैं जन्म जन्मोन्तरों भी कैसे याद न करूँ अर्थात उसे मैं कभी भी भुलाये नहीं भूल सकता।

व्याख्या– धात्री के अनुसार कि महारानी कहती है कि वासवदता तो चल बसी। परंतु तु मुझे तथा महाराज को उसी तरह प्यार हो जिस तरह कि गोपलक और पालक क्योंकि हमने पहले से ही तुम को जमाता पसंद किया था। इसी कारण तुम्हें उज्जयिनी ले आये थे और अग्नि साक्षी किये बिना ही वीणा सिखने के बहाने वासवदता को तुम्हारे साथ सौंपा था। किंतु तुम चंचलता के कारण विवाह मंगल हुये बिना ही वासवदता को लेकर भाग चले तब हमने वासवदता की प्रतिकृति चित्रपट में अंकित कराकर विवाह कार्य सम्पन्न किया, यह वही चित्रपट तुम्हारे पास भेज रही हूं इसे देखकर शांतिलाभ करो अपने चित्त को धीरज दरो। महाराज के अनुसार कि महारानी ने क्या स्नेह भरी और अनुरूप बातें कहीं हैं। ये बातें तो मुझे सैंकड़ों राज्य लाभों से भी अत्यंत प्रिय है।

गद्यः (4) आर्यपुत्र मम कन्याभावे केनापि.............परिहरित तदार्या पश्यतु सदृशी नवेति।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में पदमावती राजा के मध्य वार्तालाप चल रहा है। पदमावती राजा को कहती इसी चित्र के सादृश एक युवती यहीं रहती है। राजा आश्चर्य के साथ पूछता क्या वासवदता, राजा के अनुसार तो इस जल्द से जल्द जहाँ बुलायो।

व्याख्या– पदमावती कहती है कि मेरे विवाह के पहले किसी ब्राह्मण ने यह मेरी बहन है यह कहकर उसे मेरे पास धरोहर रखा था। यह प्रोषितपतिका पर पुरूष के दर्शन नहीं करती इसीलिये आर्या वसुन्धरा देखें कि वह युवती वासवदता ही है या कोई ओर। राजा के अनुसार यदि वह ब्राह्मण की बहन है तब तो निश्चय ही कोई और होगी संसार में एक दूसरे क अनूहार भी कभी आपस में मिलती जुलती देखने में आती है।

गद्यः (5) प्रतिहारी–जयतु भर्ता एष उज्जयिनी ब्राह्मणः भट्टिन्या हस्ते मम भगिनीकेति न्यासो निक्षिप्तः तं प्रतिग्रहीतुं प्रतिहारमुपस्थित............. !

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में राजा तथा प्रतिहारी के मध्य वार्तालाप चल रहा है।

प्रतिहारी– जय हो महाराज की उज्जयिनी का रहने वाला एक ब्राह्मण द्वार पर खड़ा है। वह कहता है कि मैंने राजकुमारी के पास अपनी बहन को धरोहर रख छोड़ा था मैं उसे लेने आया हूँ।

गद्यः– राजा–निर्यातय पदमावती अथवा साक्षिमल्यासो निर्यातयितव्यः इहात्रभवान रेभ्यः अत्राभवती–चाधिकरण भविष्यतः।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के षष्ठ अंक से लिया गया है। राजा, पदमावती, धात्री, अवन्तिका के वेश में वासवदता के मध्य संवाद चल रहा है। पदमावती के अनुसार आओं, आर्यों आओ मैं एक प्रिय बात सुनाऊँ अवन्तिका, क्या पदमावती तुम्हारे भाई आये हुये हैं। अवान्तिका, धन्य भाग्य अब तो मेरी सुध तो ली। पदमावती जय हो आर्य पुत्र की यही वह धरोहार है।

व्याख्या– राजा समीप आकर, इसे सौंप दो पदमावती अथवा साक्षियों के सामने धरोहर को सौपना चाहियै इस में आर्य रैम्य और आर्यो वसुन्धरा साक्षी है। पदमावती–आर्य अब आप आर्या को ले जाइए। धात्री के अनुसार आवन्तिका को ध्यान से देखकर अरे यह तो राजकुमारी वासवदता है।

गद्यः (7) पदमावती–अहो आर्या खल्विम आर्ये......समुदाचारः तच्छीर्षेण प्रसादयामि।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित "स्वप्नवासवदतम्" नाटक के षष्ठ अंक से समाघृत है। इस गद्यांश में राजा, यौगन्धरायण, वासवदता, पदमावती के मध्य वार्तालाप चल रहा है। यौगन्धरायण जय हो महाराज की, वासवदता जय हो आर्यपुत्र की, राजा यह तो यौगन्धरायण तथा वासवदता है। आखिर सच्चाई क्या है। क्या यह स्वप्न है या वास्तविकता यौगन्धराण हम लोग छिप कर जने के अपराधी है। अतः आप हमें क्षमा करें। यौगन्याराण के अनुसार हम लोग तो महराज के भाग्यों के अनुगामी है।

व्याख्या– पदमावती अरे यह तो आर्या वासवदता है आर्ये मैंने अनजान में आप से सखी जैसा व्यवहार करने की शिष्टाचार का उल्लंघन किया है। इसीलिये मैं सिर झुकाकर आप से क्षमा मांगत हूँ।

गद्यः (8) यौगन्धरायण–स्वामिन देव्या........अत्रभवान रेभ्योऽत्रभवती च ।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश भास विरचित स्वप्नवासवदतम नाटक के षष्ठ अंक से लिया गया है। इस गद्यांश में राजा तथा यौगन्धरायण के मध्य वार्तालाप चल रहा है।

व्याख्या– महाराज देवी का कुशल समाचार सुनने के लिये आर्य रैम्य और आर्या वसुन्धरा को आज विदा कीजिये राजा के अनुसार नहीं नहीं देवी पदामवती के साथ हम भी चलेंगे जैसे महाराज की आज्ञा, सब चले जाते हैं।

बोध प्रश्ना

1. विवाहोपरान्त उदयन कहाँ निवास करता है?
2. विदुषक पदमावती के उपचार का प्रबन्ध कहां करता है?
3. उस की शय्या पर कौन लेट जाता है?
4. विदुषक ठण्ड के बचने के लिये क्या उपाय करता है?
5. राजा स्वप्न में किसे देखता है?
6. वासवदता जाते समय राजा के हाथ को कहां रखती है?
7. राजा विदुषक को कौन सी घटना सुनाता है?
8. उसी समय कंचुकी क्या सूचना देता है?
9. पदमावती के साथ कौशम्वी, क्यों आती है?
10. जब राजा को घोषवती, वीणा मिलती हैं, तो राजा कि क्या प्रतिक्रिया होती है?
11. कंचुकी राजा के समक्ष क्या रखता है?
12. चित्रा देखकर पदमावती क्या कहती है?
13. ठीक, उसी समय सन्यासी के वेष में कौन आता है।

"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक का कथानक तथा नाटक के नाम की सार्थकता

पाठ की रूप–रेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 विषय विवेचन

8.4 बोध प्रश्नाः

8.5 सारांश

8.6 उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में भास द्वारा रचित नाटक

1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण
2. स्वप्नवासवदत्तम्
3. उरूभंगम्
4. दूतवाक्यम्
5. पञ्चरात्रम्
6. बालचरितम्
7. दूतघटोत्कचम्
8. कर्णभारम्
9. मध्यम व्यायोगः
10. प्रतिमा नाटकम्
11. अभिषेक नाटकम्
12. अविमारकम्

13. चारूदत्तम् इत्यादि 13 नाटक उपलब्ध होते हैं।

आज तक उपलब्ध संस्कृत वाङ्मय का यदि अनुशीलन किया जाये तो भास ही नाटककारों के अग्रणी रहे हैं ऐसा मानना युक्तिसंगत होगा।

नाटकों की अधिकता के कारण विषय के वेविध्यस्ते, अभिनय की उपयोगिता से भास की अनुपम नाट्य कला का परिचय मिलता है।

भाषा की सरलता, अकृत्रिम शैली, वर्णन में यथार्थता, चरित्र–चित्रण की निपुणता, घटना का संयोजन में सौष्ठव, कथावस्तु का अविरल प्रवाह भास के नाटकों की प्रमुख विशेषतायें हैं। उनके सभी नाटक रंगमंच के लिये निरन्तर उपयोगी हैं। उनके नाटकों में मौलिकता तथा कल्पना का वैचित्रय पाया जाता है। वास्तव में एकांकी नाटकों के जन्मदाता भास ही माने जाते हैं। इनके पांच एकांकी नाटक हैं। भास के नाटकों के संवाद संक्षिप्त और प्रभावोत्पादक हैं। भास अनावश्यक विस्तार का परित्याग करते हैं।

भास की शैली में माधुर्य ओज और प्रसाद तीनों गुणों का समाहार मिलता है। भास की कृत्तियों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास अलंकारों का प्रयोग विशेष रूप में मिलता है। अनुप्रास तो उनका विशेष प्रिय अलंकार है।

उनकी शैली रामायण और महाभारतादि से प्रभावित है इसीलिये उनकी भाषा में कृत्रिमता और क्लिष्टता का तथा समासाधिका का अभाव परिलक्षित होता है। भास मानव मनोवृत्तियों के वर्णन में अत्यधिक पटु हैं। उनका मनोवैज्ञानिक विवेचन अत्यधिक सुन्दर है।

भास भारतीयों भावों के कवि हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय भावों का समीचीन समन्वय मिलता है। जैसे पितृ भक्ति–पतिव्रत्य, भ्रातृ–प्रेम, क्षमाशीलता और त्याग।

भास भावों का ऐसा सजीव चित्रण करते हैं मानों वे हमारे सामने मूर्तिमान होकर उपस्थित हो जाते हैं।

भास के व्यंग्य प्रयोग भी असाधारण और मार्मिक हैं।

भास के दो नाटक स्वप्नवासवदत्तम् और प्रतिज्ञायौगन्धरायण ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर रचे गये हैं। इन नाटकों में भास ने तीन राजाओं (उदृयन प्रद्योत तथा मगध) के नाम और परिचय भी लिखा है।

उनके नाटकों में शिष्ट एवं परिष्कृत हास्य का पुट भी पाया जाता है। भास का प्रकृति चित्रण भी सुन्दर, स्वाभाविक और रोचक है। उन्होंने बाह्य प्रकृति को अन्तः प्रकृति के अनुरुप ही चित्रित किया है। भास ने अपनी उपमाओं के लिए प्रायः प्रकृति के ही उपादान चुने हैं।

किसी घटनास्थल या दृश्य का वर्णन करते समय भास कालिदास या भवभूति की तरह कल्पना का पुट चढ़ाकर उसे अधिक रंगीला या चुटकीला बनाने का प्रयास नही करते अपितु उसके नैसर्गिक स्वरूप का बारम्बार वर्णन कर उसका हृयग्राही दृश्य उपस्थित कर देते हैं।

भास के उपर्युक्त गुणों पर ध्यान देने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यदि कालिदास जैसे महाकवि उनका आदरपूर्वक उल्लेख करें तो कोई आश्चर्य नहीं।

यदि कालिदास के काव्य में उपमा अलंकार का सौष्ठव और ध्वन्यात्मकता सहृदयों के हृदय को आह्लादित करती है तो भास की कविता मनोवृत्ति के आकर्षण द्वारा आह्लादित करती है।

निष्कर्षतः यह पूर्णतया सत्य प्रतीत होता है कि भास एक अलौकिक जनप्रिय तथा मनोवैज्ञानिक कवि हैं।

8.2 उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को भास की नाट्य रचनाओं से परिचित कराना।
2. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के आधार पर छात्रों को भास की नाटकीय विशेषताओं से परिचित कराना।
3. नाटकीय कथावस्तु से छात्रों को अवगत कराना तथा कथानक में नाटककार की मौलिक उद्भावनाओं का भी ज्ञान कराना।
4. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के नामकरण की सार्थकता को स्वप्नदृश्य के माध्यम से सिद्ध करके समझाना।

8.3 विषय विवेचन

"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक का कथानक तथा नाटक के नाम की सार्थकता।

8.3 (1) "स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का कथानक"

"स्वप्नवासवदत्तम्" की कथावस्तु का सम्बन्ध छठी शताब्दी ई0 पू0 के भारत के तीन प्रमुख राज्यों–वत्स, अवन्ति और मगध से है। ये तीनों राज्य उत्तर भारत में थे। इनमें वत्स राज्य प्रयाग (इलाहाबाद) के पश्चिम में गंगा–यमुना का भाग था इनकी राजधानी कौशाम्बी थी। अवन्ति राज नर्मदा नदी के उत्तर में विन्ध्य पर्वत के आंचल में फैला जनपद था, इसकी राजधानी उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) थी। मगध काशी के पूर्व में गंगा के दक्षिणी भाग में शोण नद के दोनों ओर फैला विशाल राज्य था। इसकी राजधानी राजगीर (पटना थी)। प्रस्तुत नाटक का कथानायक उदयन वत्स का राजा था। अवन्तिका राजा महासेन प्रद्योत उसके साथ अपनी पुत्री वासवदत्ता का विवाह करना चाहता था। उसके अमात्य शालङ्कामन के विन्धय के जंगल में हाथियों का शिकार कर रहे उदयन को छलपूर्वक बन्दी बना लिया। बन्दी उदयन वासवदत्ता को वीणा की शिक्षा देने के लिये नियुक्त हुआ। धीरे–धीरे उदयन और वासवदत्ता एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुये। उदयन अपने कुशल मंत्री यौगन्धरायण की सहायता से वासवदत्ता को लेकर उज्जयिनी से भागने में सफल हुआ, और इस प्रकार दोनों का प्रणय विवाह सम्भव हुआ।

उदयन वासवदत्ता के प्रेम में इतना लीन रहने लगा कि वह राज्य के कार्यों के प्रति उदासीन रहने लगा। फलस्वरूप उसके राज्य को पड़ोसी राजा आरूणि ने हथिया लिया। अपने राज्य को वापिस लेने के लिए उदयन के सचिव यौगन्धरायण और अमात्य रूमणवान ने एक योजना बनाईं राज ज्योतिशियों से उन्हें विदित हुआ था कि मगध के राजा दर्शक की बहिन पद्मावती उदयन की पत्नी बनेगी।

पद्मावती के साथ विवाह करने से उदयन का मगध राज की सैनिक सहायता प्राप्त हो सकती थी परन्तु वासवदत्ता से उसका इतना प्रगाढ़ प्रेम था कि उसके रहते उसके दूसरे विवाह की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

यौगन्धरायण ने अपनी योजना के अधीन, वत्स देश में स्थित लावाण ग्राम में (जहाँ उदयन शिकार के सिलसिले में सपरिवार टिका हुआ था) उदयन की अनुपस्थिति में आग लगा दी और यह प्रसिद्ध कर दिया कि वासवदत्ता आग में जलकर मर गई तथा उसे बचाने के प्रयत्न में यौगन्धरायण भी आग की लपेट में आ गया। इस दारूण समाचार को सुनकर विक्षुब्ध हुये उदयन को रूमणवान ने धीरज बंधाया। इस प्रकार उदयन के द्वितीय विवाह के लिये जो प्रस्तुत

नाटक का विषय है उसके लिये पृष्ठभूमि तैयार की गई। लावाणक ग्राम से निकल कर यौगन्धरायण और वासवदत्ता क्रमशः ब्राह्मण, सन्यासी और अवन्तिका के वेष में मगध की राजधानी राजगृह के निकट किसी आश्रम में पहुँचते हैं। यहाँ पद्मावती आश्रम में एकान्तवास कर रही अपनी माता से मिलने आती है। यौगनधरायण वासवदत्ता को पद्मावती के पास धरोहर के रूप में यह कहकर इसका पति विदेश गया रखन के लिये अनुरोध करता है जिसे पद्मावती स्वीकार कर लेती है। कालान्तर में कार्यवश मगध पधारे उदयन ने महाराज दर्शक के अनुरोध पर पद्मावती से विवाह करना स्वीकार कर लिया।

अवन्तिका इस समाचार को सुन अपने मन्द भाग्य को कोस रही होती है। इसी बीच एक चेरी फूल लेकर उसके पास पहुँचती है और उसे शीघ्र जयमाला तैयार करने को कहती है। आवन्तिका खिन्न ह्रदय ये जयमाला गूंथकर उसे पकड़ा देती है।

उदयन विवाहोपरान्त महाराज दर्शक के राज प्रसाद में ही निवास कर रहा होता है। उसे पता चलता है कि पद्मावती तीव्र शिरोवेदना से पीड़ित है और उसकी शैय्या समुद्रगृह में लगा दी गई है। राजा वहाँ पहँचता है और पद्मावती को वहाँ न पाकर स्वयं उसकी शैय्या पर लेट जाता है और उसे नींद आ जाती है। इसी बीच आवन्तिका भी पद्मावती की शिर पीड़ा का समाचार सुन वहाँ आ जाती है और पद्मावती को सोया जानकर स्वयं भी उसके साथ सो जाती है। राजा स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है और उसे प्रेमपूर्ण शब्दों से सम्बोधित करता है वासवदत्ता भी उत्सुकतावश उत्तर देने लगती है परन्तु कुछ समय बाद इस भय से राजा जागकर उसे पहचान न ले वहाँ से चल पड़ती है। जाते–जाते पलंग से नीचे लटक रहे राजा के हाथ को पलंग पर टिका देती है। इस बीच अचानक राजा की नींद खुल जाती है। वह वासवदत्ता को पकड़ने का प्रयास करते हुये दरवाजे से टकरा जाता और वहीं रूक जाता है। विदूषक राजा के साथ घटी घटना को भ्रम कहकर टाल देता है और कहता है वह तो कब की मर चुकी है। युद्ध में आरूणि को परास्त कर उदयन अपना खोया राज्य प्राप्त कर लेता है। पद्मावती उदयन तथा अवन्तिका कौशाम्बी आ जाते हैं एक दिन राजा को घोषवती वीणा जिसे वासवदत्ताबजाया करती थी, की ध्वनि सुनाई पड़ती है। राजा वीणा को देख वासवदत्ता की स्मृति में विह्वल हो जाता है। इसी बीच प्रद्योत का कञ्चुकी और वासवदत्ता की धात्री उपस्थित होते हैं और वे उदयन को प्रद्योत की ओर से राज्य प्राप्ति पर बधाई देते हैं तथा उसे उसके वासवदत्ता के साथ विवाह का चित्र दिखाते हैं, चित्र को देखकर पद्मावती उदयन को बताती हे कि ठीक उसी आकृति की एक स्त्री उसके पास रहती है जिसे कुछ समय पूर्व एक संन्यासी प्रोषित बहन कहकर धरोहर के रूप में उसे सौंप गया था।

ठीक उसी समय यौगन्धरायण उपस्थित होता है और अपनी धरोहर (वासवदत्ता) वापिस माँगता है। धात्री देखते ही वासवदत्ता को पहचान जाती है, यौगनधरायण भी अपने वास्तविक वेश में आ जाता है। उदयन अपनी प्रेयसी वासवदत्ता एवं प्रिय सचिव यौगनधरायण को पुनः पाकर हर्षित हो उठता है। तदन्त्तर भरत वाक्य के पश्चात् नाटक सुखान्त रूप मे समाप्त होता है।

भास द्वारा वर्णित उदयन कथायें बृहत्कथा की उदयन कथा की तुलना में इतिहास की वास्तविकता अधिक है, क्योंकि गुणाढ्य की अपेक्षा भास काल की दृष्टि में उदयन के अधिक निकट हैं।

भास एक नाटककार थे इतिहास लेखक नहीं अतः उनकी उदयन कथाये यत्र–तत्र नाटकीय कल्पना की सम्भावना का निषेध नहीं किया जा सकता। भास ने निःसन्देह एक कुशल नाटककार की भान्ति मूल कथा को नाटकीय कल्पना से संजोया–संवारा है और उसे नवीन रूप में उपस्थित किया हैं।

8.3 (2) "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के नाम की सार्थकता

प्रस्तुत नाटक की श्रेष्ठता का आधार इसकी कपिपय काव्य सम्बन्धी तथा नाटकीय विशेषतायें हैं जो हमें वस्तु योजना, चरित्र चित्रण, संवाद, रस, भाषा शैली, नाट्य शिल्प, रंगमंच आदि, विविध क्षेत्रों में दीख पड़ती हैं।

नाटक के नामकरण का आधार कथावस्तु का वह अंश है जो स्वप्न दृश्य के नाम से प्रसिद्ध है। यह दृश्य नाटक का प्रमुख ओर सम्भवतः सर्वोत्तम अंश है।

नाटकीय कथावस्तु का हृदय है– उसका प्राण है। स्वप्न दृश्य के आधार पर नाटक का नामकरण करना भास की उर्वर नाटकीय कल्पना का सुन्दर निदर्शन है। नाटक के उक्त नामकरण में नाट्य शस्त्रीय धारणा का अनुपालन भी हुआ है।

'स्वप्नवासवदत्तम्' इस नाम का आधार नाटक के पञचम अंक की एक विशेष घटना है।

समुद्र गृह में रानी पद्मावती की प्रतीक्षा करते–करते राजा उदयन को नींद आ जाती है। कुछ देर बाद वहाँ वासवदत्ता जो अवन्तिका के रूप में राजगृह में रह रही है आती है और वहीं उदयन की शैय्या पर चादर ओढ़े सोये उदयन को पद्मावती समझ कर लेट जाती है। राजा सपने में वासवदत्ता को देखता है और उसे सम्बोधित करता है। साथ लेटी हुई वासवदत्ता उत्सुकतावश स्वप्न में बोल रहे राजा की बातों का उत्तर देने लग जाती है। स्वप्नावस्था में स्थित प्रिय और जागृत अवस्था में विद्यमान प्रेमी के बीच वार्तालाप तथा उनके मिलन का यह दृश्य नाटक का एक मार्मिक प्रसंग है। साहित्य दर्पण के अनुसार नाटक का नाम सन्धि द्वारा सूचित अर्थ की अभिव्यञ्जना करने वाला होना चाहिये।

"नामकार्य नाटकस्य गर्भितार्थ प्रकाशकम्"

गर्भसन्धि नाटक में फलागम के मुख्य उपाय के सभुद्भेद अथवा आविभार्व को कहते हैं।

प्रस्तुत नाटक में उदयन द्वारा वासवदत्ता की पुनः प्राप्ति फलागम है उसका मुख्य उपाय यहाँ स्वप्नमिलन के रूप में वर्णित है।

नाटक के स्वप्न दृश्य में इस उपाय का सभुद्भेद हुआ है, अतः उसके आधार पर नाटक का उक्त नामकरण उपयुक्त ही है।

8.4 बोध प्रश्न :

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' की कथा का मूल स्रोत प्रतिपादित करें।
2. कथानक में की गई कवि की मौलिक उद्भावनाओं को रेखांकित करें।
3. नाटक में यौगन्धरायण की भूमिका की याथोचित समीक्षा कीजिए।
4. "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक का नाम नाटक के किस दृश्य से सम्बनिधत है, युक्तियुक्त विवेचन करें।

8.5. सारांश

प्रस्तुत पाठ के दो भाग हैं। एक नाटक का कथानक और दो नाटक के नाम की सार्थकता नाटक की मूलावस्था का स्रोत ऐतिहासिक है। उदयन कथा से सम्बन्धित नाटकों में "प्रतिज्ञा–यौगन्धरायण" में चार अंकों में उक्त कथा का पूर्वभास वर्णित हैं। इसके अन्तर्गत यौगन्धरायण द्वारा उज्जयिनी में बन्दी बनाए गये उदयन को उसकी प्रेयसी वासवदत्ता के साथ युक्त करने की प्रतिज्ञा और उसकी पूर्ति के साथ उदयन वासवदत्ता के प्रेम विवाह का वर्णन है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' में उदयन कथा के उत्तर भाग का वर्णन है। इसके अन्तर्गत यौगन्धरायण के प्रयत्नों मे उदयन और पद्मावती के विवाह एवं तद् द्वारा मगधराज की सैनिक सहायता प्राप्त होने से उदयन की पुनः स्वराज्य प्राप्ति की घटना वर्णित है। भास ने मूल कथा में अपनी कल्पना की मौलिकता के माध्यम से मौलिक उद्भावनायें करके और उन्हें नाटकीश कौशल में संवार कर नवीन रूप में उपस्थित किया है।

8.5 उपयोगी पुस्तकें

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास
   (बहादुर चंद छावड़ा)
2. प्राचीन संस्कृत नाटक
   (राम जी उपाध्याय)
3. संस्कृत नाटक समीक्षा
   (डॉ इन्द्रपाल सिंह इन्द्र)
4. संस्कृत वाड् मय
   (श्री बलदेव उपाध्याय)

"स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का कथानक, कथानक के स्रोत एवं नाटककार की मौलिक उदभावनायें"

रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 विषय विवेचन

9.4 सारांश

9.5 बोध प्रश्नाः

9.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.1 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि नाटककार अपने नाटक की रचना के लिये तथा उसको लोकप्रिय तथा रूचिकर बनाने के लिये विभिन्न स्रोतों से कथानक की तलाश करता है। जो स्रोत उसे अच्छा तथा उपयुक्त प्रतीत होता है उसी को आधार बना कर नाटककार अपने नाटक की रचना करता है। कथानक के ये स्रोत ऐतिहासिक, पौराणिक, लोकगाथा सम्बधित या काल्पनिक भी हो सकते हैं। नाटककार इन स्रोतों में से किसी एक को आधार बनाकर उसमें विभिन्न परिवर्तन कर के अपनी कल्पना के माधुर्य से इसमें नवीन उद्दभवानायें करके उसे पाठकों के लिये रूचिकर बनाता है।

प्रस्तुत पाठ में "स्वप्नवासदत्तम्" नाटक का कथानक कथानक के स्रोत एवं नाटककार की मौलिक उद्भवानाओं का अध्ययन करेंगे। अध्ययनोपरानत यह जानने में सक्षम होंगे कि "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक में नाटककार भास ने मूल कथानक में किस अद्भुत कल्पना कौशल से तथा अपनी मौलिक उद्भावनाओं से यथाभिलाषित परिवर्तन करके नाटक को सुबोध एवं रूचिकर बनाया है।

9.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् यह जानने मे सक्षम होंगे कि :–

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का मूल कथानक क्या है?
2. इसके विभिन्न स्रोत कौन–कौन से हैं?
3. नाटककार ने नाटक के विभिन्न स्थलों पर मूल कथानक में कौन–कौन से परिवर्तन किये हैं?

4. तथा नाटककार की कल्पना शक्ति के आधार पर उसकी मौलिक उ्भावनायें क्या क्या है?

9.3 विषय विवेचन

भास रचित "स्वप्नवासदत्तम्" नाटक की कथा का मूलस्रोत ऐतिहासिक है।

उदयन, प्रद्योत, दर्शक आदि सभी इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। भास गुणस्य से पूर्ववर्ती हैं। अतः यही प्रतीत होता है कि भास और गुणाढय दोनों ने प्रचलित लोक कथा को अपने अपने ढंग से, परस्पर निरपेक्ष रूप में ग्रहण किया। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी होती है कि वृहत्कथा के आज उपलब्ध रूपात्तरों में प्राप्त उदयन कथा में एवं भासकृत दो नाटकों प्रतिज्ञा–यौगन्धारयण' और 'स्वप्नवासवदत्तम्' में प्राप्त उदयन कथा में परस्पर पर्याप्त अन्तर हैं:–

वृहत्कथा के रूपान्तरों में महासेन और प्रद्योत दो भिन्न व्यक्ति हैं। महासेन अवन्ति का राजा है और प्रद्योत मगध का।

भास, नाटकों के अनुसार प्रद्योत अवन्ति राजा है और दर्शक मगध का।

2. इन रूपान्तरों के अनुसार पद्मावती मगध नरेश की पुत्री है जब की भास ने इसे मगध नरेश की बहिन बताया है।

3. भास ने वासवदत्तको यौगन्धारयण की बहिन के रूप में उपस्थापित किया है, जब कि वृहत्कथा के रूपांत्तरों में वह उसकी पृत्रीं के रूप में वर्णित है।

4. वृहत्कथा में आरूणि के द्वारा वत्स राज्य को हथिया लेने का वर्णन नहीं है, जबकि भास के स्वप्नवासवदत्तम् की यह एक प्रमुख घटना है।

5. वृहत्कथा के अनुसार उदयन पद्मावती से विवाह कराने के स्पष्ट उद्देश्य से राजगृह में जाता है, जबकि स्वप्नवासवदत्तम् के अनुसार वह किसी अन्य कार्य विशेष के कारण राजगृह में जाता है। वह वहां के राजा के आग्रह पर पद्मावती से विवाह सम्बध स्थापित करता है।

6. वृहत्कथा के अनुसार वासवदत्ता सम्बन्धी रहस्य का उद्घारन एक प्राकृतिक शक्ति द्वारा होता है तथा उदयन और वासवदत्ता का पुनर्मिलन लावाणक ग्राम में होता है। किन्तु भासकृत स्वपन वासवदत्तम् नाटक में उक्त रहस्य का उद्घारन अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से होता है तथा नायक नायिका पुनर्मिलन कौशाम्बी में सम्पन्न होता है। डॉ0 पुसालकर के अनुसार भास काल की दृष्टि से उदयन के अधिक निकट हैं।

यदि इस तथ्य को मानकर चलें कि भास एक नाटककार थे, इतिहास लेखक नहीं तो उनकी उदयन कथा में यत्र तत्र नाटकीय कल्पना की सम्भावना का निषेध नहीं किया जा सकता।

भास ने निःसन्देह एक कुशल नाटककार की भान्ति मूल कथा को नाटकीय कल्पना से सजाया संवारा है तथा उसे नवीन रूप में समाज के सामने उपस्थित किया है।

भास की नाटकीय परिकल्पना उनकी उदयन कथा सम्बन्धी निम्नलिखित घटनाओं में झलकती हैः

1. पुष्पक भद्रादि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी ।
2. अपने प्रिय पति के हित साधन के लिये वासवदत्ता का अपूर्व त्याग ।

3. लावाणक के भयानक अग्निकाण्ड में वासवदत्ता और यौगन्धरायण के जल भरने का लोकप्रवाह।

4. स्वप्न दृश्य वर्णन।

5. आरूणि जिसका इतिहास में कोई उल्लेख नहीं मिलता। उसके द्वारा वत्सदेश पर अधिकार कर लेना।

6. चित्र की कथा रूढ़ि के माध्यम से वासवदत्ता सम्बन्धी रहस्य का स्वाभाविक ढंग से अनावरण करना।

उक्त घटनाओं के अतिरिक्त नाटक मे विविध वस्तु वर्णनों, आख्यान विवरणों, स्थितियों सम्वादों एवं विभिन्न पात्रों के मनोभावों के मनोवैज्ञानिक उपस्थापन में उनकी बहुविद्ध मौलिक उद्भावना चातुरी को सम्यकतया पहचाना जा सकता है।

यह मानना कठिन है कि भास ने अपने चर्चित नाटक स्वप्नवासवदत्तम् की कथा इतिहास अथवा पुराण से सीधे ग्रहण की हो।

प्रतीत होता है कि उदयन आदि के अपने समय के बाद कालक्रम से उदयन सम्बन्धी कथा में लोक कथा के तत्व जुड़ गये, फलतः मूल कथा को रूमानी वातावरण और रूप प्राप्त हो गया। आगे चल कर यह कथा लोक कथा का एक भाग बन गई।

9.4 सारांश :–

"स्वप्नवासवदत्तम" की मूल कथा का स्त्रोत ऐतिहासिक है, उदयन, प्रद्योत और दर्शक इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति। एवं वासवदत्ता आदि अन्य पात्र भी सम्भवतः इतिहास से लिये गये हैं। वस्तु यह मानना कठिन है कि भास ने अपनी कथा इतिहास अथवा पुराण से सीधे ग्रहण की है। डा0 वीथ के अनुसार भास की उदयन कथा का स्त्रोत गुणाढंय की वृहत्कथा है। भास गुणाढय के पूर्ववर्ती हैं अतः सम्भव यही प्रतीत होता है कि भास और गुणाढय दोनों ने प्रचलित लोककथा को अपने ढंग से परस्पर–निरपेक्ष रूपान्तरों में उदयन कथा में एवं भास के दो नाटकों प्रतिज्ञा–यौगन्धारायण और स्वप्नवासवदत्तम् में प्राप्त उदयन कथा में परस्पर पर्याप्त अन्तर है। भास द्वारा वर्णित उदयन कथा में वृहत्कथा की उदयन कथा की तुलना में इतिहास की वास्तविकता अधिक है, क्योंकि गुणाढय की अपेक्षा भास, कला की दृष्टि से उदयन के अधिक निकट हैं।

भास ने निःसनदेह एक कुशल नाटककार की भान्ति मूल कथा को नाटकीयकल्पना से सजाया संवारा है और उसे नवीन रूप में उपस्थापित किया है।

भास की नाटकीय कल्पना उसकी उदयन कथा की निम्नलिखित घटनाओं में झलकती हैः–

1) पुष्पक भद्रादि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी

2) अपने पति के हित के लिये वासवदत्ता का अपूर्वत्याग

3) लावाणक के भयंकर अग्निकाण्ड में वासवदत्ता और यौगन्धरायण से जल मरने का लोक प्रवाह।

4) स्वप्नदृश्य

5) आरूणि (जिसका इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं मिलता। का वत्सदेश पर अधिकार।)

6) चित्र की कथा रूढ़ि के माध्यम से वासवदत्ता सम्बन्धी रहस्य का स्वाभाविक ढंग से अनावरण।।

उक्त सब घटनाओं के अतिरिक्त विविध वस्तु वर्णनों आख्याण विवरणों स्थितियों ओर विभिन्न पात्रों के मनोभावों के मनो वैज्ञानिक उपस्थापन में भी भास की बहुविध मौलिक उद्‌भावनाओं को उनके प्रसिद्ध नाटक स्वप्नवासवदत्तम् में पहचाना जा सकता हैं।

9.5 बोध प्रश्न :–

1. वृहत्कथा में प्राप्त उदयन कथा तथा स्वप्नवासवदत्तम् में भास द्वारा वर्णित उदयन कथा में अन्तर स्पष्ट कीजिए:–

2. भास ने निःसन्देह एक कुशल नाटककार की भान्ति "स्वप्नवासवदत्तम्" की मूल कथा को अपनी नाटकीय कल्पना से सजाया है सिद्ध कीजिए?

9.6 बोध प्रश्नो के उत्तर :–

क. वृहत्कथा कथा के आज उपलब्ध संस्कृत रूपान्तरों में प्राप्त उदयन कथा तथा भास के स्वप्नवासवदत्त में वर्णित उदयन कथा में पर्याप्त अन्तर है।

यह अन्तर निम्नलिखित विवरणों से सम्बन्धित है:–

1. वृहत्कथा के रुपान्तरों में महासेन और प्रद्योत दो भिन्न व्यक्ति हैं। महासेन अवन्ति का राजा है और प्रद्योत मगध का।

भास के अनुसार प्रद्योत अवन्ति का राजा है और उसे ही उसकी बहुत बड़ी सैन्य शक्ति के कारण महासेन कहा जाता है।

2. इन रुपान्तरों के अनुसार पद्‌मावती मगध नरेश की पुत्री है। जबकि भास ने इसे मगध नरेश की बहिन बताया है।

3. भास ने वासवदता को परिव्राजक वेषधारी यौगन्धरायण की बहिन के रूप में उपस्थापित किया है जबकि वृहत्कथा के रुपान्तरों में वह उसकी पुत्री के रूप में प्रदर्शित है।

4. वृहत्कथा के रूपान्तरों में आरूणि के द्वारा वत्स राज्य को हथिया लेने का वर्णन नहीं है, जब कि भास के 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की यह एक प्रमुख घटना है।

5. वृहत्कथा के रुपान्तरों के अनुसार उदयन पदमावती से विवाह कराने के स्पष्ट उद्देश्य से राजगृह जाता है, जबकि 'स्वप्नवासवदत्तम्' के अनुसार वह किसी अन्य कार्यवश राजगृह जाता है तथा वहां के राजा के आग्रह पर पद्‌मावती से विवाह संबंध स्थापित करता है।

वृहत्कथा के रूपान्तरों के अनुसार वासवदता सम्बन्धी रहस्य का उद्घारन एक अप्राकृतिक शक्ति (Supernatural power) द्वारा होता है, तथा उदयन और वासवदता का पुनर्मिलन लावाणक में होता है, जबकि भास नाटक में उक्तरहस्य का अनावरण अत्यंत स्वभावकि ढंग से होता है। तथा नायक नायिका का पुनर्मिलन कौशाम्बी में सम्पन्न होता है।

ख. भास स्वप्नवासवदत्तम् की मूलकथाओं को अपनी नाटकीय कल्पना से सजाकर उसे नवीन रूप में उपस्थित किया

है। भास के नाटकीय परिकल्पना उसकी उदयन कथा की निम्नलखित घटनाओं में झलकती हैः–

1. पुष्पक भद्रादि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी !
2. अपने पति के हित के लिये वासवदता का अपूर्व त्याग !
3. लावाणक के भीषण अग्निकाण्ड में वासवदता के जल मरने का लोकप्रवाह !
4. स्वप्नदृश्य !
5. आरूणि (जिसका इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं मिलता) द्वारा वत्सदेश पर अधिकार कर लेना।
6. चित्र की कथा रूढि (Motif) के माध्यम से वासवदता सम्बन्धी रहस्य का स्वाभाविकढंग से अनविरग। इत्यादि के द्वारा स्वप्नवासवदत्ता नाटक में भास बहुविध नाटकीय परिकल्पना एक मौलिक उद्भावनाओं को पहचाना जा सकता है।

———————

"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के प्रथम तीन अंकों का आलोचनात्मक सार।

पाठ की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 विषय विवेचन

10.4 सारांश

10.5 बोध प्रश्नाः

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत नाटक "स्वप्नवासवदत्तम" छः अंकें पर आधारित नाटक है। नाटकीय कथा–वस्तु बड़े ही रूचिक वर्णनों द्वारा धीरे धीरे आगे बढ़ती है। अवन्तिनरेश प्रधोत अपनी पुत्री वासवदता का विवाह नरेश उदयन से करना चाहता था। उसके अमात्य शालङ्कायन ने छलपूर्वक उदयन को हाथियों का शिकार करते समय वन्दी बनाया। वन्दी उदयन को वासवदत्ता की वीणा शिक्षा के लिये नियुक्त किया। धीरे–2 वासवदत्ता ओर उदयन एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुये उदयन अपने मन्त्री यौगन्धरायण की सहायता से उज्जयिनी से वासवदत्ता सहित भागने में सफल हुआ।

उदयन के राज्य को पड़ोसी राजा आरूणि ने हथिया लिया अपने राज्य को वापिस लेने के लिये उदयन के सचिव यौगन्धरायण ओर अमात्य रूमण्वास एक योजना बनाई। पद्मावती के साथ विवाह करने से उदयन को मगधराज की सैनिक सहायता प्राप्त हो सकती थी। यौगन्धरायण ने अपनी योजना के अधीन लाकर ग्राम में आग लगा दी और सुचित कर दिया कि आग में यौगन्धरायण और वासवदत्ता जलकर मर गये। इस प्रकार उदयन के दूसरे विवाह के लिये (जो प्रस्तुत नाटक का विषय है) उपयुक्त पृष्ठ भूमि तैयार की गई।

10.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप :–

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रथम अंक की कथा वस्तु तथा घटना क्रम से सम्बन्धित जानकारी पा सकेंगे।
2. स्वप्नवासवदत्तम् के द्वितीय अंक की कथावस्तु तथा घटना क्रम से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

3. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के तृतीय अंक की कथावस्तु तथा घटना क्रम से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अंकों की कथावस्तु का ज्ञान करके उसकी समालोचनात्मक समीक्षा भी कर सकेंगे।

10.3 विषय विवेचन

"प्रथम अंक का समालोचनात्मक सार"

लावणक ग्राम से निकल कर यौगन्धरायण और वासवत्ता क्रमशः ब्राह्मण सन्यासी और आवन्तिका के वेश में मगध की राजधानी राजगृह के निकवटवर्ती किसी आश्रम में पहुँचते हैं। इसी समय मगधराज दर्शक की बहिन पद्मावती भी, उसी आश्रम में एकांत जीवन बिना रही अपनी माँ से मिलने के लिये अपने परिजन के साथ वहाँ आती है। अपने धर्मानुरागी स्वभाव के अनुरूप वह वहां घोषणा कराती है कि वह तपस्विजनों को मुंहमांगी वस्तु प्रदान करेगी।

यौगन्धरायण अवसर पाकर निवेदन करता है "मुझे किसी पदार्थ की इच्छा नहीं, किंतु प्रार्थना है कि राजकुमारी जी मेरी बहिन अवन्तिका को, जिसका पति विदेश गया हुआ है, कुछ समय के लिये अपने पास रखे।"

पद्मावती उसकी असमर्थता से स्वीकार करती है। अवन्तिका (वासवदता) पद्मावती के पास चली जाती है।

इसी समय वहाँ एक ब्रह्मचारी आता है। लावाणक ग्राम से आया वह ब्रह्मचारी उस ग्राम में आग लग जाने एवं उस आग में वासवदता और यौगन्धरायण के जल मरने का समाचार सुनाता है। वह उस समाचार को सुनकर व्याकुल हो गये उदयन की करूण दशा का भी वर्णन करता है। यौगन्धरायण और वासवदत्ता अन्जान बन कर यह सब सुनते हैं। कुछ समय बाद यौगन्धरायण पद्मावती से अनुमति लेकर वहां से चला जाता है। पद्मावती भी आवन्तिका के साथ आश्रम में स्थित अपने कक्ष में चली जाती है।

"द्वितीय अंक का समालोचनात्मकसार"

राजकुमारी पद्मावती अपने भाई मगधराज दर्शक के राजप्रसाद के साथ लगी वाटिका में अपनी सखियों के साथ गेंद खेल रही होती है। वहीं बात बात में उसकी चेटी अवन्तिका को बताती है कि राजकुमारी वत्सराज उदयन से विवाह सम्बन्धी इच्छुक है। इसी बीच पद्मावती की धारा वहां आकर समाचार देती है कि किसी कारण यहा आये उदयन ने महाराज दर्शक के आग्रह पर पद्मावती से विवाह करना स्वीकार कर लिया है, और पद्मावती का वाक्दान भी हो गया है। वह भी सूचना देती है कि "कौतुक मंगल" (विवाह सूत्र बांधने का मग्ङलाचार) आज ही सम्पन्न होगा। वह राज कुमारी को उक्त मंगलाचार के अनुष्ठान के लिये अपने साथ ले जाती है।

"तृतीय अंक का समालोचनात्मक सार"

अविन्तका प्रमदवन के एक कोने में अपने भाग्य को कोस रही होती है। वह यह सोचकर परम दुःखी है कि उसका पति अब दितीय विवाह सूत्र में बँधकर पराया होने जा रहा है।

उधर विवाह की तैयारियाँ चल रही है। इसी सिलसिले में अवन्तिका से जयमाला गुँथवाने के लिये उसे ढूंढती हुई महारानी की एक चेटी फूल लेकर उसके पास प्रमदवन पहुंचती है, और उसे शीघ्र ही जयमाला तैयार करने को कहती है।

अवन्तिका अपने भाग्य को कोसती हुई जयमाला गूंथ कर उसे पकड़ा देती है।

10.4सारांश

उपरोक्त तीनों अंकों की कथावस्तु के अध्यन से हमें पता चलता है कि संपूर्ण घटना चक्र पद्मावती से उदयन का विवाह सम्बन्ध सम्पन्न कराने हेतु रचा गया है। इस प्रकार दयन के द्वितीय विवाह के लिये (जो प्रस्तुत नाटक का विषय है) उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार की गई है। प्रथम अंक में लावाणक ग्राम से निकलकर यौगन्धरायण और वासवदता का क्रमशः ब्रह्मचारी और अवन्तिका के वेष में मगध की राजधानी के निकटवर्ती किसी आश्रम में पहुँचाना। आवन्तिका को अपनी धरोहर रूप में वासवदता को पद्मावती के पास रखना।

द्वितीय अंक में राजा उदयन का किसी कार्य विशेष हेतु महाराजा दर्शक से राजगृह में मुलाकात करना तथ राजा दर्शक के आग्रह पर उनकी बहिन पदमावती से विवाह संबंध स्थापित करने को मान जाना। तृतीय अंक में महाराज उदयन और पदमावती के विवाह की सफल परागति का वर्णन नाटक के तीन अंकों की मुख्य कथा वस्तु और घटना क्रम हैं। इसे नाटककार भास ने अपनी नाटक कला के माध्यम से बड़ी ही रोचक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। भास मनोवैज्ञानिक झलक पर बहुरंगे और प्रभावशाली चित्र करने में अत्यंत निगुण नाटककार है। उन्होंने प्रथम तन अंकों की कथा वस्तु को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

भास की चरित्रचित्रण कला की विशेषता उसके द्वारा विभिन्न पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। पात्रों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से भास स्वप्नवासवदत्तम नाटक में विशेष सफल हुए हैं। तथा शिल्प की दृष्टि से इस नाटक के विशेष गुण हैं घटनाओं की गतिशीलता तो हमें नाटक के प्रायः सभी अंको में गतिमान मिलती है। भास ने घटनाओं की गतिशीलता, सम्वादों की प्रवाह मयता, स्थान स्थान पर नाटकीय सोत्प्रास (Dramatic Irony) का सुन्दर प्रयोग किया है।

इस प्रकार वस्तु योजना, चरित्र चित्रण, सम्वाद, रस परिपाक, नाट्य शिल्प जीवन दर्शन की व्याख्या, करने में भास एक कुशल नाटककार हैं। भास श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के प्रबल व्याख्याकार है।

यह संस्कृत के प्रथम नाटककार है जिन्होंने प्रमुख नाटकीय तत्वों के रूप में जीवन मूल्यों का सही संरक्षण किया है।

10.5बोध प्रश्ना :

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रथम अंक की कथा वस्तु एवं घटना चक्र का नाटक में क्या औचित्य है?

2. द्वितीय अंक में मगधराज दर्शक के पास वत्सराज उदयन का किसी कार्यवश राजगृह में जाने काक्या परिणाम निकला?

3. नाटक के तृतीय अंक के घटना चक्र का क्या महत्व है?

10.6बोध प्रश्नों के उत्तर

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रथम अंक की कथावस्तु का तथा घटना चक्र का औचित्य यह है कि वासवदत्ता को मृत घोषित करके तथा उसे अवन्तिका के रूप में पद्मावती के पास रखकर। महाराज उदयन का पद्मावती के साथ

दूसरे विवाह का पथ प्रशस्थ करना। जो वासवदत्ता के जिवित रहते सर्वथा असम्भव था तथा उदयन को उस दशा में मगध राजा की सैन्य सहायता भी मिल पाना असम्भव था। जो सहायता उदयन को अपना खोया राज्य वापिस लेने के लिए अत्यन्त आवश्यक थी। अतः प्रथम अंक की कथावस्तु एवं घटना चक्र का स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में महान औचित्य है।

2. मगधराज दर्शन के राज प्रासाद में उदयन के किसी कार्य वश जाने का यह परिणाम निकला कि महाराज दर्शक ने स्वयं अपनी बहिन पद्मावती का उसके साथ विवाह कराने का निर्णय लिया तथा इसके लिये उदयन से विशेष आग्रह भी किया, जिसे उदयन ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस प्रकार यह विवाह उदयन की भावी राज्य सम्बन्धी योजनाओं की सफल परिगति के लिये सहायक सिद्ध हुआ।

3. नाटक के तृतीय अंक में पद्मावती और वत्सराज उदयन दोनों परिणाय सूत्र में बंध जाते हैं। नाटक के तृतीय अंक की यह घटना में अपना विशेष महत्व रखती है। यौगन्धरायण की सारी योजना की परिगति भी इस विवाह सम्बन्ध पर निर्भर करती है।

यदि यह विवाह सम्बन्ध स्थापित न होता तो नाटक की कथावस्तु की दिशा विपरीत हो जाती। इसी विवाह के माध्यम से ही वत्सराज ने अपना खोया राज्य वापिस लेने के लिये महाराज दर्शक से सैन्य सहायता मिलने वाली थी। यदि वह विवाह सम्बन्ध परिपक्व न होता हो यौगंधरायण अपनी याजना मे सफल न हो पाता और उदयन को अपना खोया राज्य प्राप्त करने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता। अतः पद्मावती और उदयन को विवाह की घटना नाटका में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के चतुर्थ, प ञ्चम् एवं षष्ठ अंकों का समालोचनात्मक सार"

पाठ की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 विषय विवेचन
11.4 सारांश
11.5 बोध प्रश्नाः
11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.1 प्रस्तावना

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक छः अंकों पर आधारित एक सफल नाटक है। इस छः अंकों की कथावस्तु यौगन्धरायण की योजना के अनुरूप वत्सराज उदयन का पद्मावती के साथ द्वितीय विवाह कराना और फलस्वरूप मगधराज की सैन्य सहायता द्वारा अपने खोये राज्य को पुनः प्राप्त करना आदि घटनायें मुख्य रूप से वर्णित है। अंकों की कथावस्तु एवं घटना चक्र रोचक ढंग से आगे बढ़ते हैं और पाठक की उत्सुकता आगे के घटना चक्र को जानने के लिये निरन्तर बनी रहती है। रोचक सम्वादों और रमणीक प्रसंगों की सृष्टि के माध्यम से नाटककार ने नाटक की कथा वस्तु की सुखाना परिणति उदयन के पद्मावती के साथ विवाह को दर्शाकर तथा वासवदत्ता का पुनर्मिलन करवा कर की है।

11.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप :–

1. "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के चतुर्थ अंक की कथावस्तु तथा घटनाक्रम से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. स्वप्नवासवदत्तम नाटक के पञ्चम अंक की कथावस्तु घटनाक्रम से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. 'स्वप्नवासवदत्तम' नाटक के अंक की कथावस्तु तथा घटनाक्रम से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. चतुर्थ, पञ्चम तथा षष्ठ अंकों की कथा वस्तु तथा घटनाक्रम के ज्ञान के आधार पर आप इन अंकों की समालोचनात्मक समीक्षा भी कर सकेंगे।

11.3 विषय विवेचन

"चतुर्थ अंक का समालोचनात्मक सार"

विवाह के उपरान्त उदयन राजकीय अतिथि के रूप में महाराज दर्शक के राज प्रासाद में निवास करता है। उस का मित्र विदूषक भी उसके साथ है। दोनों प्रमवदन में प्रवेश करते हैं। जहाँ वह पहले ही पद्मावती और वासवदत्ता चेटी के साथ पहुंची हुई होती है। उदयन को देखकर वह निकटवर्ती माधवी लतामण्डप में घुस जाती है। उदयन और विदुषक लतामण्डप के पास जाते हैं और सहज भाव से उसके अन्दर प्रवेश करना चाहते हैं। यह देख चेटी भौरों से घिरे लताहार की एक शाखा को हिलाकर उन्हें बाहर ही रोक देती है। वे बाहर ही एक शिला तल पर बैठ जाते हैं और आपस में बाते करने लगते हैं। विदुषक पूछता है "कि आपको पहले वासवदता अधिक प्रिय थी अब पद्मावती अधिकप्रिय है।" उदयन उसके इस अटपटे प्रश्न को टालने का प्रयास करता हैं, परन्तु विदुषक हठ करके उससे कहलवा लेता है? "सुन्दर और गुणवती होने पर भी पद्मावती वासवदत्ता में आबद्ध मेरे हृदय को हर नहीं सकती।" वासवदत्ता की स्मृति में उदयन की आँखे बरवस सजल हो जाती हैं। विदुषक मुँह धोने के लिये पानी लाने जाता हैं। इतने में अवसर पाकर आवन्तिका वहां से निकल जाती है और पद्मावती उदयन के पास पहुंच जाती है। विदुषक और उदयन काशकुसुमकी धूल पड़ जाने से आंखे सजल हो गई है यह बहाना बनाते हैं। पद्मावती सब कुछ सुन समझ कर भी चुप रहती है। इसके बाद स्थिति कहीं बिगड़ न जाये यह सोचकर विदुषक राजा का वहाँ से चतुरता पूर्वक खिसका ले जाता है।

"पञ्चम अंक का समालोचनात्मक सार"

उदयन महाराज दर्शक के ही राज प्रासाद में निवास कर रहा है। वह विदुषक से पद्मावती की शिरोवेदना का समाचार पाकर और साथ ही उससे यह जानकर कि उसकी शय्या तथा उपचारादि का प्रबंध समुद्र गृह मे किया गया है वहां पहुंचता है। समुद्र गृह में पद्मावती अभी नहीं पहुंची है। वह उसकी प्रतीक्षा में उसकी शय्या पर स्वयं लेट जाता है। लेटते ही उसे नींद आ जाती है विदुषक ठण्ड के बचाव के लिये चादर लेने चला जाता है। थोड़ी देर बाद आवन्तिका भी पद्मावती की सिरदर्द की खबर सुनकर वहां आती है। वह उसी शय्या पर चादर ओढ़े सोये उदयन को पद्मावती समझ कर लेट जाती है। इसी समय राजा स्वप्न में वासवदत्ता को देखता है तथा उसे प्रेम पूर्वक शब्दों से सम्बोधित करता है।

साथ लेटी हुई अवन्तिका (वासवदत्ता) स्वप्न में बोल रहे राजा की बातों का उत्सुकता पूर्वक उत्तर देने लग जाती है। परन्तु इस भ्रम में कि कहीं राजा जागकर उसे पहचान न लें वह वहाँ से चल पड़ती है। जाते वह पलंग से नीचे लटक रहे राजा के हाथ को पलंग पर टिका देती है।

इसी बीच अचानक राजा की नींद खुल जाती है। वह वासवदत्ता को पकड़ने का प्रयत्न करता है किन्तु दरवाजे से टकार कर वहीं रूक जाता है। विदुषक जब लौट कर आता है तो राजा सारी घटना सुनाकर कहता है कि वासवदत्ता जीवित है, परन्तु विदुषक उसकी बात को यह कहकर टाल देता है कि उसने वासवदत्ता को स्वप्न में देखा होगा अन्यथा वह तो बहुत पहले मर चुकी है।

इसी समय कञचुकी आकर सूचना देता है कि अमात्य रूमणवान ने मगध राज की सहायता से आरूणि पर आक्रमण करने की पूरी तैयारी कर ली है।

उदयन युद्ध के लिये तैयार होकर निकल पड़ता है।

"षष्ठ अंक का समालोचनत्मक सार"

युद्ध में आरूणि कों परास्त कर उदयन अपना खोया राज्य पुनः प्राप्त करता हैं अब वह पद्मावती के साथ अपनी राजधानी कोशाम्बी आ गया है। पद्मावती के साथ आवन्तिका भी आई है। एक दिन उदयन को घोषवती वीणा की जिसको वासवदत्ता अकसर बजाया करती थी मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है। अपने सेवक से उस वीणा को मंगाकर एवं उसे पहचान कर वह वासवदत्ता की समृति में विह्वल हो उठता है। इसी समय उज्जयिनी से प्रद्योका का कञचुकी और वासवदत्ता की धात्री हार पर उपस्थित होते हैं। वे दोनों प्रद्योत का सन्देश देते हुये उसके समक्ष उस चित्र को रखते हैं जिसे प्रधोत ने विवाह विधि के बिना ही उदयन और वासवदत्ता के उज्जयिनी से छिपकर निकल जाने पर उनके विवाह संस्कार की रीति सम्पन्न करने के लिये तैयार कराया था। उस चित्र में अंकित वासवदत्ता को देखकर पद्मावती उदयन को बताती है कि ठीक उसी आकृति की एक उसके पास रहती है। वह कहती है कि उसके अपने विवाह से पूर्व को सन्यासी उसे अपनी बहिन बताकर उसके पास कुछ समय के लिये धरोहर रूप में छोड़ गया था।

ठीक उसी समय यौगन्धरायण वहाँ उपस्थित होता है और अपनी बहिन वापिस माँगता है। अवन्तिका को वहाँ लाया जाता है। राजा उज्जयिनी से आर्य कञचुकी और धात्री को साक्षी रखकर उसे उसकी बहिन लौटा देने का आदेश देता है। धात्री देखते ही वासवदत्ता को पहचान जाती है। अब यौगन्धरायण भी अपने वास्तविकरूप और चेतना को प्रकट कर देता हैं।

उदयन अपनी प्रेयसी वासवदत्ता और मन्त्री यौगनधरायण को पुनः प्राप्त करके प्रसन्न हो जाते है और यह समाचार प्रद्योत को सुनाने के लिए वासवदत्ता और पद्मावती को साथ लेकर कञचुकी और घात्री सहित उज्जयिनी चलने का प्रस्ताव रखते हैं। तदनन्तर भरत वाक्य के अन्नतर नाटक सुखान्तरूप में समाप्त होता है।

11.4 सारांश

पद्मावती के साथ उदयन का दूसरा विवाह हो जाने के पश्चात् चतुर्थ, पञचम और षष्ठ अंकों की कथा वस्तु नाटक की सुखान्त परिणिति के लिये विविध घटना चक्रों के सुचारू संयोग के माध्यम से शनैः शनै आगे बढ़ती है। चतुर्थ अंक में विवाहोपरान्त उदयन राजकीय अतिथि के रूप में महाराज दर्शक के राज प्रसाद में निवास कर रहा है। माध्वी लतामण्डप मे एक बार राजा और विदुषक वासवदत्ता सम्बन्धी बातों में लगे है। उदयन विदुषक के आग्रह पर कह देते हैं कि यद्यपि पद्मावती रूप और गुण से सम्पन्न है किन्तु वासवदत्ता के प्रति आबद्ध मेरे हृदय को हर नहीं पाती। पद्मावती यद्यपि सारा वार्तालाप सुन लेती है। फिर भी चुप रहती है। पंञचम अंक में पद्मावती शिरोवेदना से पीड़ित दिखाई गई है। राजा समुद्र गृह में उसका हाल जानने के लिये पहुंचता है पर पद्मावती वहां पर अभी नही आई है। राजा उसकी प्रतीक्षा से उसकी शय्या पर स्वयं लेट जाता है और लेटते ही उसे नींद आ जाती है। विदुषक ठण्ड के भय राजा को चादर से ढांप देता है। इसी बीच वहां वासवदत्ता पहुंचती है और राजा को पद्मावती समझ कर उसी शय्या पर उसके साथ लेट जाती है शय्या स्वयं में वासवदत्ता से बातें करती है और वासवदत्ता

उत्सुकता पूर्वक उत्तर देने लगती है इस भय से वहीं राजा जागकर उसे पहचान न ले वह वहाँ से जाने लगती है जाते समय राजा के हाथ को पलंग पर टिका देती है। इसी बीच राजा की नींद खुल जाती है और वह उसे पकड़ने का प्रयास करता है किन्तु दरवाजे से टकराकर वहीं रूक जाता है।

इस स्वप्नदृश्य की सृष्टि भास ने बढ़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत की है। घटना और सम्वादों में मनोवैज्ञानिक स्पर्श है। इसी स्वप्न दृश्य के आधार पर नाटक का नामकरण स्वप्नवासवदत्तम्। रखा गया है षष्ठ अंक में आरूणि को युद्ध में परास्त कर उदयन अपना खोया राज्य पुनः प्राप्त करता है। और इसी अंक में अपनी योजना के फलीभूत हो जाने पर यौगन्धरायण और वासवदत्ता अपने वास्तविक वेष में प्रकट होते है। राजा अपनी प्रेयसी वासवदत्ता और मन्त्री यौगन्धरायण को पुनः प्राप्त आनन्द मग्न हो जाता है इस प्रकार नाटक की सुखान्त परिणति होती है।

11.5 बोध प्रश्नाः

1. चतुर्थ अंक की कथा वस्तु अथवा घटनाचक्र का नाटक में क्या महत्व हैं?
2. पच्चम अंक की कथावस्तु एवं घटना चक्र की विशेषता का प्रतिपादन कीजिए?
3. षष्ठ अंक के घटनाचक्र तथा कथावस्तु की समीक्षा करें।

11.6 बोध प्रश्नो के उत्तर :

1. चतुर्थ अंक में माधवी लतामण्डल के शिलातल पर बैठे विदुषक और राजा उदयन का वासवदत्ता विषयक वार्तालाप का संक्षिप्त वर्णन है। विदुषक के बार बार पूछने पर कि क्या आपको पहले ही वासवदत्ता या अब की पद्मावती इन दोनों में कौन अधिक प्रिय है तो राजा बार बार उसके प्रश्न को अटपटा जानकर चुप रहते है किंतु उसके बार बार आग्रह करने पर आखिर कह देते हैं कि यद्यपि पद्मावती रूप गुण से मुझे प्रिय है तथापि वासवदत्ता में आबद्ध मेरे मन को वह हर नहीं सकती। इस अंक की अवतारणा इसी तथ्य को दर्शाने के लिए की गई है कि राजा वासवदत्ता से कितना अधिक प्रेम करता है जिसकी भनक पदमावती हो भी चल जाती है।

राजा के मुंह से–

'वासवदत्तावध्दं तनु तानन्ये मनोहारति'

यह शब्द सुनकर भी वह राजा को दाक्षिण्य हीन नहीं कहती अपितु वह राजा का इसमें भी दाक्षिण्य देखती है कि राजा अभी तक भी वासवदत्ता के गुणों को याद करता है। वासवदत्ता विषयक राजा के प्रगाढ प्रेम को दर्शाना ही चतुर्थ अंक में माधवी लतामण्डप दृश्य का उद्देश्य है।

2. प5चम अंक की कथावस्तु एवं घटना चक्र समुद्र गृह में शय्या पर तो है राजा का वासवदत्ता विषयक स्वप्नदर्शन का वर्णन है जो बहुत ही मार्मिक तथा मनोवैज्ञानिक है। इस अंक का इसलिये ही नाटक में बहुत महत्व और वैशिष्टय है कि इसी स्वप्न दर्शन दृश्य के आधार पर ही नाटक का नामकरण 'स्वप्नवासवदत्ताम्' रखा गया है। यह दृश्य भास की मौलिक कल्पना और नाटय चातुरी की सफल एवं ज्वलंत प्रमाण है।

3. षष्ठ अंक में राजा उदयन में अपने विवाहोपरांत दर्शक की सैन्य सहायता से युद्ध मकं आरूणि को परास्त करके अपना खोया राज्य पुनः प्राप्त करते हैं। अब राजा पदमावती के साथ अपनी राजधानी कोशाम्बी में है। पद्मावती के साथ आवन्तिका के साथ वासवदत्ता भी आई है। अपनी योजना के फलीभूत हो जाने पर झनकर पाकर यौगन्धरायण

की ओर वासवदत्ता भी अपने वास्तविक वेष में राजा के सम्मुख प्रकट होते है। राजा अपनी प्रेयसी और मन्त्री यौगन्धरायण होने को पुनः पाकर अत्यंत हर्षित होते हैं और सभी कुछ समझाकर प्रद्योत को सुनाने उज्जयिनी जाने के लिये तैयारी करते हैं। भरत वाक्य के साथ नाटक सुखांत रूप से समाप्त होता है।

नाटक की सुखांत रूप में परिगति ही षष्ठ अंक की विशेषता है।

———

(क)"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के पात्रों का चरित्र–चित्रण।
(ख)"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक की नाटकीय विशेषतायें।

पाठ की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 विषय विवेचन

12.4 सारांश

12.5 बोध प्रश्नाः

12.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.1 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि नाटककार अपने नाटक को रूचिकर और गतिशील बनाने के लिये नाटक की कथा वस्तु अथवा घटना चक्र के अनुसार उसमें विभिन्न पात्रों की सृष्टि करता है। नाटकीय सम्पूर्ण कार्यकलाप का निर्वहन विभिन्न पात्रों द्वारा. ......ही होता है। संस्कृत नाटकों में प्रधानतया नायक, नायिका, विदुषक, कच्चुकी तथ अन्य परिचारिका तथा परिचारिक गुण सम्मिलित होते हैं। नाटक में स्त्री पात्र तथा पुरूष पात्र सभी अपने–अपने स्वभावानुसार और परिस्थिति के अनुसार यथायोग्य आचरण करते हैं।

पात्रों के स्वभाव एवं कार्यों को भली भाँति समझने के लिये, तथा उनके विशिष्ट गुणों के ज्ञान के लिये पात्रों का चरित्र चित्रण करने की परम्परा ही हैं। इस पाठ में आप 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रमुख पुरूष पात्रों एवं स्त्री पात्रों की स्वाभाविक विशेषताओं और उनके चारित्रिक गुणों को चरित्र चित्रण के माध्यम से भली भांति जान पायेंगे। इसके अतिरिक्त 'स्वप्न वासवदत्तम्' नाटक की नाटकीय विशेषताओं की सम्यक जनकारी भी प्राप्त करेंगे।

12.2 उद्देश्य

इस पाठ के सम्यक् अध्ययन के पश्चात् आप :–

1. "स्वप्नवासवदत्तम" नाटक के प्रमुख पात्रों के गुण एवं उनकी चारित्रिक विशेषताओं को चरित्र चित्रण के माध्यम से भली भांति जान पायेंगे।

2. स्वतन्त्र रूप से पात्रों का चरित्र चित्रण करने में सक्षम होंगे।

3. चरित्र चित्रण के अतिरिक्त 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की नाटकीय विशेषताओं से भी भली भांति परिचित हो सकेंगे।

12.3 विषय विवेचन (प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण)

1. उदयन

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के नायक उदयन का सम्बंध भरतवंशी राजाओं के उच्चकुल से है। वह वत्सराज का शासक है एवं उसकी राजधानी कौशाम्बी है। मगधराजा ने उसके कुल विद्या, बल और सौंदर्य को देखकर उससे अपनी अहिन के विवाह का प्रस्ताव रखा था।

कलाप्रेम :–

उदयन कला प्रेमी है। संगीत कला के प्रति उसका विशेष अनुराग है। वासवदत्ता का वह वीणा गुरू है। विवाह के उपरांत पद्मावती भी उससे वीणा वादन सीखने का प्रस्ताव रखती है। उसकी वीणा का नाम घोषावती है। घोषावती वीणा वासवदत्ता के प्रति उसके अनन्य प्रेम की प्रतीक और उसकी स्मृति का चिन्ह है।

अदर्श प्रेम :–

उदयन आर्दश प्रेमी की प्रतिमूर्ति है। वासवदता के प्रति उसका प्रेम अगाध एवं उदात्त है। पदमावती से विवाह हो जाने पर भी वासवदता के प्रति उसका प्रेम अक्षुण्ण बना रहता है।

वासवदता की स्मृति उसकी पवित्र निधि है। भला वासवदता को वह कैसे भूल सकता है, जो एक साथ उसकी शिष्या, पत्नी और प्रेयसी है।

दाक्षिण्य :–

वासवदत्ता के प्रेम में तल्लीन होकर भी वह पद्मावती के प्रति अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नही करता। यह उसके दाक्षिण्य का पुष्ट प्रमाण है। पद्मावती इस तथ्य का स्वयं उल्लेख करती हुई कहती है–"आर्या वासवदतत्ता के गुणों को प्रमाण करते हुये भी वे दाक्षिण्य वश मेरे सामने नहीं रोते।" इस उक्ति से उदयन के दाक्षिण्य का स्पष्ट संकेत मिलता है।

साहस और वीरता :–

उदयन के चरित्र के इस पक्ष की झलक उस समय मिलती है, जब वह आरूणि पर विजय प्राप्त करने के लिए समर प्रयास की तैयारी करते समय यह कहता है–

"उपेन्द्र नागेन्द्र तुरंग तमारूणिं दारूणकर्मदक्षः विकीर्ण वाणोग्रतरंगमंगेमहार्णवामे युधिना शयामि...."

किंतु नाटक में उसके चरित्र का वह पक्ष अधिक नहीं उभरा है।

गुणज्ञता :–

उदयन के चरित्र में गुणज्ञता और कृतज्ञता का महान गुण है। वह आरूिण पर अपनी विजय को महासेन और प्रद्योत के

स्नेह और आशीर्वाद का फल मानता है। दूसरे के गुणो की यथावसर प्रशंसा करने से वह नहीं चूकता।

विनम्रता :–

अपने बड़ों के प्रति विनम्रता का भाव भी उदयन के चरित्र की प्रमुख विशेषता है। यौगन्धरायण ने उदयन की इस विनम्रता को निम्नलिखित शब्दों में रेखांक्ति किया है–

"भरतानां कुले जातो विनीतो ज्ञानवान् शुचि।"

धीर ललित नायक :–

नाटय शास्त्रीय परिभाषा के अनुसार उदयन एक धीर ललित नायक है। उसका चरित्र आदर्श एवं उदात्त है। वह परकीया से छिप कर प्रेम करने वाला विलासी नायक हीं है। वह कोमल हृदय तथा कला प्रेमी है। उपर्युक्त विवेचन से उदयन के चरित्र के विभिन्न पक्षों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

2. वासवदत्ता

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की नायिका वासवदता उज्जयिनी के राजा महासेन प्रद्योत की पुत्री और उदयन की शिष्या, पत्नी और प्रेयसी है। अपने उच्चकुल के अनुरूप उसमें स्वाभिमान की भवना है। मगध के राज भवन में अवन्तिका के रूप में रहते हुये भी महारानी उसके महाकुलप्रसूत होने के बारे में आश्वस्त है।

आदर्श प्रेमः–

वासवदत्ता आदर्श प्रेम की प्रतमूर्ति है। उदयन के प्रति उसका प्रेम अगाध एवं अनन्य है। उसका उदात्त प्रेम अपने प्रिय के हित के लिये उसे अपूर्व त्याग की प्रेरणा देता है। परिणाम जानते हुये भी वह राजा के हित के लिये यौगन्धरायण की योजना में अपना सहयोगी देना स्वीकार करती है। यह प्रेम की वेदी पर एक नारी का अपूर्व आत्म बलिदान है। उसका आदर्श प्रेम विश्वास के ठोस धरातल पर टिका है।

निर्मल चरित्र :–

वह एक पवित्रता नारी है जो अज्ञात वास के दौरान अपने चरित्र की पूरी जागरूकता के साथ रक्षा करती है। वह प्रोषितभर्तृका के रूप में पर पुरूष को देखने तथा चर्चा सुनने से भी परिहार करती है।

सहिष्णुता और संयम :–

वासवदत्ता के चरित्र में आत्म त्याग के साथ–साथ सहिष्णुता और संयम का भी विलक्षण गुण विद्यमान है। वह अपने दुःखों को पूरी सहनशीलता से और अपने हृदय को पूर्ण संयम से संभालती है। वह एकांत में ही अपनी पीड़ा को सहलाती है।

हृदय की उदारताः–

वासवदत्ता एक उदार हृदया नारी है। पद्मावती को अपनी सौतन के रूप में जानती हुई भी वह उससे अमित स्नेह करती है।

वह सदा उसकी कुशलता और स्वास्थ्य की कामना करती है। कहीं भी वह पद्मावती के प्रति कटुता और ईर्ष्या का भाव प्रदर्शित नहीं करती।

कला निपुणताः–

वासवदत्ता कलाओं में निपुण है। वीणा वादन तथा माला गुम्फन में भी वह अति प्रवीण है। मनोविनोद करने में भी दक्ष है तथा अतीव प्रत्युत्पन्न मति युवती है। वासवदत्ता आदर्श प्रेम और त्याग की प्रति मूर्ति है। वह पति के अनन्य प्रेम की स्वामिनी है, अतएवं वह धन्य है। वासवदत्ता मे उत्तम नायिका के सभी गुण विद्यमान हैं।

3. पद्मावती

स्वप्नवासवदत्तम् नाटक की उपनायिका पद्मावती का सम्बन्ध मगध के राजकुल से है। वह मगध राज दर्शक की बहिन है। उसका चरित्र और व्यवहार पद–पद पर उसके उच्चकुल की सूचना देते हैं। अपने उच्चकुल के अनुरूप वह अप्रतिमक सौंदर्य से सम्पन्न है।

शीलः–

पद्मावती शील श्रेष्ठ स्वभाव और उदात चरित्र की प्रतिमूर्ति है। धर्मानुराग, धीरता चरित्र की दृढ़ता, गुणग्राहिता, उदारता, गुरूजनों के प्रति आदरमान उसके चरित्र के विशेष गुंण हैं। क्रोध अहंकार ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का उसके चरित्र में अभाव है। अपनी धर्मिक वृति के अनुरूप वह आश्रमवासियों को मुहमांगा दान देती है उदयन उसे धीर स्वभावा कहता है। उदयन को वासवदत्ता में अनुरक्त जानकर भी उसका मन ईर्ष्या नहीं करता।

पद्मावती के ह्रदय की उदारता नाटक में सर्वत्र अंकित है।

माधुर्यः–

पद्मावती माधुर्य की प्रतिमूर्ति है। मधुर वाणी और मधुर व्यवहार उसके चरित्र के स्वाभाविक गुण है। उसे माधुर्य का अनन्यतम रूप उसकी कोमल अनुराग भावना है जिसकी अभिव्यक्ति वह अभिजात्य–प्रेरित शालीनता के साथ करती है।

उदयन के प्रति उसके अनुराग का आधार उदयन का कोमल ह्रदय होता है। पद्मावती स्वयं कोमल ह्रदया है। अतः उसका कोमल ह्रदय वयक्ति पर अनुरक्त होना स्वाभाविक है। उदयन के प्रति अपने अनुराग को वह विवाह के अनन्तर भी प्रकारन्तर से अथवा संयत शब्दों में ही कहा करती है। पद्मावती की गुण ग्राहिता अपूर्व है। उदयन के मुंह से अपने बारे में "वासवदत्ता बद्धं नतुतावन्मे मनोहरति" यह बात सुनकर वह राजा को दाक्षिण्य हीन नहीं कहती प्रत्युत इस बात में वह राजा का दाक्षिण गुण देखती है कि वह अभी तक वासवदत्ता के गुणों को याद करता है। अपने प्रिय की पूर्व पत्नी वासवदत्ता के स्वजनों को वह अपना स्वजन मानती है। एवं उनके प्रति पूर्ण आदरभाव और स्नेह प्रकट करती है। कुल मिला कर पद्मावती सौंदर्य शील और माधुर्य भरित अनुराग की प्रतिमूर्ति है। नाटक में उसकी स्थिति इसलिये प्रतिनायिका की न होकर उपनायिका की है।

यौगन्धरायणः–

यौगन्धरायण नाटक के प्रधान पात्रों में से एक है। वह राजा का सचिव है। उदयन और वासवदत्ता के ललित कलाओं में अधिक व्यस्त रहने पर राज्य प्रबन्ध का सारा भार उसके कंधों पर है। वह राजा का विश्वास पात्र एवं निष्ठावान सेवक है। राजा के स्वराज्य लाभहेतु वह दुष्कर योजना बनाता है तथा इसमें वह अन्यमंत्रियों, वासवदत्ता तथा विदूषक का सहयोग प्राप्त करता

है।

स्वामिभक्तः—

उसकी स्वामी भक्ति अद्भूत है। वह स्वयं को स्वामी हित के लिये पूर्णतया समर्पित कर देता है। राजा एवं मंत्रियों का उस पर अटूट विश्वास है। वह प्रत्युत्पन्नमति, निपुण एवं दूरदर्शी है। राजा के स्वराज्य लाभ के उपाय के रूप में मगध राजा की बहिन पद्मावती से उसका विवाह सम्बन्ध स्थापित कराने की उसकी योजना राजनीति निपुणता और दूरदर्शिता का निदर्शन है। वासवदत्ता को उसकी सूझबूझ पर पूर्ण विश्वास होता है। वह जानती है यौगन्धरायण जो भी कार्य करेंगे भली—भांति सोच विचार कर ही करेंगे।

निरभिमान और विनय :—

यौगन्धरायण अभिमान से रहित है वह अपने सहयोगियों को अपने से अधिक श्रेय देने के लिये तत्पर है। योजना की सफलता के पीछे वह उदयन का भाग्य मानता है और स्वयं को स्वामी भाग्य का अनुयायी समझता है। उसके युगन्धर चरित्र को देखते हुये उसके यौगन्धरायण नाम का सर्वथा सार्थक कहा जा सकता है। वह एक विश्वासपात्र स्वामी भक्त, राजनीति निगुण, दूरदर्शी एवं प्रत्युत्पन्न मति तथा धर्मनिष्ठ मंत्री है।

5. वसन्तक (विदूषक)

वसन्तक (विदूषक) उदयन का नर्मसचिव है। वह अपनी हास्योत्पादक शारीरिक मुद्रा, वेषभूषा तथा चेष्टाओं से राजा का मनोरंजन करता है। विदूषक प्रायः प्रत्येक अवसर पर खाने पीने की बात करता है। राजा के विवाह के अवसर पर मगध के राजा प्रासाद में वह देवलोक सा आनन्द अनुभव करता है। पद्मावती के प्रति उसके विशेष आदर भाव का कारण यह है कि वह हरदम सिन्ध भोज्य पदार्थ लेकर उसे खोजती फिरती है। विदूषक निरक्षर और स्थूलबुद्धि का ब्राह्मण है। नगर और राजाओ के नामोंच्चार में भी वह भ्रम पैदा करता है। जैसे, नगर ब्रह्मदत्त और राजा काम्पिल्य आदि।

वसन्तक राजा का विश्वास पात्र कुशल मित्र एक सलाहकार भी है। राजा कोई भी बात उससे छिपाकर नहीं रखता। विदूषक को भी सदैव राजा का हित ही ध्यान में रहता है। कष्ट के समय राजा को धैर्य बांधने और उसका मनोविनोद करने के कार्य को वह पूरा तत्परता और कुशलता से निभाता है। अनपढ़ होने पर भी सुसंस्कृत एवं विनय सम्पन्न है। कुल मिलाकर वसन्तक राजा का नर्म सचिव होने के साथ साथ उसका मार्ग दर्शक तथा हितचिन्तक मित्र भी है।

(ख) "स्वप्नवासवदतम्" की नाटकीय विशेषताएँ

"स्वप्नवासवदत्ता" नाटक भास के सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इस संबंध में प्राचीन और आधुनिक आलोचकों में पूर्ण सहमति है। डॉ. जान्सन इसे संपूर्ण संस्कृत नाटक साहित्य में अनुपम रचना मानते हैं। प्रस्तुत नाटक की श्रेष्ठता का आधार इसकी काव्य सम्बन्धी तथा नाटकीय विशेषतायें हैं जो हमें वस्तुयोजना चरित्र चित्रण, संवाद रस भाषा शैली नाटय शिल्प रंगमंच आदि विविध क्षेत्रों में दीख पड़ती है।

नाटक के नामकरण का आधार कथा वस्तु का वह अंश है जिसे स्वप्न दृश्य के नाम से जाना जाता है।

कथावस्तु योजना

नाटक की कथावस्तु योजना की प्रमुख विशेषता घटनाओं की गतिशीलता है। घटनायें निर्वाधगति से नाटक के निर्वहण

तथा फलागमकी और बढ़ती है। नाटकीय वस्तु के विकास की पांच अवस्थाओं की दृष्टि से कथावस्तु की समीक्षा करते हुये कहा जा सकता है कि इसमें इनका सफल निर्देशन है। प्रथम अंक में पदमावती उदयन की पत्नी बनेगी ऐसी आशा से नाटक का शुभारंम है और 'यत्न' नामक दूसरी अवस्था यौगन्धराण द्वारा वासवदत्ता को पदमावती के पास धरोहर रखने में परिलक्षित होती है। द्वितीय अंक में पद्मावती का वाग्दान और तृतीय अंक में विवाह। फलागमन और नियताति में राज प्राप्ति और वासवदत्ता प्राप्ति में फलागम है। कार्यावस्थाओं को जोड़ने वाले तत्व पांच है और उन्हें संधि कहा जाता है। स्वप्नवासवदत्तम् की कथावस्तु में इनके योजना क्रम को भी लक्षित किया जा सकता है।

चरित्र चित्रण :–

चरित्र चित्रण के अपने विशेष कर्म के प्रति भास सर्वथा सजग है। पात्रों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से भास स्वप्न वासवदत्ततम् में विशेष सफल हुये हैं। पात्र उदात्त, संयत और गंभीर हैं। उनके चरित्र नाटकीय कार्य को आगे बढ़ाने में सहायक है।

सम्वादः–

सम्वाद नाटक का महत्वपूर्ण तत्व है। भास के सम्वाद स्वाभाविक ओजपूर्ण, असवर और पात्र विशेष के सर्वथा अनुकूल है। यह सम्वाद संक्षिप्त सारगर्भित तथा मुहावरेदार हैं। इनमें कृत्रिमता का पूर्ण अभाव है। भावों को तीव्रता प्रदान करने के लिये, प्रकृति चित्रण करने के लिये किसी चिरन्तन सत्य का उपस्थायन करने के लिये भास ने यथावसर पद्य का भी आश्रय लिया है।

रस परिपाकः–

भास की नाट्य कृतियों में प्रमुख वीर श्रृंगार, हास्य, करूण और अद्भूत रस है। स्वप्नवासवदत्तम् में श्रृंगार, करूण और हास्य रसों का सुंदर परिपाक हुआ है। वीर रस की एक हल्की झलक मात्र मिलती है। श्रृंगार रस की अभि व्यंजना उसके दोनों पक्षों संयोग और वियोग को लेकर हुई है। हास्य रस की अवतारणा नाटक में विदूषक के माध्यम से हुई है।

प्रकृति चित्रण :–

भाव विशेष के उद्दीपन के रूप में अथवा कहीं कहीं स्वतन्त्र रूप में भास ने प्रकृति के मनोरम चित्र प्रस्तुत नाटक में किये हैं। इनमें यथार्थ का रूप और रंग है। आकाश में पंक्तिबद्ध होकर उड़ रही सारस पंक्ति का धरातल से लिया गया चित्र अति मनोहारी है।

अलंकार योजना

अलंकार भास के नाटकों में भर स्वरूप नहीं है, उनका उसमें सजह सुखद विन्यास है। स्वभावोक्ति, उपमा, दृष्टान्त, काव्यलिंग, अर्थान्तरन्यास एवं अनुप्रास आदि की प्रिय अलंकार है।

छन्द योजना

भास के प्रस्तुत नाटक में सबसे अधिक अनुष्टुप छंद का प्रयोग किया है। अर्थ की सुबोधता तथा तीव्र गति की दृष्टि से यह छंद नाट्य कृति के लिये विशेष उपयुक्त है। भस के अन्य प्रियछंद हैं शार्दूल विक्रीडित्, और बसंत तिलका। भास द्वारा प्रयुक्त अन्य छंद हैं शालिनी, आर्या, शिखरिणी, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति इत्यादि।

नाटयशिल्प तथा मञ्चन योजना

नाटयशिल्प तथा मंचन की दृष्टि से भी प्रस्तुत नाटक पर्याप्त सफल है। नाट्य शिल्प की दृष्टि से इन नाटक के विशेष गुण है। घटनाओं की गतिशीलता संवादों की प्रवाहमयता, स्थान स्थान पर नाटकीय सोत्प्रास (Dramatie Iroary) का सुंदर प्रयोग। स्वप्नमिलन एवं प्रत्यभिज्ञान के दृश्य भी नाटकीय सोत्प्रास के सुंदर उदाहरण हैं। भास श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के प्रबल व्याख्याकार है।

इस प्रकार वस्तुयोजना चरित्र चित्रण, रस परिपाक, नाट्य शिल्प, मंचन योग्यता, तथा जीवन दर्शन की व्याख्या इन सभी दृष्टियों से प्रस्तुत नाटक न केवल भास के नाटकों में प्रत्सु समस्त संस्कृत नाटय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है।

12.4 सारांश

(क) 'स्वप्नवासवदत्ता' के प्रुख पात्र उदयन, यौगन्धरायण, वासवदत्ता तथा पदमावती और वसन्तकादि है। नाटक का नायक राजा उदयन धीर ललित नायक होने के कारण कला प्रेमी है। उसमें आदर्श प्रेम दाक्षिण्य, साहस और वीरता गुणज्ञता विनम्रता आदि गुण पाये जाते हैं।

इसी प्रकार नाटक की नायिका वासवदत्ता में भी आदर्श प्रेमिका के सभी गुण विद्यमान है। वह भावक ह्रदया सहिष्णुता और संयम की प्रतिमूर्ति है। कला नैपुण्य और ह्रदय का औदार्य उसमें विशेष रूप में पाया जाता है। यौगन्धरायण में भी मंत्री पद के अनुरूप साहस धैर्य और बुद्धिमता तथा दूरदर्शिता आदि गुण विद्यमान है। नाटक की उपनायिका पदमावती भी अपने रूप गुण शील माधुर्य आदि गुणों से युक्त है। राजा का मित्र वसन्तक (विदुषक) भी अपने विनोदी स्वभाव के कारण नाटक में यत्रतत्र हास्य के वातावरण की सृष्टि करता है। मुख्य रूप से इन सभी पात्रों की भूमिका समय और परिस्थितियों के अनुकूल रही है और यह सभी नाटकीय कथावस्तु में रोचकता और गतिशीलता लाने में सर्वथा सहायक सिद्ध हुये हैं।

(ख) 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की नाटकीय विशेषताओं का वर्णन करते हुये विद्वानों ने इस नाटक की मुक्तकण्ठ में प्रशंसा की है। वस्तुयोजना, चरित्र चित्रण, सम्वाद, रस परिपाक, प्रकृति चित्रण, अलंकारयोजना, छन्दयोजना, मंचन क्षमाता आदि दृष्टि से प्रस्तुत नाटक एक सफल नाटक है। नाट्य शिल्प की दृष्टि से इस नाटक के विशेष गुण है। घटनाओं की गतिशीलता सम्वादों की प्रवाहमयता तथा स्थान स्थान पर नाटकीय सोत्प्राय (Dramatie Iroary) का सुंदर प्रयोग हुआ है।

12.5 बोध प्रश्नाः

1. "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के कतिपय प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषतायें बताइये।
2. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक की प्रमुख नाटकीय विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

बोधप्रश्नो के उत्तरः

1. "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक के प्रमुख पात्र उदयन, वासवदत्ता, पदमावती तथा यौगन्धरायण आदि हैं। उदयन नाटक का नायक है। वह आदर्श प्रेम, कलाप्रेम, साहस वीरता दाक्षिण्य विनम्रता आदि विशेष चारित्रिक गुणों से सम्पन्न है। वासवदत्ता नाटक की नायिका है। वह आदर्श प्रेमिका भावुक ह्रदय नारी है। वह संयम और साहिष्णुता की प्रतिमूर्ति है। कला ने पुण्य और ह्रदय का औदार्य उसके चरित्र के विशेष गुण है। पदमावती नाटक की एक नायिका है। वह रूप, शील और माधुर्यादि गुणों से

संपन्न है। यौगंधरायण में अपने पद के अनुरूप धैर्य साहस वीरता दूरदर्शिता आदि सभी गुण विद्यमान है। नाटक में यह सभी पात्र अपनी अपनी चारित्रिक विशेषताओं द्वारा नाटक के घटना चक्र को रोचक एवं गतिशील बनाने में सहायक है।

2. वस्तुयोजना, चरित्र चित्रण, सम्वाद, रस परिपाक, प्रकृति वर्णन अलंकार योजा, छंदयोजना, मंचन क्षमता आदि की दृष्टि से स्वप्नवासवदत्तम् एक सफल नाटक है। नाटय शिल्प की दृष्टि से इस नाटक की प्रमुख नाटकीय विशेषतायें है नाटकीय सोत्प्रास (Dramatie Iroary) घटनाओं की गतिशीलता तथ सम्वादों की प्रवाह मयता, तथा मानव जीवन मूल्यों का संरक्षण इस नाटक के विशेष गुण हैं।

———————

B.A. II SEM. **PAPER SANSKRIT**

Unit — III (Part A) **Lesson No. 13**

(क) "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक की भाषा शैली एवं रस विवेचन

(ख) नाटककार भास का परिचय तथा उसकी नाट्य कला

पाठ की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 विषय विवेचन

13.4 सारांश

13.5 बोध प्रश्नाः

13.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.1 प्रस्तावना

1. अपनी रचना को रोचक तथा बोधगम्य बनाने के लिये रचनाकार विभिन्न शैलियों अथवा रीतियो का अनुसरण करते है। इन्हीं शैलियों से रचनाकार की विशेषता का पता चलता है।

नाटककार भास की शैली को हम शास्त्रीय भाषा में वैदर्भी रीति का नाम दे सकते हैं। इस शैली में माधुर्य व्यंजक वर्णों द्वारा रचना में लालित्य पैदा किया जाता है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में भास ने प्रसाद और माधुर्य गुणों की योजना करके पद लालित्य पैदा किया है। प्रसादिकता भास की शैली की प्रमुख विशेषता है। सुनते समय ही शब्द अपने अर्थ के आगे मानो आत्मसमर्पण कर देता है।

2. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक भास की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें कतिपय काव्य सम्बन्धी तथा नाटकीय विशेषतायें पाई जाती है। भास के स्थिति काल का प्रश्न भी कम विवादस्पद नहीं है। किंतु इतना ही निश्वित है कि वे कालिदास के पूर्ववर्ती एक प्रचीन नाटककार थे। प्रमाणों के आधार पर भास की स्थिति काल चौथी या पांचवी शताब्दी ई.पू. निश्चित होता है किसी सफल नाटय कृति के लिये निम्नलिखित 6 गुणों का होना आवश्यक है......... घटना के ऐक्य, घटना की सार्थकता, घटनाओं की घात प्रतिघात गति, चरित्र चित्रण, स्वभाविता। भास नाटकों में इन सभी गुणों का सन्निवेश मिलता है। भास निश्चित रूप से नाटय कला के श्रेष्ठ और सफल आचार्य हैं। संस्कृत साहित्य के अनेक परवर्ती साहित्यकार उनसे प्रभावित हैं।

13.2उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपः

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की भाषा शैली एव रस परिपाक से भली भाँति परिचित हो सकेंगे।
2. नाटककार भास का परिचय तथा उनकी नाट्य कला सम्बन्धी विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

13.3 विषय विवेचन

"स्वप्नवासवदत्तम्" नाटक की भाषा शैली और रस विवेचन

'स्वपनवासवदत्तम्' नाटक में भास की शैली विषय वस्तु के अनुरूप सरल तथा सरस है। प्रसाद और माधुर्य गुणों की योजना उसकी प्रमुख विशेषता है। लम्बे–लम्बे समासों का प्रायः उसमें अभाव है। पद योजना में कोमलता तथा पदलालित्य विद्यमान है। वर्ण योजना में माधुर्य का गुण है। कहीं कहीं अनुप्रास का सुन्दर स्पर्श भी है।

भास की शैली को शास्त्रीय भाषा में वैदर्भी रीति का नाम दिया जा सकता है। जिसकी परिभाषा विश्वनाथ के अनुसार इस प्रकार हैः

"माधुर्य व्यञजकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका।

अवृत्तिरल्प वृत्तिर्वा वैदर्भी रीति रि्ष्यते।।"

अभीष्ट प्रभाव की सृष्टि करने के लिए भास कभी कभी शब्द विशेष की आवृत्ति करते हैं।

प्रसादिकता भास की शैली की प्रमुख विशेषता है। श्रवण समकाल ही शब्द अपने अर्थ को मानों आत्म समर्पण कर देता है। भास की वाक्य याजना प्रायः स्पष्ट और उलझन रहित है। पद्यरचना में भी उनकी पदयोजना सीधी और सुबोध है। स्वभाविक पद विन्यास के साथ–साथ सौष्ठव और प्रवाह भी प्रचुर है। वाग्विस्तारन करके वह परिमित शब्द प्रयोग द्वारा भावों को मार्मिक व्यञजना कर देते हैं। भास की अलंकार योजना स्वाभाविक सौन्दर्य की वृद्धि करने में सर्वथा समर्थ है। वह वर्ण्य वस्तु के प्रभाव को तीव्र और गहरा करने मे समर्थ है।

स्वभावोक्ति, उपमा, दृष्टान्त, काव्य लिंग, अर्थात्तरन्यास एवं अनुप्रास भास के प्रिय अलंकार हैं। भास श्रृंगार, वीर, करूण तीनों, रसों की सृष्टि में सिद्ध हस्त हैं। गुण अलंकार और छन्द प्रयोग में वे हर प्रकार से कुशल है। भास एक अलौकिक जन प्रिय एवं मनोवैज्ञानिक नाटककार हैं। भास ने प्रस्तुत नाटक में अनुष्टुप छन्द का अधिक प्रयोग किया है। उनके अन्य प्रिय छन्द वसन्ततिलकावन तथा शार्दूल विक्रीडित हैं।

भाषा

भास की भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। समयानुकूल रसानुभूति युक्तपद्यों का समावेश भास ने अपने नाटकों में किया हैं। संस्कृत के अन्य नाटककारों की भान्ति भास ने अपने नाटकों में संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं का प्रयोग किया है।

उच्च एवं मध्यवर्ग के पात्र संस्कृत का और निम्न वर्ग के पात्र एवं स्त्रीपात्र प्राकृत का प्रयोग करते है। भास की संस्कृत भाषा में सामान्यतः पाणिनी के नियमों का अनुपालन हुआ है, परन्तु कहीं कहीं समास रचना में पाणिनीय नियमों का उलंघ्घन भी हुआ है।

भास ने इस नाटक में मुख्यतः शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग किया है। भास की भाषा सरल और बोधगम्य होते हुये प्रवाह का अनुसरण करती है। भास की कविता मनोवृति के आकर्षण द्वारा आनन्दित कर देती है। वह सह्रदयों के मन को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करती है।

रस विवेचनाः

दर्शक अथवा श्रोता के ह्रदय में रस की सृष्टि करना काव्य रचना तथा नाटक कृति का परम लक्ष्य है।

भास की नाट्य कृतियों में अभिव्यक्त रस मुख्यतः वीर, श्रृंगार, हास्य, करूण और अद्भुत हैं। स्वप्नवासवदतम् में श्रृंगार करूण, और हास्य रसों का सुन्दर परिपाक हुआ है। वीर रस की एक हल्की झलकमात्र प्रस्तुत नाटक से मिलती है। श्रृंगार रस की अभिव्यजना उसके दोनों पक्षों संयोग और विप्रलम्भ को लेकर हुई है। पहला पक्ष संयोग श्रृंगार उदयन और पद्मावती के मिलन के सन्दर्भ में आया है। किन्तु नाटक में इसका स्पष्ट संकेत मात्र है। स्वप्न दृश्य में उदयन और वासवदत्ता के मधुर मिलन का क्षणिक अंकन इस पक्ष की सुन्दर अभिव्यंजना करता है। विप्रलम्भ श्रृंगार की अभिव्यक्ति वासवदत्ता की विरहावस्था के वर्णन में हुई है।

वासवदत्ता विषयक उदयन के शोकविलाप में करूण रस की अभिव्यञजना है विप्रलम्भ श्रृंगार की नहीं क्योंकि उदयन की दृष्टि में वासवदत्ता मर चुकी है।

हास्य रस की अवतारणा नाटक में विदूषक के माध्यम से हुई है। विदूषक का हास्य शिष्ट संयत और हल्का विनोद लिये है। भास हास्य रस का कुशल स्रष्टा है। वीर रस की एक हल्की झलक आरूणि के विरूद्ध युद्ध प्रयाण के प्रसंग में देखी जा सकती है।

(ख) "नाटककार भास का परिचय तथा उसकी नाटयकला"

त्रावणकोर राज्य में भासकृत 13 नाटक खोज में मिले थे। इन सभी की शैली, भाषा, पद्य, वाक्य और श्लोकों के चरण समान थे। विद्वानों के बहुमत ने इन 13 नाटकों को भासकृत मान लिया गया है।

भास के उपलब्ध 13 नाटकों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता हैः–

1. उदयन कथा से सम्बन्धित

(क) प्रतिज्ञा यौग धरायण (ख) स्वप्नवासवदत्तम्

2. महाभारत पर आधारितः

(क) उरूभंगम् (ख) दूतवाक्यम् (ग) पंचरात्रम् (घ) बालचरितम् (ङ) दूतघटोत्कचम् (च) कर्णभार (छ) मध्यम व्यायोग

3. रामायण पर आधारितः

(क) प्रतिमा नाटकम् (ख) अभिषेक नाटकम्

4. **कल्पानामूलकः** (क) अविमारक, (ख) चारूदत्त

भास का स्थिति कालः

भास का स्थिति काल भी कम विवादास्पद नहीं इतना तो निश्चित है कि वे कालिदास के पूर्ववर्ती एक पाचीन नाटककार थे। भास के नाटकों का सामाजिक चित्रण छठी से चौथी शताब्दी ई.पू. के भारत की और संकेत करता है। अन्तःसाहय एवं बाहयसाक्ष्य प्रमाणों के आधार पर भास का स्थितिकाल चौथी या पांचवी शताब्दी ई0पू0 निश्चित होता है।

भास की नाट्यकला

भास के नाटक नाट्य शास्त्र के नियमों के सर्वथा अनुरूप होकर भी श्रेष्ठ और रोचक सिद्ध हुये हैं। इससे उनकी मौलिकता तथा नाट्यकला कस विस्तृत परिचय मिलता है। जो नाटक महाभारत के कथानक के आधार पर रचे गये हैं। भास ने उन्हें अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति से रोचक बना दिया है।

भास के प्रायः सभी नाटक अभिनय एवं रंगमंच की दृष्टि में उपयुक्त है।

सर्वप्रथम एकांकी नाटक रचना का श्रेय भी भास को जाता है। किसी सफल नाट्यकृति के लिये निम्न 6 गुणों का होना आवश्यक हैः

1. घटना ऐक्य , 2. घटना सार्थकता, 3. घटना घात प्रतिघात 4. कवित्व, 5. चरित्र–चित्रण, 6. स्वाभाक्तिा।

भास के नाटकों में उपर्युक्त सभी गुणों का सन्निवेश पाया जाता है। उनके नाटकों के कथानक घटना प्रधान तथा अनार्द्दनद से युक्त हैं। क्रिया शीलता के साथ साथ उसमें रस की पुष्टि भी समुचित मात्रा में होती है। अपने नाट्य नैपुण्य अथवा वर्णन चातुर्य से भास अनुपस्थित पात्रों या परोक्ष घटनाओं को रंगमंच पर उतारे बिना ही प्रेक्षकों के मन में उनका ऐसा आभास करा देते हैं मानो उनका प्रत्यक्षचित्रण हो रहा हो। भास के नाटकों मे नाटकीय अप्रत्याशित घटनाओं की मनोहारी श्रृंखला दिखाई पड़ती है।

भास ने पौराणिक पात्रों का मार्मिकता से चित्रण करके उन्हें प्रभावों त्पादक बना दिया है। भास की सम्वाद योजना प्रभावी एवं चुसत है। किसी पद्य को पादों या उपपादों में बांटकर भास उन्हें विविध पात्रों के मुंह से प्रभावशाली ढंग से कहलवाते हैं। उनके नाटकों में परिष्कृत हास्य का पुट पाया जाता है। भास संस्कृत के प्रथम नाटककार होने के नाते तथा अपने विशाल नाट्य साहित्य के कारण सर्वथा श्लाघ्य हैं। वे निश्चित रूप से नाट्य कला के श्रेष्ठ और सफल आचार्य हैं।

संस्कृत साहित्य के अनेक परवर्ती साहित्यकारउनसे प्रभावित हैं।

13.4 सारांश –

(क) संस्कृत के काव्य नाटककारों की भान्ति भास ने अपने नाटकों में संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं का प्रयोग किया है। स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में भास ने शौरसेनी प्राकृत का प्रयोग किया है। भास की भाषा सरल तथा वोधक गद्य होते हुये प्रवाह का अनुसरण करती है। प्रसादिकता भास की शैली की प्रमुख विशेषता है। भास की शैली को शास्त्रीय गाथा में वैदर्भी रीति का नाम दिया जा सकता है। प्रसाद और माधुर्य की योजना करके भास ने नाटक में पद लालित्य पैदा किया है।

(ख) भास संस्कृत के प्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। इनके नाटक नाट्यशास्त्र के नियमों के सर्वथा अनुपम होकर भी श्रेष्ठ सिद्ध हुये हैं। घटना ऐक्य, घटना सार्थकता, घटना घात प्रतिघात कवित्व, चरित्रचित्रण, स्वाभाविक्ता सफल नाट्य कृति के विशेष गुण है, और यह सभी गुण भास के नाटकों में विद्यमान है। भास निश्चित रूप में नाट्यकला के श्रेष्ठ आचार्य है। संस्कृत साहित्य के अनेक साहित्यकार उनसे प्रभावित हैं।

13.5 बोध प्रश्ना :

1. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का रस विवेचन कीजिए।

2. भास की नट्यकला का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

13.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भास की नाट्यकृतियों में अभिव्यक्त रस प्रमुखतः वीर, श्रृंगार, हास्य, करूण और अद्भुत हैं।

'स्वप्नवासवदत्तम्' में श्रृंगार करूण और हास्य रसों का सुन्दर परिपाक हुआ है। वीर रस की हल्की झलक मात्र प्रस्तुत नाटक में मिलती है। श्रृंगार रस अपने दोनों पक्षों सम्भोग और विप्रलम्भ में विशेषतः प्रयुक्त है। विप्रलम्भ श्रृंगार की अभिव्यक्ति वासवदत्ता की विरहावस्था वर्णन में हुई है। सम्भोग श्रृंगार में उदयन और पद्मावती के मिलन के सन्दर्भ मे प्रयुक्त है तथा स्वपन दृश्य में उदयन और वासवदत्ता के मधुर मिलन का क्षणिक अंकन इसपक्ष की सुन्दर अभिव्यंजना करता है। हास्य रस की अवतारणा नाटक में विदूषक के माध्यम से हुई है। वीर रस की हल्की सी झलक आरूणि के विरूद्ध युद्ध प्रयास प्रसंग में देखी जा सकती है।

2. भास अपनी नाट्यकला कौशल के लिये विशेष चर्चित हैं। किसी भी सफल नाट्यकृति के लिये निम्नलिखित 6 गुणों का होना परमावश्यक है। यह छः गुण हैं – घटना ऐक्य, घटना सार्थकता, घटनाओं की घातप्रतिघात गति, कवित्व, चरित्रचित्रण, स्वाभाविकता। यह सभी गुण भास की नाट्यकृतियों में मिलते हैं। उनके नाटकों के कथानक घटना प्रधान तथा अन्तर्हन्द से युक्त हैं। अपने नाट्य से युक्त हास भास अनुपस्थिति पात्रों या परोक्ष घटनाओं को रंग–मंच पर उतारे बिना ही प्रेक्षकों के मन में उनका ऐसा आभास करा देते हैं। मानों उनका प्रत्यक्ष चित्रण हो रहा है। इनके नाटकों की सम्वाद योजना चुस्त तथा प्रभावोत्पादक हैं। संस्कृत के प्रथम नाटककार होने के नाते तथा अपने विशाल नाट्य साहित्य के कारण भास सर्वथा श्लाघ्य और चिर स्मरणीय रहेंगे।

स्वप्नवासवदत्तम् के पात्रों – उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती, यौगधरायण, एवं विदूषक–पर 20–20 वाक्य संस्कृत भाषा में

पाठ की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 विषय विवेचन

14.4 बोध प्रश्नाः

14.5 बोध प्रश्नों पर निर्देश

14.1 प्रस्तावना

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रधान पात्रों में उदयन वासवदत्ता पद्मावती, यौगन्धरायण तथा विदूषकादि पात्र प्रमुख हैं।

वास्तव में यही प्रमुख पात्र अपने विभिन्न कार्य कलापों तथा विशेष भूमिका द्वारा नाटक की कथावस्तु को गतिशील तथा रोचक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पात्रों के स्वभाव उनकी विभिन्न गतिविधियां जिनसे नाटकीय घटनाचक्र गतिशील बनाता हैं। इन सबी जानकारी एक प्रबृद्ध पाठक के लिये अपेक्षित है। पात्रों की भूमिका को जानकर हीहम नाटक के विषय में अपने विचारप्रकट करने में सक्षम हो सकते हैं। अतः पात्र परिचय के द्वारा ही हमे नाटक का सर्वाङगीन परिचय प्राप्त हो सकता है। पात्र परिचय एवं चरित्रचित्रण नाटक का प्रमुख आलोचना विषय रहता है।

14.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरान्त आपः

1) स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रमुख पात्रों उदयन वासवदत्ता, पद्मावती, यौगधारायण और विदूषक आदि के विषय में चारित्रिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

2) प्रस्तुत पात्रों के विषय में लघु संस्कृत वाक्य लिखना सीख पायेंगे।

3) नाटक में उनकी विषय भूमिका से भी परिचित हो सकेंगे।

14.3 विषय विवेचन

1. उदयन

1. उदयन 'स्वप्नवासवदत्तम' नाटकस्य नायकः वर्तते।
2. सः भरतवंशीयानां राज्ञां कुले समुत्पन्नः अस्ति।
3. सः नाट्यशस्त्रीय रीत्या धीरललितः नायकः अस्ति।
4. सः वीणा वाद ने प्रवीणोंऽस्ति।
5. सः वासवदत्तायाः वीणा शिक्षकः अस्ति।
6. वासवदत्ता त अतिव स्निह्यति।
7. उदयनः वासवदत्ता विरहे तस्याः गुणान् भृशं स्मरति।
8. तस्य राजधानी कौशाम्बी वर्तते।
9. सःकुलवृद्धाना ज्येष्ठा नाञच समादरं करोति।
10. सःअन्य पुरूषा नाञच गुणान् यथावसर प्रशंसति।
11. पद्मावती तस्य द्वितीय भार्या अस्ति।
12. पद्मावती प्रति सःस्नेहेन दाक्षिण्येन च व्यवहरति।
13. सःवत्स राज्यस्य शासकः अस्ति।
14. तं रूप गुणोपेतं समीक्ष्य नृपः दर्शकः तेन सह स्व भगिन्याः पद्मावत्याः विवाहं प्रसतौति।
15. उदयनः इतिहास चर्चितः नृपः अस्ति।
16. पद्मावत्याः सह विवाहोपरान्त सःदर्शक राज प्रासादे चिरकालपर्यन्त निवासं करोति।
17. सः मगधराज्ञः दर्शकस्य सैन्य साहाय्येन आरूणि नामकं निजरिपु पराजयति।
18. सः वासवदत्तायाः सह प्रणय विवाहं करोति।
19. एतदर्थ सः वारूदत्तायाः सह अवन्तिराज्यात् छद्म रूपेण पलायनं अपि करोति।
20. सः वीणा वादने संगीत कलायां च अतीव प्रवीणः वर्तते।

2. वासवदत्ता

1) वासवदत्ता "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटकस्य – नायिका वर्तते।

2) सा उज्जयिनी राज्यस्य राज्ञः प्रद्योतस्य पुत्री वर्तते।

3) सा उदय नस्य शिष्या, भार्या प्रेमिका च अस्ति।

4) तस्यां उच्च कुलानुरूपा स्वाभिमान भावना वर्तते।

5) दर्शकमहिषी तां महाकुल प्रसूतां निश्चित्य भृशं आश्वतता वर्तते।

6) सा अत्यद्भुत रूपयौवन सम्पन्ना वर्तते।

7) वासवदता आदर्श अनुरागस्य प्रति मूर्ति अस्ति।

8) वासवदता प्रगाढ स्नेहवशात् उदयनेन सह अवन्ति राज्यात् पलायनं करोति।

9) यौगन्धरायणस्य योजना सम्पादने सा स्वीयं पूर्ण साहाय्य ददाति।

10) इदं स्नेह वेदिकायां नार्याः अपूर्व बलिदानं अस्ति।

11) तस्याः स्नेहं विश्वासस्य दृढ़ धरातले संस्थितं वर्तते।

12) वासवदत्ता प्रोषित भर्तृकरूपेण परपुरूष दर्शन स्पर्शन ञच सयत्नेन परिहरति।

13) वासवदत्ता सुकोमला भावुक हृदया नारी वर्तते।

14) उदयनस्य प्रणयवशात् सा सदाचारस्यापि अतिक्रमणं करोति।

15) वासवदत्तायां सहिष्णुता आत्मसंयमादि अनेके गुणाः विद्यन्ते।

16) वासवदत्ता उदारहृदया नारी अस्ति।

17) पद्मावतीं स्वीय सपत्नीं अवग त्यापि सा तां स्निह्यति।

18) माला गुम्फन कर्मणि अपि वासवदत्ता अतीव निपुणा अस्ति।

19) संगीत कलायां मपि सा अतीव प्रवीणा अस्ति।

20) अन्ते च अहं इदं लिखितु इच्छामि दत् वासवदत्तायां उत्तम नायिकायाः सर्वेगुणाः विद्यन्ते।

3. पद्मावती

1. पद्मावती 'स्वप्नसवदत्तम्' नाटकस्य उपनायिका वर्तते।
2. सा मगधराज्ञः दर्शकस्य भगिनी वर्तते।
3. तस्या चरित्रं उच्चकुलानु रूपं अस्ति।
4. सा रूपयौवनो वेता नारी अस्ति।
5. विदूषकः तस्याः तारूण्यं उनमुक्त भावेन प्रशंसति।

6. धर्मानुरागः औदार्य, गुरू जनानां प्रति आदर भावश्च तस्याश्चरित्रस्य विशिष्ट गुणाः वर्तत्ते।

7. उदयनः तां धीरस्वभावोपेतां मन्यते।

8. वासवदतां प्रति उदयनस्यानुराग चर्चां–श्रुत्वापि सा तां प्रति ईर्ष्या न करोति।

9. पद्मावती माधुर्यस्य साक्षात् प्रतिमूर्ति अस्ति।

10. माधुर्य तस्याश्चरित्रस्य प्रधान गुणं अस्ति।

11. क्रोध, मात्सर्य, ईर्ष्यादि दुर्गुणानां तस्याः चरित्रे नितरां अभावोऽस्ति।

12. पद्मावती अतीव धर्म परायणा नारी वर्तते।

13. आश्रमे सा युनिजनान् स्वस्व मनोभिषितं वस्तुजातं ददाति।

14. पद्मावती वासवदत्ता बान्धवान् प्रति विजबान्धव सदृशं व्यवहरति।

15. वासवदत्तनुरूक्त नृपं उदयनं ज्ञात्वापि सा तं अदाक्षिण्य न भणति।

16. पद्मावती अप्रतिमरूप सौन्दर्य सम्पन्ना नारी वर्तते।

17. यौग धरायणोऽपि तां "दृष्टधर्मप्रचारा"।

इति मत्वा निज भगिनी वासवदत्तां तस्याः पार्श्वे न्यास रूपेण त्यजति।

18. पद्मावती धीर स्वभाव उप नायिका वर्तते।

19. सा न्यास रूपेण रक्षितायाः वास्रवदत्तायाः चरित्राय सयत्नेन रक्षां करोति।

20. पद्मावत्याश चरित्रे उपनायिकायाः सर्वे गुणाः विद्यन्ते।

4. यौगन्धरायणः

1. यौगन्धरायणः "स्वप्नवासवदत्तम्" नाटकस्य प्रधान पात्रेषु एकतमः अस्ति।

2. सः उदयनस्य सचिवः अस्ति।

3. असौ वासवदत्ता सक्तस्य उदयनस्य राज्यभारं पूर्ण सामथर्येन वहति।

4. यौगन्धरायणः उदयनस्य निष्टावान सेवकः अस्ति।

5. राज्ञः राज्य लाभार्थ असौ दुः सम्पाद्यां योनां रचयति।

6. अस्यां योजनायां असौ वासवदत्ता विदूषक अन्य मन्त्रिणाञच सहयोगं प्रापोन्ति।

7. यौगन्धरायणः स्य सवामीभक्ति अत्यद्भुता वर्तते।

8. यौगन्धरायणः स्वीयं जीवनं स्वामीहिताय समर्पयति।

9. यौगन्धरायणः निरभिमानः विनय सम्पन्न श्रचस्ति।

10. यौगन्धरायणः स्वात्मानं स्वमी भाग्यानुगामिनं मन्यते।

11. युगंधर चारित्र्येनासौयौगंधरायणोच्यते।

12. यौगन्धरायणः राज नीतिकलायां अति चतुरः अस्ति।

13. यौगन्धरायणः प्रत्युत्पचमति धर्म निठश्च वर्तते।

14. राज्ञः मन्त्रिणाच्च तस्मिन पूर्ण विश्वासः अस्ति।

15. राज्यलाभ हेतु राज्ञः पदमावत्याः सह विवाहयोजनां तस्य बुद्धिकौशलं प्रदर्शयति।

16. निज बुद्धि चातुर्पेण सः दुष्कर योजनायां अपि साफलयं प्राप्नोति।

17. वासवदत्त तस्य बुद्धि कौशलोऽपरि पूर्ण आश्वस्ता वर्तते।

18. यौगन्धरायणः अविचार्य कार्य नकरोति।

19. योजनाः साफन्येऽपि सः राज्ञः प्रतिक्रिया विषये सशंकितः अस्ति।

20. अनेन तस्य निवयं सौजन्यत्र्य परिलक्ष्यते।

योजनायाः साफन्येऽपि असौ उदयनस्य भाग्यमेव मुख्य कारणं मन्यते नतु स्वीयं परिश्रम्।

5. विदूषकः/वसन्तकः

1. वसन्तकः (विदूषकः) वत्साराज उदयनस्य नर्म सचिवः।

2. विदूषकः विकृताग्ङ बचो वेशैः राज्ञः मनोविनोदं करोति।

3. तस्य मनोरंजन रीति विचित्रावर्तते।

4. विदूषक असमपे केनापि असंगत प्रश्नेन नृप सकटे पातयति।

5. यावत्पर्यन्त विदूषकः निजं प्रश्नस्य उत्तरं न लभते तावत्पर्यन्त तूष्णी न भवति।

6. नृपः तस्य वाचा चापल्येन पूर्णः परिचितः अस्ति।

7. विदूषक प्रायेण भोजनादि खाद्य पदार्थानां विषये एवं चित्तनं करोति।

8. दर्शक राज्ञः राजप्रासादे स्थितः असौ स्वागौंपमं आनन्द मनु भवित।

9. पदमावती प्रति विदूषकः विशेषादरः प्रदर्शयति, यतोहि पदमावती स्निग्ध भोज्य पदार्थान् आदाय प्रतिक्षणं तं अन्वेषयति।

10. विदूषकः स्वभावतः भीरू प्रकृतिः वर्तते।

11. विदूषकः तोरणद्वारतः भूमौ पतितां दीर्घा मालां सर्पमत्वा भयेन चीत्कारं करोति।

12. विदूषकः निरक्षरः स्यूलमतिब्राह्मणः अस्ति।

13. राज्ञां तथा च नगरादीनां प्रसंगेषु असौ भ्रमं जनयति यथा नगरं ब्रह्मदत्तं राजा काम्पिल्यमिति।

14. यदा कदा असौ निज बुद्धि कौशल प्रदर्शयति।

15. उत्तरदायित्व पूर्णेषु विदूषकः निज बुद्धि कौशलं प्रदर्शयति।

16. तस्य बुद्धि कौशल वीक्ष्य एवं यौगन्धरायणः तं निज योजनायां योजयति।

17. योजनायाः रहस्योद्‌घाटने विदूषकः पूर्णजया जागरूकः वर्तते।

18. विदूषकः उदयतस्य विश्वास पात्रः परामर्श दायकः वयस्यः वर्तते।

19. विदूषकः राज्ञः उद्यान भ्रमणादि अक्सरेषु सदा राज्ञः सह भवति।

20. यौगन्धरायणः वत् विदूषकोऽपि सर्वदा राज्ञः हितमेच चिंत्तयति, साधयति च।

14.4 बोध प्रश्ना :

1. नाटक के प्रधान पात्र एवं नायक उदयन पर संस्कृत में 10 वाक्य लिखें।

2. वासवदत्ता के चरित्र के विषय में संस्कृत में 10 वाक्य लिखें।

3. नाटक की उपनायिका पद्‌मावती के विषय में संस्कृत में 10 वाक्य लिखें।

4. अमात्य यौगन्धरायणः पर संस्कृत में 10 वाक्य लिखें।

5. 20 संस्कृत वाक्यों द्वारा विदूषक के चरित्र पर प्रकाश डालें।

14.5 बोधप्रश्नोतर निर्देश :

उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तरी प्रस्तुत पाठ के संस्कृत वाक्यों को पढ़कर भली भान्ति दे पायेंगे। इतना ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि आपके संस्कृत वाक्य अधिक लम्बे न हो तथा व्याकरण तथा भाषा की दृष्टि से अशुद्ध न हों। एतदर्थ अपने संस्कृत शब्द भण्डार में वृद्धि करें विभक्ति और धातु का समुचित प्रयोग करें।

***Writer* : Dr. Ram Bahadur**
Deptt. of Sanskrit
Jammu University, Jammu

1 (क) संस्कृत नाटक की उत्पति और विकास के विषय में विभिन्न मत !

15.0 पाठ शीर्षक

15.1 उद्देश्य

1. विद्यार्थियो को नाटकों की उत्पत्ति से सम्बंधित वास्तविक तथ्यों से परिचित कराना !
2. नाटकों की उत्पति से संबंधित वैदिक आख्यानों को उनकी स्मृति में संजोना !
3. नाटकों के विकास की विविध स्थितियों से विद्यार्थियों का सम्पर्क करवाना !
4. नाटकों के क्रमिक विकास से परिचित कराना !

15.2 पाठ परिचय

नाटक की उत्पत्ति के दो मत

15.2.0 (क) भारतीय विद्वानों के मत

15.2.1 (ख) पाश्चात्य विद्वानों के मत

15.2.2 नाटकों का विकास

15.3 परीक्षार्थ प्रश्नों के नमूने

15.4 उपयोगी पुस्तके

1. (क) "संस्कृत नाटक की उत्पति और विकास के विषय में विभिन्न मत"–

15.0 दृश्य काव्य के अंतर्गत परिगणित नाटक का, संस्कृत साहित्य में अप्रतिम स्थान है। दृश्य एवं श्रव्य दोनों रूपों में आनंद प्रदान करने के कारण साधारण व्यक्तियों के लिए भी काव्य की अपेक्षा नाटक का आकर्षण विशेष प्रभावशाली होता है, शायद इसीलिए "काव्येषु नाटकं रम्यम्" कहा जाता है, साथ ही नाटक में रसानुभूति के साथ साथ, विभिन्न प्रकार के अभिनय, हृदय गहिता युक्त भाव, मनोरंजन, आकर्षता और विषय की विविधता अधिक होती है, इसीलिए नाटक

कवितव की चरम सीमा माना जाता है, "नाटकांत कवित्वम्" से हम इस तथ्य की पुष्टि कर सकते हैं। महाकवि कालिदास का मानना है कि नाटक में तीनों गुणों से उत्पन्न नाना रसात्मक लोक चरित का दर्शन होता है, और जगत के प्राणी भी भिन्न रूचि वाले होते हैं, इस रूप में नाटक लोक जीवन में व्यवहारित मनुष्यों के लिए आनन्द के श्रेष्ठ साधन हैं। यथा–

देवानामिदमामननिन्त मनुष्यः शान्तं क्रतुं चाक्षुषं

रूद्रेणेदमुमाकृतव्यतिकरे स्वाग्ङे विभक्तं द्विधा।

त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते

नाटयं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाऽप्येकं समाराधनम्।।

15.2 भारतीय नाटकों की प्रशंसा केवल भारतीयों ने ही नहीं की, अपितु विदेशी साहित्यिक सहृदयों ने भी मुक्तकण्ठ से की है, इसी संदर्भ में संस्कृत नाटको की उत्पति और विकास सम्बंधी विवरण आलोचकों की आलोचना का विषय बना रहा, भारतीय विद्वानों ने जहां इसकी उत्पति का केन्द्र भारतवर्ष को माना, वहीं पाश्चात्यो का विदेशियों ने अपने अपने देश में। अध्ययनोपरांत हम संस्कृत नाटक की उत्पति से संबंधित विभिन्न मतों को समेट कर प्रमुख रूप से दो मतों के अंतर्गत रख सकते हैं–

(1) भारतीय विद्वानों के मत

(2) पाश्चात्य विद्वानों के मत

15.2.0 (1) भारतीय विद्वानों के मत

(अ) संवाद सूक्त से नाटक की उत्पत्ति– भारतीय विद्वान प्रमुख रूप से इस मत का प्रतिपदान करते हैं। उनका मत है कि नाटक के मूल वेद हैं। ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर ऐसे संवाद है– जिनमें कई कई वक्ता है। ऐसे संवाद सूक्तो से नाटकों की उत्पति मानना सर्वथा बुद्धिगम्य है यथा–यम यमी संवाद सूक्त, पुरूरवा उर्वशी संवाद सूक्त, सरमा पणि संवाद सूक्त, इन्द्र सूक्त मरूत संवाद, विश्वामित्र नदी संवाद सूक्त, इन्द्र इन्द्राणी वृषाकपि संवाद सूक्त, अगस्त्य लोपामुद्र संवाद सूक्त आदि। इन सूक्तों में नाटकोपयोगी संवाद तत्व सुन्दरतम रूप में प्राप्त मिलते हैं। कालिदास रचित "विक्रमोर्वशीय" नाटक का मूख स्रोत ऋग्वेद में ही प्राप्त पुरूरवा उर्वशी संवाद सूक्त माना जाता है।

इस मत का समर्थन जर्मन विद्वान डॉ. श्रोदर ने भी किया है। उनके अनुसार संवाद सूक्त स्वयं में धार्मिक नाटक है तथा यज्ञादि धार्मिक अवसरों पर इनका अभिनय वाद्यों एवं अभिनय के साथ किया जाता था। श्रोदर का कथन है कि आजकल बंगाल में प्रचलित–धार्मिक यात्राएं इन्हीं की विकसित अवस्था है। प्रो0 विण्डिश, डॉ0 ओल्डेनबर्ग और डॉ0 पिशेल आदि भी इन संवाद सूक्तों को पूर्णतया नाटकीय स्वीकार करते है, साथ ही चम्पू काव्य को इन्हीं संवाद सूक्तों के आधार पर सृजित मानते हैं।

(ब) भरत मत या दैवी उत्पत्ति सिद्धांत– परम्परा से भारत वर्ष में कतिपय कथायें नाटकोत्पति के विषय में प्रचलित हैं। इन कथाओं में प्राचीनतम कथा भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में वर्णित मिलती है। उसके अनुसार एक बार देवगण ब्रह्मा के समीप गये और प्रार्थना की कि वे ऐसे वेद का निर्माण करें, जिसके द्वारा वेद श्रवण के

अनधिकारी शूद्र एवं स्त्रीजन भी अपना मनोरंजन करी सकें। ब्रह्मा जी राजी हो गये। उन्होंने ऋग्वेद से पाठ्य, समावेद से गान, यजुवेद से अभिनय, तथा अथर्ववेद से रस के तत्वों को लिया और "नाट्यवेद" नामक् प࢖चमवेद की रचना कर दी। यथा–

"जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् समाम्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

शायद इसीलिए नाटक को "चतुर्वेदाङ्गसंभवम्" भी कहा जाता है। इसके अन्तर विश्व कर्मा ने रंगम࢖च, पार्वती जी ने लास्य तथा शंकर ने ताण्डव नृत्य किया। भगवान विष्णु ने चारों शैलियो का निरूपण किया तथा भरत ने अपने सौ पुत्रों के साथ इसका अभिनय किया।

15.2.1(2) पाश्चात्य विद्वानों के मत– पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय विद्वानों द्वारा दिये गये तर्कों को न मानकर अपने कल्पित तथ्यों के आधार पर नाटक की उत्पति दर्शाने का प्रयत्न किया है, वे नाटक की उत्पत्ति के निम्नलिखित कारण देते हैं–

(अ) वीर पूजा सिद्धांत–पाश्चात्य विद्वान् डॉ. रिजवे ने अपनी पुस्तक "क्तंउं ंदक क्तंउंजपब क्ंदबमे व िछवद. म्नतवचमद त्रंबमे" में लिखा है कि नाटको की उत्पत्ति दिवंगत पुरूषों के प्रति आदरभाव दिखाने के लिए हुई है। राम लीला एवं कृष्ण लीला से इस सिद्धांत की पुष्टि होती है। उनका तर्क है कि वर्ममान पीढ़िया अपने पूर्वजों के सुकृत्यों का समय समय पर अभिनय करके उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करती है। उनके कार्यों का प्रदर्शन उनकी स्मृति तथा श्रेष्ठ शिक्षा को ग्रहण करने के लिए किया जाता है। भारत एवं ग्रीस में पूर्वजों के प्रति पूजा को प्रदर्शित करने का प्रायः एक ही तरीका है, इसी से नाटक की उत्पत्ति हुई, परंतु डॉ. रिजवे के इस सिद्धांत को मान्यता नहीं मिली।

(ब) प्रकृतिपरिवर्तन सिद्धांत–इस मत के प्रवर्तक डॉ. ए.बी. कीथ हैं उन्होंने अपने ग्रंथ "दोतपज क्तंउ" में इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा कि प्राकृतिक परिवर्तन को मूर्त रूप देने की इच्छा से नाटकों का जन्म हुआ। हेमंत ऋतु के पश्चात् बसन्त ऋतु का आना एक प्राकृतिक परिवर्तन है। इसी विषय का मूर्तरूप ''कंसबध' नाटक में पाया जाता है। कंस पक्ष के लोग काले मुख और कृष्ण पक्ष के लोग लाल मुख रखते थे। वे कहते हैं कि इस नाटक में कृष्ण का विजय प्रसग्ङ जीवनी शक्ति का प्रतीक है। इस नाटक का प्रमुख उद्देश्य कृष्ण की विजय प्रदर्शित करना नहीं है बल्कि हेमन्त पर बसन्त ऋतु की विजय प्रदर्शित करना है। इस प्रकार ऋतु परिवर्तन के समय जिन नृत्य गीतों को प्रदर्शन किया जाता है, वे ही नाटकों के मूल स्रोत है। कीथ का यह मत कल्पना पर आश्रित है, अतएव यह मत नाटक की उत्पति का सही सिद्धांत प्रस्तुत नहीं करता दिखता।

(स) पुत्तलिका नृत्य सिद्धांत– इस मत के समर्थक जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ0 पिशेल है। वे नाटकों की उत्पत्ति पुत्तलिका नृत्य (पुतलियों के नृत्य) से मानते हैं। उनका कथन है कि इस नृत्य का मूल स्रोत भारत ही है, उसके पश्चात् विदेशों में इसका प्रसार हुआ। इसके लिए वे भारतीय संस्कृत–नाटकों में प्रयुक्त शब्द 'सूत्रधार' को प्रस्तावित करते हैं, जिसका अर्थ है, "सूत्र धारयतीति सूत्रधार" अर्थात् सूत्र को पकड़ने वाला। इसका समन्वय ने अपने मत में इस प्रकार करते हैं, कि पुत्तलिका नृत्य को दिखाने के वाला भी सूत्र (धागा) को पकड़कर पुत्तलियों को नचाता था। परंतु

डॉ0 पिलेश का यह मत समीचीन नहीं लगता। यह तो सत्य है कि पुत्तलियां नृत्य की जन्मभूमि भारत ही है, और यहीं से यह कला अन्य देशों में विकसित हुई, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि पुत्तलियां नृत्य से नाटको की उत्पत्ति हुई।

(द) छाया नाटक सिद्धांत– डॉ. कोनो ने छाया नाटकों से नाटकों की उत्पत्ति प्रस्तावित की है। डॉ0 पिशेल तथा डॉ. ल्यूडर्स ने भी इस बात का समर्थन किया है। इनके अनुसार सुभट कवि द्वारा लिखित, "दूतांगद" छाया नाटक है। लेकिन केवल एकमात्र यही छाया नाटक है। यह अधिक प्राचीन नहीं है, अतः इसके आधर पर विशाल संस्कृत नाटकों का मूल मानना, विद्वत्ता के सर्वथा प्रतिकूल मालूम होता है।

(य) मे–पोल नृत्य सिद्धांत– कुछ विद्वानों नाटकों का उदय पश्चिमी देशों में कई महीने तक होने वाले मे–पोल नृत्यों से मानते हैं तथा 'इंद्रध्वज' जो कि भारत में खेले जाने वाला नाटक था, उससे इसकी तुलना करते हैं, परंतु इन्द्रध्वज उत्सव का रूप मे–पोल नृत्य से सर्वथा भिन्न है। पाश्चात्य देशों में मई के महीने में एक खम्भे को गाड़कर उसके नीचे स्त्रीपुरूषगण आनन्दपूर्वक नृत्य करते हैं, अतः इससे नाटक की उत्पत्ति मानना एक भ्रम ही है।

इन मतों के अतिरिक्त जहाँ कुछ विद्वान् विभिन्न पर्वो पर खेले जाने वाले छोटे नाटकों से नाटकों का जन्म मानते हैं, वहीं प्रो. हिलब्रैण्ड और प्रो. स्टेन कोनों नाटकों का जन्म लोक प्रिय स्वांगों से मानते हैं। प्रो. मैक्सम्यूलर, प्रो. सिल्वाँ लेवी, प्रो. फान–श्रोयेडर एवं डॉ. हर्टन का मानना है कि भारतीय नाटको की उत्पत्ति ऋग्वेद के संवाद सूक्तो से हुई है। प्रो0 बेवर एवं प्रो. विंडिश ने भारतीय नाटकों के उद्गम में यूनानी नाट्यकला के प्रभव को सिद्ध करने का प्रयास किया है कि नाटको का प्रारंभ सर्वप्रथम भारत वर्ष में ही हुआ। वाल्मीकि रामायण में जहाँ नट, नर्तक आदि का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, वहीं महाभारत में सूत्रधार, नट, नर्तक, आदि के उल्लेख के साथ साथ रंगशाला का उल्लेख भी मिलता है। महाभारत के हरिवंश पर्व में वर्णन मिलता है कि ब्रजनाभ नामक राक्षस की नगरी में रामायण और कौबेररम्भाभिसार नामक नाटक खेले गये थे।

15.2.2 नाटकों का विकास

नाटकों की मूल उत्पत्ति के विवरण वेदों में देखने को मिलते हैं इसके प्रमाण ऋग्वेद में प्राप्त संवाद सूक्त है। इसके अनन्तर श्रौत सूत्र में भी एक लघु अभिनय का प्रसंग सोमपान के अवसर पर प्राप्त होता है। रामायण, महाभारत के काल तक नाटक विकसित अवस्था में थे। महाभारत में रामायण नाटक तथा कौबेररम्भाभिसार नामक नाटकों के नाम वार्णित मिलते है, साथ ही विराट पर्व में रंगशाला एवं नट का प्रयोग उल्लिखित मिलता है। आचार्य पाणिनी ने भी अष्टध्यायी में ''पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः, एवं कर्मन्दकृशाश्वादिनीः" सूत्रों द्वारा नाटकों की पूर्व रचना का आभास दिया है। महर्षि पत**ञ्**जलि ने भी अने महाभाष्य में कंसवध और बलिबंधन नामक नाटकों के खेले जाने का उल्लेख किया है। यथा–"ये तावदेते शोभनिका नामैते प्रत्यक्षं कंसं घातयन्ति, प्रत्यक्षं च वलिं बन्धयतीति।" (महाभाष्य–3/2/11)

चतुर्थ शती ईसापूर्व के कौटिलीय अर्थशास्त्र के अध्ययन से विदित होता है, कि नट, नर्तक, गायक, वादक, प्लवक, कुशीलव, सौमित्र, तथा चारण आदि नाटकादि करके अपना जीविनोपार्जन करते थे। बौद्धग्रंथों में "विनय पिटक" के चुल्लवग्ग में एक कथा है कि अश्वजित तथा पुनर्वसु अभिनय देखने के पश्चात् नर्तकी के साथ प्रेमालाप कर रहे

थे, तो उन्हें महास्थविर ने विहार से तत्काल निष्कासित कर दिया था। अतएव इस समय भी नाटक के भारत व्यापी होने की संसूचना मिलती है। संस्कृत नाटकों की श्रेष्ठ परम्परा का प्रवर्तन महाकवि भास से प्रारम्भ होता है, जिनके तेरह नाटको की विशाल श्रृंखला का विवरण महामहोपाध्याय टी. गणपति शास्त्री के विवरण से प्राप्त होता है, वे निम्नलिखित है (1) दूतवाक्य (2) कर्णभार (3) दूतघटोत्क (4) उरूभंग (5) मध्यम व्यायोग (6) पञ्चरात्र (7) अभिषेक नाटक (8) बालचरित (9) अविमारक (10) प्रतिमा नाटक, (11) प्रतिज्ञा यौगनधरायण (12) स्वप्न वासवदता (13) चारूदत्त।

महाकवि भास के अनन्तर संस्कृत नाटककारों में शूद्रक का नाम अग्रणी है। इनका नाटक मृच्छकटिक इनकी ख्याति को अमर बनाये हुये है। इनके अनन्तर संस्कृत नाट्यकाश में महाकवि कालिदास सदृश श्रेष्ठ नाटककार का नाम अपनी स्वर्णिम आभा से सभी को चमत्कृत करता दिखता है, इनके तीन नाटक प्राप्त मिलते हैं–(1) मालविकाग्निमित्रम्, (2) विक्रोमोर्वशीयम् (3) अभिज्ञान शाकुन्तलम्। कालिदास ने अपने नाटकों में नाट्य प्रतिभा, कल्पना, भाषा लालित्य, रस परिपाक, तथा मानव मनोविकारों का विशलेषण कर सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में वर्णित कन्या के पतिगृह जाने के महर्षि कण्व के उपदेश आज भी भारतीय संस्कृति के पोषक रूप में समादृत एवं समीचीन हैं।

महाकवि कालिदास के अनन्तर अश्वघोष का स्थान भी संस्कृत नाटककारों में आता है, ये बौद्ध नाटककार है, इनके दो नाटक हैं, शारिपुत्र प्रकरण, एवं प्रबोध–चन्द्रोदय। ये दोनों नाटक सन् 1910 में डॉ0 ल्यूडर्स द्वारा हस्तलिखित प्रति से उपलब्ध हो सके हैं। अश्वघोष के बाद नाटककार हर्षवर्धन के तीन नाटक उपलब्ध होते हैं– (1) प्रियदर्शिका, (2) रत्नावली (3) नागानन्द। इनके बाद सातवी शताब्दी के अन्तिम समय के भवभूति नामक नाटककार की तीन कृतियाँ संस्कृत नाटक साहित्य को समृद्ध करने के साथ–साथ लोक जीवन की झांकी प्रस्तुत करती दिखती हैं वे हैं (1) मालती माधव (2) महावीर चरित (3) उत्तररामचरित। भवभूति करूण रस के पारखी कवि माने जाते हैं, सीता एवं राम, दोनों के वियोगों में दोनों की मार्मिक स्थिति के निरूपण में महाकवि ने करूण रस को जो निदर्शन किया है, उनके कारण उन्हें "कारूण्यं भवभूतिरेव तनुते" जैसी उक्तियों से समलंकृत किया गया है। भवभूति के पश्चात् विशाखदत्त द्वारा रचित "मुद्राराक्षस" नामक घटना प्रधान नाटक, आज भी राजनीतिज्ञों के लिए राजनीति सीखने एवं प्रयोग करने को मापदण्ड के रूप में समादृत है। इसके अनन्तर भट्ट नारायण रचित वेणीसंहार नामक नाटक आता है, जो महाभारत के आधार पर रचित है।

भट्टनारायण के पश्चात् अनेक नाटकों की रचनाएँ हुई जिनमे प्रमुख हैं–मुरारिकृत अनर्घराघव, शक्तिभद्र कृत आश्यर्च चूड़ामणि, अनङगहर्षमातृराजकृत तापसवत्सराज, मायुराजकृत उदात्तराघव, जयदेव कृत प्रसन्न राघव, आदि की श्रृंखला अद्यावधि सतत् बह रही है, एवं भविष्य में भी संस्कृत नाटकों की रचना होती रहेगी, ऐसा विश्वास है।

15.3 परीक्षार्थ प्रश्न

1. नाटकों के क्रमिक विकास पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिये?
2. नाटकों की उत्पत्ति से सम्बन्धित भारतीय एवं पाश्चात्य मतों की समीक्षा कीजिए?

3. 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' क्यों कहा जाता है, अपने तर्क के समर्थन में प्रमाण अर्जित कीजिए?

4. "नाटकों को चतुर्वेदाङग संभवम्" क्यों कहा जाता है, वर्णन कीजिए?

15.4 उपयोगी पुस्तकें

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – कपिदेव द्विवेदी, प्रकाशक– रामनारायण वाल, इलाहाबाद (उ.प्र.)
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 दयाशंकर शास्त्री, भारतीय प्रकाशन, चौक–कानपुर (उ.प्र.)
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी, (उ.प्र.)
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बहादुर चंद छावड़ा
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास – चनद्रशेखर पाण्डेय–प्रकाशक साहित्य निकेतन कानपुर (उ.प्र.)

(ख) कालिदास नाटककार के रूप में

15.0 पाठ शीर्षक

15.1 उद्देश्य

(क) विद्यर्थियों को कालिदास के नाटकों में उपलब्ध उपदेशों से परिचित कराना !

(ख) कालिदास की नाट्य कुशलता का ज्ञान देना !

(ग) कालिदास के नाटकों के मंचन हेतु प्रेरित करना !

(घ) नाटकीय तत्त्वों से विद्यार्थियों को अवगत कराना !

(ङ) विद्यर्थियों की रूचि को नाटक पढ़ने में केन्द्रित करना !

15.2 पाठ परिचय

15.2.0 कालिदास के नाटको की कथावस्तु का विवेचन !

15.2.1 नाटकीय तत्त्वों का विवरण !

15.2.2 नायक नायिकाओं के चरित्र निरूपण !

15.2.3 रचना शैली !

15.2.4 रस विवेचन !

15.2.5 संवाद निरूपण !

15.2.6 भाषा का प्रयोग !

15.2.7 सूक्ति विवरण !

15.2.8 रीति निरूपण !

15.2.9 कालिदास का प्रकृति चित्रण !

15.3. उपसंहार एवं सारांश !

15.4. परीक्षार्थ प्रश्न !

15.5. उपयोगी पुस्तकें !

"कालिदास नाटककार के रूप में"

15.0 महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वोत्कृष्ट नाटककार माने जाते हैं। उनका स्थितिकाल प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में उज्जयिनी के परमार वंशी सम्राट–विक्रमादित्य के राज्यकाल में माना जाता है। कालिदास की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह एक श्रेष्ठ नाटककार होने के साथ–साथ श्रेष्ठ महाकाव्यकार एवं श्रेष्ठ गीतिकार भी थे, परन्तु उनकी दीर्घ सांसारिक अनुभूतियों तथा लोकव्यवहार की गाढ़ प्रवीणता का परिचय हमें उनके नाटकों में मिलता है, वे हैं मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् और अभिज्ञान शाकुन्तलम्। उन्होंने इन तीनों नाटकों में मानव हृदय की विभिन्न परिस्थितियां में उदीयमान वृत्तियों का बड़ा ही सजीव एवं लोकव्यवहार से सामंजस्य रखता हुआ विश्लेषण किया है। वैसे इन नाटकों के आख्यान प्रेममूलक ही हैं, किन्तु उनमें प्रेम की नाना अवस्थाओं का दिग्दर्शन बडे. ही वैज्ञानिक ढंग से कालिदास ने किया है।

15.2 "मालविकाग्निमित्रम्" में जहाँ प्रतिकूल परिस्थितयों में रहकर भी राजसी अन्तःपुर में पनपने वाले यौवन सुलभ प्रेम का चित्रण हैं, वहीं "विक्रमोर्वशीयम्" में यौवन की उद्दाम वासना से उत्पन्न कामुक पुरूष की प्रेमिका के विरह में एकदम पागल बना देने वाले पुरूरवा के प्रेम का निरूपण है। शाकुन्तल की स्थिति इनसे भिन्न है। उसमें तपस्या तथा साधना द्वारा, वियोग की जवाला में विशुद्ध बनने वाले काम की, प्रेम में परिणत का अभिराम प्रस्तुत किया गया है।

15.2.1 वास्तव में कालिदास के नाटक उनकी जीवनानुभूतियों के सार संग्रह हैं। उन्होंने एक सफल–नाटककार की भाँति अपने नाटकों के कथानक को नाट्य–शास्त्रीय तत्त्वों से भी संगुम्फित किया है। प्रख्यात कथावस्तु के साथ–साथ पांचों अर्थप्रकृतियों यथा–बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य, नाटक की पांचों अवस्थाओं, यथा–आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और, फलगाम, एवं पाँचों सन्धियों यथा–मुख, प्रतिमुख गर्भ, विमर्श एवं उपसंहृति का निर्वाह अपने तीनों नाटकों की कथावस्तु में संजोया है।

यद्यपि कालिदास की प्रारम्भिक रचनाओं में यथा–मालविकाग्निमित्र एवं विक्रमोर्वशीय में उनकी नाट्य प्रतिभा का पूर्ण निखार तो नहीं हो सका है फिर भी उन्होंने अपनी वर्णन चातुरी से इन नाटकों की कथावस्तु का एकदम सजीव बना दिया है। नाटकीय तत्तवों की दृष्टि से शाकुन्तल एक सर्वोत्कृष्ट रचना है। कालिदास ने अपनी कल्पना की मौलिक उद्भावनाओं से इसकी कथावस्तु में जो नवीनता जोड़ी है उससे उन्होंने अपने नायक और नायिका को विश्व के आदर्श वयक्तियों की पंक्ति में पहुँचा दिया है जबकि महाभारतीय कथानक नीरस, अरोचक और आदर्श विहीन है, उसमें शकुन्तला एक आश्रम बालिका होते हुए भी अतिप्रगल्भ और धृष्ट दर्शायी गयी है, बहुबल्लभ दुष्यन्त को भी नितान्त लम्पट और भीरू दिखलाया गया है। कालिदास ने अनसूया और प्रियवंदा नामक पात्रों के मुख से शकुन्तला के जन्म–वृत्तान्त का विवरण देकर शकुन्तला की लज्जाशीलता की रक्षा की है, इसी प्रकार दुर्वाशा शाप और धीवर प्रसंग

ने दुष्यन्त को लम्पट और समाज भीरू होने से साफ बचा लिया है। महाभारत का दुष्यन्त यह जानते हुए भी कि शकुन्तला उसकी पत्नी है, उसे स्वीकार करने में आनाकारी करता है जब कि कालिदास का दुष्यन्त दुर्वाशा शाप के कारण अपनी प्रियतमा को बिल्कुल भूल जाता है और कालान्तर में धीवर से अपनी शकुन्तला को दी हुई अंगूठी पाकर उसके विरह में अत्यधिक भाव विह्वल हो उठता है। मातलि के साथ दुष्यन्त का स्वर्ग में जाना और वहाँ से लौटकर महषि मारीच के आश्रम में शकुन्तला से साक्षात्कार करना भी इस कथानक की एक नयी कड़ी है। इन नवीन उद्भावनाओं से अभिज्ञान शाकुन्तल की कथावस्तु अतिविश्वसनीय आदर्श और रोचक बन गयी है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि कालिदास एक सर्वोत्कृष्ट नाटककार थे।

15.2.2 नाटककार की एक मूलभूत विशेषता अपने चरित्र नायक एवं नायिकाओं के उत्तम चरित्र सृजित करने की होती है। कालिदास चरित्र–चित्रण में भी बेजोड़ हैं। उनके पात्र आदर्शपात्र हैं जिनमें मानवता का गरिमामय रूप देखने को मिलता है। विक्रमोर्वशीय में जहाँ कालिदास ने पुरूरवा को एक परोपकारी नरेश के रूप में चित्रित किया है, वहीं शाकुन्तल मे तापसकन्या शकुन्तला को विधाता की एक अद्वितीय रचना माना है। प्रकृति पेलवा शकुन्तला का अपने आश्रम के पशु पक्षियों तथा लता वृक्षों से सहोदर स्नेह है। कोमलांगी होती हुई भी वह स्नेहवश नित्य वृक्ष सेचन करती है, और आश्रम के क्रियाकलापों में अपने पिता को सहयोग करती है। वह लज्जा शील मुग्धा बालिका है। दुष्यन्त को देखकर उसके हृदय में जो आश्रमविरोधी विकार जागृत होते हैं, उनसे वह क्षुब्ध होती है। दुष्यन्त के सामीप्य को लज्जावश सहन करने में असमर्थ होती है। सखियों के प्रयत्न से जब उसका दुष्यन्त से समागम होता है, तो "पौरव, रक्षस्व विनयम्" कहकर उसे बरजने (मना करने) का असफल प्रयत्न भी करती है। दुष्यन्त की राजसभा में प्रत्याख्यात और तापसकुमारों से तिरस्कृत होकर शकुन्तला करूण विलाप करती है, और अन्त में मारीच के आश्रम में सात वर्ष तक त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करती है। शकुन्तला का चरित्र भारतीय ललनाओं के आदर्श रूप का प्रतिबिम्बित करने वाला है। कालिदास ने अभिज्ञानशकुन्तल में तीन ऋषियों का वर्णन करने के साथ–साथ तीनों में अन्तर भी निर्धारित किया है, कझव जहाँ अत्यन्त सज्जन है, वहीं दुर्वाशा अत्यन्त क्रोधी, जब कि मारीच वीतराग ऋषि हैं।

15.2.3 कालिदास के अपने नाटकों में जहाँ घटना संयोजन में सौष्ठव के दर्शन होते हैं, वहीं उनके नाटकों प्राप्त घटनाओं की सार्थकता भी पुष्ट होती हैं और वर्णनों में स्वाभाविकता के दर्शन भी होते हैं। रचना कौशल में तो उन्हें महारत ही हासिल है। उनके नाटकों में वर्णनो और घटनाओं की ध्वन्यात्मकता देखते ही बनती है। पात्रों के अनुकूल भाषा के प्रयोग में जहाँ वह दक्ष हैं, वहीं रस निरूपण में भी उन्हें निपुणता हासिल है। विक्रमोर्वशीय में जहाँ पुरूरवा एक सफल प्रेमी के रूप मे चित्रित है, वहीं शाकुन्तल में भी दुष्यन्त : तथा मालविकाग्निमित्र में अग्निमित्र को प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। उर्वशी का अप्रितम रूप देखकर राजा अपने चित्त में सोचता है – यथाा –

अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चनद्रो नु कान्तिप्रदः
श्रृंगारैकरसः स्वयं नु मदनों मासो न पुष्पाकरः।
वेदाभ्यासजडः कथं नु विषयव्यावृत्तकौतूहलः
निर्मातुं प्रभवेन् मनोहरमिदं रूपं पुराणों मुनिः।

15.2.4 कालिदास की तीनों रचनाओं में श्रृंगार रस अंगीरस के रूप में वर्णित मिलता है, इन्होंने श्रृंगार के दोनों भेदों, संयोग और विप्रलम्भ का बड़ा विशद वर्णन किया है। शाकुन्तला में वियोग की आग मे तपे हुए संयोग की अवतारणा की गयी है। चतुर्थ अंक में करूणा का अजस्र स्त्रोत कालिदास के द्वारा बहाया गया है। पुत्री के वियोग के समय वीतराग कण्व के निम्नलिखित उद्‌गार कितने मार्मिक हैं – यथा –

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठस्तम्भितबाष्प वृत्तिकलुषश्चिन्ता जडं दर्शनम्।

वैक्लवयं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

पीड्‌यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

आज भी उपर्युक्त श्लोक के तथ्य प्रासङिगक है, एवं पुत्री के पतिगृह जाने में आज भी पुत्री के माता पिता उसके वियोग में दुखी हुए बिना नहीं रहते। वैसे कालिदास श्रृंगाररस के पारखी विद्वान हैं, लेकिन उन्होंने अपनी रचनाओं में श्रृंगार तथा करूण रस के साथ–साथ रस की अभिवयञजना अपने विदूषकों के माध्यम से की है। तीनों नाटकों के विदूषकों का स्वभाव प्रायः समान ही है। वह नायक का प्रणव सचिव है, प्रणय कथा के विकास तथा संचालन में सहयोग प्रदान करता है। नायक के गुप्त प्रेम रहस्यों को छिपाने की कला का अभ्यासी होने पर वह अपनी लड्‌डुओं से पेट भना उसे नितान्त प्रिय है, अपनी विसंगतियों से वह हास्य रस को भी पुष्ट करता है। मालविकाग्निमित्र का विदूषक नृत्याचार्य, गणदास और हरदत्त की लड़ाई को मेढकों की लड़ाई बतलाता है, और उसे सबसे अधिक चिन्ता लड्‌डुओं की रहती है। विक्रमोर्वशीय का विदूषक भी वाक् चातुरी में प्रवीण है। महारानी द्वारा उर्वशी के पत्र पकड़े जाने पर पुरूरवा द्वारा बचाव का उपाय धीमे से पूंछे जाने पर चतुर विदूषक तुरन्त बोल उठता है "चुराई गयी वस्तु के साथ पकड़े गये चोर के पास क्या जवाब होता है (लाप्त्रेणसूचितस्य कुम्भीरकस्य अस्ति का प्रतिवचनम")। अभिज्ञान–शाकुन्तल का विदूषक भी राजा दुष्यन्त की आश्रम वाली प्रणय गाथा से परिचित होने पर भी शकुन्तला के प्रत्याख्यान के अवसर पर अपने अपराध को बड़ी चातुरता से छिपा लेता है। षष्ठ अंक में जब मातलि अदृश्य रूप से मेघप्रति–छिन्न प्रासाद में विदूषक को दबोच लेता है, तब उसकी उक्तियाँ दर्शकों को हास्य रस से सरोबार कर डालती हैं जब वह कहता है कि "जीवन के प्रति मैं उसी प्रकार आशा छोड़ बैठा हूँ, जिस प्रकार विडाल के द्वारा पकड़ा हुआ चूहा (विडाल गृहीत मूषक इव निराशोऽस्मि जीवने–संवृत्तः)। स्मरणीय तथ्य यह है कि विदूषक कठोर वातावरण को अपनी अनूझी हास्योक्तियों से सरस बनाने में ही समर्थ नहीं होता, प्रत्युत वह नाटकीय कथावस्तु के विकास का भी एक अनिवार्य उपकरण है। उसकी उक्तियाँ, लोकोक्ति व्यंग्य, इतने हास्यपूर्ण है कि कालिदास के पात्रों में वह अपने चुटकीले तथा स्वाभाविक संवादों के कारण भुलाया नहीं जा सकता। विदूषक की ऐसी भूमिका का निर्वहन कालिदास जैसा नाटककार ही करा सकता था।

15.2.5 कालिदास ने अपने नाटकों में संक्षिप्त और सारगर्भित संवादां की योजना की है। उनका प्रत्येक पात्र सीमित शब्दों से काम की बात ही कहता है। उनके नाटकों में विषय तथा परिस्थितियों के अनुसार संवादों में वैविध्य भी दृष्टिगोचर होता है। विक्रमोर्वशीय नाटक में उर्वशी को भरतमुनि के शाप वश पृथ्वी पर आने का विवरण और कुछ आवश्यक शर्तों के साथ पुरूरवा की रानी बनने के प्रसंग में कालिदास के संक्षिप्त संवादों ने विरृत विषयवस्तु

को भी सार रूप से रख पाने में सर्वथा सफलता प्राप्त की है, इसी प्रकार मालविकाग्निमित्र में राजाओं के अंतःपुर की चहार दीवारी के भीतर विकसित होने वाले काम, रानियों की परस्पर ईर्ष्या, राजा की कामुकता, महिषी की धीरता तथा उदारता के वर्णन प्रसंग में कालिदास के संवाद अत्यंत ही सहज बन पड़े हैं। शकुन्तल के प्रथम अंक में शकुंतला और सखियों के संवाद में जहाँ हास परिहास के दर्शन होजे है—यथा "पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व। मां किमुपालभसे" प्रियंवदा द्वारा शंकुतला के प्रति किये गये व्यंग्य से स्पष्ट है। वहीं दुष्यन्त के साथ उनके संवाद में पूर्ण शिष्टाचार एवं शील का निर्वाह किया गया है। इसी प्रकार धीवर ओर राजपुरूषों के संवाद में जहाँ धीवर का दैन्य और भय व्यञ्जित होता है, वहीं राजपुरूषों की क्रूरता और उदण्डता भी झलकती है। ऋषि कुमारों और दुष्यन्त के संवाद मे शर्ङ्गरव का अमर्ष और दुष्यन्त का धैर्य भी कम श्लाघनीय नहीं है। उपयुर्क्त तथ्यो से यही ध्वनित होता है कि कालिदास की संवाद योजना नाटकीय दृष्टि से उच्चकोटि की होने के कारण ही यथेष्ट रूप ग्रहण कर पायी है। कालिदास के यथेष्ट संवादों का ही परिणाम है कि समान्य जन भी इनके नाटकों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

15.2.6 पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करने में कालिदास को दक्षता प्राप्त है। उनकी भाषा में सहजता, माधुर्य और प्रवाह है। प्रत्येक पात्र अपनी सामर्थ्यानुसार ही भाषा का प्रयोग करता है। उच्च श्रेणी के पात्र जहाँ संसृत भाषा का प्रयोग करते हैं, वहीं मध्यम पात्र संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं का, जबकि निम्न पात्र प्राकृत भाषा में बोलचाल की प्रक्रिया अपनाते हैं। जहां एक तरफ राजा, आचार्य और ऋषियों की भाषा में क्लिष्टता और गम्भीरता है, तो विदुषक आदि की भाषा में सरलता और उच्छृंखलता भी दृष्टिगोचर होती है। कालिदास के नाटक में उनके पात्र जिस परिवेश में रहते हैं उसी के अनुकूल वे लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। शकुंतला के प्रेम विवाह से अवगत होकर महर्षि कण्व का कथन "दिष्ट्या धूमाकुलत दृष्टेय जमानस्या हुतिः पावक एवं पतिता", इसी प्रकार दुर्वाशा ऋषि का शाप वृत्तांन्त शकुंतला को न बतलाने की प्रतिज्ञा करने वाली प्रियंवदा का यह कथन—"कोनामोष्णोदकेन नवमालिकां सिच्चति, उनके परिवेश से ही उद्भूत हुए हैं।

15.2.7 कालिदास ने अपने नाटकों में सामान्यजन के मस्तिष्क के समझ में आने वाली, साथ ही उन्हें दिशानिर्देश करने वाली सूक्तियों का सन्निवेश भी किया है। "सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः" अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भविन्त सर्वत्र इत्यादि ऐसी असंख्य सूक्तिपंक्तियाँ हैं, जिनमें मानव जीवन का यथार्थ झलकता है। यथा "किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्, न तादृशा आकृतिविशेषा गुणाविरोधिनो भवन्ति, अहो, —सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाृति विशेषाणाम्।"

15.2.8 अपने नाटकों में कालिदास ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है। वैदर्भी रीति के प्रमुख विशेषताएं है—मधुर शब्द, ललित रचना, एवं कम समस्त पदों वाले समासों का प्रयोग। नाटककार के रूप में उनकी लोकप्रियता का कारण उनकी सरल, परिष्कृत तथा माधुर्य एवं प्रसाद गुण युक्त शैली भी है। उनके कुछ पद्य, लो नाटकों में उल्लिखित है, इतनी प्रसादमयी भाषा में लिखे गये हैं कि वे पाठक के हृदय में अपना अधिकार जमा ही लेते हैं—

यथा—भवन्ति नम्रास्तरव : फलागमैर्नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनों घनाः।

अनुद्धताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष, परोपकारिणाम्।।

इसी प्रकार माधुर्य गुण भी पाठक के हृदय को उद्वेलित ही कर डालता है। शकुन्तला के सुकुमार सौन्दर्य

पर नाटककार कालिदास इतने कृपालु हैं कि उनके लिए यह असह्य है कि शकुन्तला जैसी सुकुमारी से वृक्ष सेचन और तपस्या जैसा कठोर कार्य कराया जाये, वे लिखते हैं –

यथा :

इदं किलाव्याज मनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।

ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।।

कालिदास की शैली संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक भी है, जो कि एक नाटककार की विशिष्ट विशेषता होती है कि अधिक बात को कम शब्दों में या संकेत से ही बता दिया जाये। यथा–राजा दुष्यन्त अपनी प्रेयसी शकुन्तला को देखकर अपना हर्षातिरेक केवल एक वाक्य में प्रकट करता है "अये लब्धं नेत्र निर्वाणम्" मेंरी आंखों को चरम सुख मिल गया। दूसरा उदाहरण हम उस प्रसंग का दे सकते हैं, जब राजा और शकुन्तला दोनों गन्धर्व विवाह के बाद लतामण्डप में होते है, और गौतमी अस्वस्थ शकुन्तला को देखने आ रही होती है। उस समय दोनों को पृथक् होने के लिए कितना मनोहर व्यंग्यात्मक संकेत कालिदास ने किया है कि "हे चकवी, अपने साथी से विदा लो, रात आगयी। यथा–चक्रवाक–बधुके, आमन्त्रयस्व सहचरम्। उपस्थिता रजनी।" वास्तव में ऐसा संकेत कालिदास ने इसलिए किया है कि गौतमी अर्थात् श्रद्धेय जन के समक्ष कामालाप या कामव्यवहार (काम क्रिया में लिप्त होना) अशिष्ट एवं निंद्य समझा जाता है, इस प्रकार कालिदास ने लोक व्यवहार की परम्परा का निर्वाह एवं लोक जीवन को एक नयी शिक्षा अपने इस संकेतात्मक वाक्य से दिया है।

15.2.9 अन्य नाटककारों से पृथक कालिदास की एक विशिष्ट विशेषता है कि उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से यह भी दिखलाना चाहा है कि प्रकृति एवं मानव जीवन का आपस में अत्यन्त निकटता का सम्बन्ध है, उन्होंने अन्तःप्रकृति और बाह्य प्रकृति का सुन्दर समन्वय भी किया है, जो घटना मानव के हृदय में हो रही होती है, वैसी ही घटना बाह्य प्रकृति में भी होती है। जैसे–शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में पति के वियोग में शकुन्तला की अवस्था दयनीय है, तो चन्द्रमा के वियोग में कुमुदिनी की दशा भी शोचनीय है।

यथा– अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती में

दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।

इष्टप्रवास जनितान्य बलाजनस्य।

दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुः सहानि।।

शकुन्तला की विदाई के समय वर्णित, उपदेश तथा मानव एवं प्रकृति के आपसी मित्रता के वर्णन में तो कालिदास की आज तक कोई बराबरी ही नहीं कर सका। यथा–उस समय आश्रम के सभी व्यक्तियों के साथ–साथ वृक्षों के खिन्न होने का ही परिणाम है कि बसन्त ऋतु आने पर भी वृक्षों में बौर नहीं हैं, कोयलों का बोलना बन्द है, कुरबक आदि पुष्प खिल नहीं रहे हैं, मृगछौने अर्थात मृगों के बच्चे घास खाना छोड़ चुके हैं। एवं जिस प्रकार कन्या की विदाई में कन्या को भेंट स्वरूप वस्तुएं प्रदान की जाती हैं, तो प्रकृति द्वारा भी उसे आभूषण आलक्तक प्रदान किये जाने से यह स्पष्ट होता है कि वह भी अपना घनिष्ठ प्रेम शकुन्तला के साथ प्रकट करती है। शकुन्तला भी वृक्षों का

सगा भाई और लताओं को अपनी सगी बहन समझती है और उसी प्रकार उनकी सेवा करती है अतएव वह कहती है अस्ति में "सोदरस्नेहोऽयेतेषु"। शकुन्तल तो कालिदास की नाट्यकला कुशलता का चुडान्त निदर्शन ही है। सम्पूर्ण जगत का वह हृदय हार बन चुका है, शायद यही कारण है कि भारत ही विश्व के अनेक देशों में अनेकशः इसका मंचन भी हो चुका है, और आज भी हो रहा है। जर्मन कवि गेटे ने तो कालिदास के इस ग्रंथ की अत्यधिक प्रशंसा की है। संसार के चुने हुए सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों में अभिज्ञानशकुन्तल को आदरणीय स्थान प्राप्त है। नाटककार की इस अनुपम कृति में उनकी नाट्य प्रतिभा, कल्पना प्रचुरता, भाषा लालित्य, रस परिपाक तथा मानवमनोविकारों के मार्मिक विश्लेषण की अद्भुत क्षमता अत्यन्त विशदा रूप से प्रकट हुई है। भारतीय समालोचकों की सम्मति में यह संस्कृत साहित्य का सर्वोत्म नाटक है, जैसा कि उक्ति भी है "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला", अर्थात् काव्यों में नाटक श्रेष्ठ हैं, और उनमें भी अभिज्ञान शकुन्तल सर्वश्रेष्ठ हैं। स्वये कालिदास के ग्रंथों में शाकुन्तल ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है– "कालिदास सर्वस्वमभिज्ञानशकुन्तलम," इस ग्रंथ में नाटककार ने भारतीय संस्कृति के पोषक तत्त्वों का सन्निवेश किया है, जो आज तक प्रासङ्गिक एवं समीचीन बने हुए है।"

15.3 इस प्रकार नाटककार के रूप में कालिदा का संस्कृत साहित्य में अप्रतिम स्थान है। वैसे नाटकों की निर्माण परम्परा में भास एवं शूद्रक के बाद ही कालिदास का नाम आता है, लेकिन अपने तीन नाटकों मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय ओर अभिज्ञानशकुन्तल में, नाटकीय नियमों का जो निर्वाह कालिदास ने किया है, उससे उन्हें प्रथम श्रेणी का नाटककार मानने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभाव नहीं होता। उनके कथा निर्वाह, घटनाक्रम, पात्र योजना एवं संवाद आदि सभी में नाटकार के असाधारण कौशल की स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। उनके नाटकों जैसा प्रेम और सौन्दर्य का ऐसा सरस, हृदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी चित्रण अनयत्र देखने को नहीं मिलता, हाँ इतना जरूर है कि मालविकाग्निमित्र, जो नाटककार की प्रथम कृति है, उसमं अवश्य कहीं–कहीं प्रेम का विवरण मर्यादा की सीमा लांघता दिखायी पड़ता है। महाकवि एवं नाटककार कालिदास के सम्बन्ध में गेटे की उक्ति उनकी दक्षता को व्यक्त ही कर देती है, "स्वर्ग और मर्त्य का जो यह मिलन है, उसे कालिदास ने सहज ही सम्पादित कर लिया है। उन्होंने फूल को इस सहजभाव से फल में परिणत कर लिया है, मर्त्य की सीमा को उन्होंने इस प्रकार स्वर्ग के साथ मिला दिया है कि बीच का व्यवहार किसी को दृष्टिगोचर नहीं होता।" साथ ही रवीन्द्रनाथ टैगोर की यह उक्ति भी कि "कालिदास ने अपने नाटकों में दुरन्त प्रवृत्ति के दावानल को अनुतप्त–हृदय के अश्रुवर्षण से शान्त किया है, किन्तु उन्होंने प्रवृत्ति की व्याधि को लेकर वर्णन का बाजार गर्म नहीं किया, केवल उसका आभास मात्र दे दिया है, और उस पर एक परदा डाल दिया है।" कालिदास को एक सर्वश्रेष्ठ नाटककार सिद्ध करती है।

15.4 परीक्षार्थ प्रश्न :

1. नाटककार के रूप में कालिदास का मूल्यांकन कीजिए।
2. कालिदास के प्रकृति चित्रण पर निबन्ध लिखिये?
3. कालिदास के नाटकों की कथावस्तु संक्षेप में वर्णित कीजिए?
4. 'तत्र रम्या शकुन्तला' पर निबन्ध लिखिये?
5. कालिदास की नाट्यकला का विशद् विवेचन कीजिए?

15.5 उपयोगी पुस्तकें

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – चन्द्रशेखर पाण्डेय प्रकाशक साहित्य निकेतन कानपुर

3. अभिज्ञानशाकुन्तल हिन्दी व्याख्याकार राजेन्द्र मिश्र कपिलदेव द्विवेदी

4. मालविकाग्निमित्रम् – हिन्दी व्याख्या कपिल देव द्विवेदी

5. विक्रमोर्वशीयम् – हिन्दी व्याख्याकार कपिलदेव द्विवेदी

"संस्कृत नाटकों की सामान्य विशेषतायें"

पाठ की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 विषय विवेचन

16.4 बोध प्रश्नाः

16.5 सारांश

16.6 उपयोगी पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

किसी भी भाषा व साहित्य तथा उसके अंगों तथा उपांगों का ज्ञान होना छात्रों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। नाटक के प्रधान अंग संवाद, संगीत, नृत्य एवं अभिनय हैं। वैदिक साहित्य की समीक्षा से हमें पता चलता है कि वैदिक काल में इन सभी अंगों का किसी न किसी रूप में अस्तित्व था। ऋग्वेद में यम यमी, उर्वशी और पुरूरवा, सरमा और पणि कं संवादात्मक सूक्तों में नाटकीय संवाद का तत्त्व उपलब्ध होता है।

सामवेद में संगीत का तत्त्व तो है ही। अतः विद्वानों का मत है कि ऐसे ही संवाद कालान्तर में परिमार्जित एवं परिष्कृत होकर नाटकों के रूप में परिणत हो गये होंगें। भारतीय परम्परा अनुसार, जिसका वर्णन भरत प्रणीत नाट्य शास्त्र मैं है, नाटक की उत्पत्ति का वर्णन आख्यानक रूप से किया गया है। नाट्य शास्त्र में नाटकों की उत्पत्ति दैवी परम्परा द्वारा प्रतिपादित है। आचार्य भरत मुनि के अनुसार देवताओं की प्रार्थना पर मनोविनोदार्थ ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गीति, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर नाट्य वेद का निर्माण किया–

"यथा– जग्राह पाठ्य ऋग्वेदात्सामभ्यो गीतिमेव च।

यजुर्वेदा दभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।"

उपर्युक्त समीक्षा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्कृत नाटक ने अपने क्रमिक विकास में कुछ तत्त्व वैदिक साहित्य से लिये, कुछ इतिहास पुराणों से तथा कुछ लोकगीतों से। भास संस्कृत के प्रथम नाटककार

माने जाते हैं। इस प्रकार भारत में नाटक का पूर्ण विकास कई शताब्दियों में जाकर हुआ सारे मध्ययुग तथा अभी तक संस्कृत नाटक निरन्तर लिखे जाते हैं। बारहवीं शताब्दी के बाद संस्कृत नाटको का प्रचार क्रमशः कम होता गया। इसका एकमात्र कारण था कि कवि लोग अपनी रचनायं शिष्ट वर्ग के लिये करते थे, अतः जन साधारण के लिये दुर्बोध होने के कारण उनकी कृतियो का प्रचार कायम न हो सका। दूसरे देश मे विधर्मियों का शासन स्थापित हो जाने के बाद संस्कृत साहित्य के पठन–पाठन और सृजन को राजकीय प्रोत्साहन मिलना बन्द हो गया। तीसरे संस्कत का प्रयोग दैनिक व्यवहार में कम होता गया और उसका स्थान धीरे–धीरे प्रात्नीय भाषाओं ने ले लिया। फिर भी संस्कृत कई शताब्दियों तक नाटकों की भाषाबनी रही। प्रायः सभी संस्कृत नाटकों की रचना शैली सम्मान ही होती है। उनमें संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं का मिश्रित रूप से प्रयोग होता है। प्रायः अधिकांश संस्कृत नाटक सुखान्त ही होते हैं।

भारत की मौलिकता उसकी नाट्य कला में पूर्णतया अभिव्यक्त हुई है। नाटक भारतीय प्रतिभा का सर्वोत्तम आविष्कार है, तथा भारत की साहित्य कला का चरम निचोड़ भी।

16.2 उद्देश्य

1) विद्यार्थियों को संस्कृत नाटकों की क्रमिक विकासोन्मुखी पृष्ठभूमि से सम्यक् परिचित कराना।

2) संस्कृत नाटकों की सामान्य तथा विशेष मूलभूत विशेषताओं से भली भांति परिचित कराना।

3) विद्यार्थियों को प्राचीन तथा संस्कृत नाटकों के पठन–पाठन के लिये प्ररित करना।

4) संस्कृत नाटकों के माध्यम से छात्रों को अपनी समृद्धि सांस्कृतिक परम्परा तथा गौरव अतीत से परिचित कराना।

5) पाठकों के पठन–पाठन के अध्ययन से छात्रों में अभिनय की रूचि को जागृत करना।

6) नाट्य ज्ञान के माध्यम से छात्रों को भारतीय जीवन दर्शन से भली भान्ति परिचित कराना।

16.3 विषय विवेचन (संस्कृत नाटक की सामान्य विशेषतायें)

प्रायः अधिकतर संस्कृत नाटकों में अभिव्यक्ति पर ही अधिक बल दिया गया है। प्रायः सभी संस्कृत नाटक रस प्रधान होते हैं। इनमें वास्तविकता या कथावस्तु की यथार्थता पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है जितना की पाठकों तथा प्रेक्षकों के हृदय में से रस संचार करने के लिए चाहिए। कवि की विशेषता तथा विदग्धता केवल रसोद्रेक की पूर्णता में ही मानी जाती थी। रस को ही नाट्य कला का प्रधान अंग माना गया। प्रायः संस्कृत नाटकों में मुख्य रूप से दो ही रस श्रृंगार रस और वीर चित्रित किये जाते थे। पाश्चात्स नाटकों की भांति संस्कृत नाटकों में चरित्र चित्रण पर विशेष बल नहीं दिया गया। नाटकों में प्रायः ऐसी ही कथाओं का समावेश किया गया जो प्रेक्षकों की रूचि के अनुकूल हों। इस प्रकार संस्कृत नाटकों में प्रायः रस प्राधान्य, कवित्व एवं आदर्शवाद की सृष्टि हुई।

आशय यह नहीं कि संस्कृत नाटकों में वास्तविकता का अस्तित्व ही नहीं। वास्तव में समग्र संस्कृत काव्य साहित्य का उद्देश्य यथार्थ और आदर्श दोनों का समुचित समन्वय उपस्थित करना था। संस्कृत नाटकों में प्रायः पात्रों की संख्या निचिश्त नहीं रहती। यह पात्र प्रायः लौकिकवा दिव्य होते हैं। नाटककारों ने व्यक्तिमूलक (Individual)

पात्रों की अवतारणा की ओर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना समुदायगत (Typical) चरित्रों की सृष्टि की ओर।

भले ही कुछ चर्चित नाटककारों कालिदास, शूद्रक आदि की कृतियों में पात्र अपना विशिष्ट व्यक्तित्व रखतें हो, किंतु साधारणतया संस्कृत नाटककारों ने परम्परायुक्त चरित्रों का ही अधिक निर्माण किया है। स्वप्न वासवदत्ता, मालविकाग्निमित्र, रतनावली आदि नाटकों के नायक नायिकाओं के अस्तित्व में कोई विशेष अंतर प्रतीत नहीं होता। पात्र अपनी अपनी स्थिति के अनुरूप भिन्न भिन्न भाषाओं का प्रयोग करते हैं।

संस्कृत का प्रयोग केवल नायक अथवा उच्च वर्ग के पात्रों द्वारा किया जाता है। निम्न श्रेणी के लोग और स्त्री पात्र प्राकृत में ही बोलते है।

संस्कृत नाटकों में प्रायः स्थान और समय की अचिति भी नहीं पाई जाती।

(Unity of Time and Place)

मात्र दो नाटकों 'उरूभंग' और 'कर्णभार' इसके अपवाद हैं। पाश्चात्य नाटकों की भांति संस्कृत नाटकों का अंक विभाजन विभिन्न दृशयों में नहीं होगा। नाटकों की भाषा गद्य और पद्यमय दोनों प्रकार की होती है। पद्यों को प्रायः सस्वर पढ़ा जाता है।

पत्र–लेखन, अभिज्ञान, (पहचान चिन्ह) तथा विदूषक आदि कर अवतारणा में संस्कृत तथा पाश्चात्य नाटकों में समानता है। संस्कृत नाटक अभिनय के लिये लिखे जाते थे क्योंकि इसमें नाटकीय निर्देश तथा अभिनय संकेत भी दिये गये हैं। दर्शक दीर्घाओं में बैठने के नियम तथा क्रम भी बने थे। स्त्री पात्रों का अभिन्य नटियां किया करती थीं।

नाटक का कथानक ऐतिहासिक, पौराणिक या कवि कल्पना प्रसूत हुआ करता था। रंगमंच पर वध, युद्ध, विवाह भोजन यात्रा, मृत्यु आदि अशुभ या पीड़ाजनक व्यापारों का अभिनय निषिद्ध माना गया हे। संस्कृत नाटक प्रायः सुखान्त होते हैं, किन्तु ऐसा भी नहीं है कि संस्कृत में दुखान्त नाटकों का नितान्त अभाव है।

दुःखान्त नाटक का अर्थ यदि मृत्यु, शोक, पराभव आदि का चित्रण करना है तो 'कर्णभार,' 'उरूभंग,' 'वेणीसंहार' और 'चण्डकौशिश' आदि नाटक निश्चित रूप से दुःखान्त नाटक माने जा सकते हैं। संस्कृत नाटकों का आरम्भ प्रायः प्रस्तावना से होता है। प्रस्तावना में सूत्रधार, नट, नटी, विदूषक अथवा परिपार्श्व के साथ बातचीत प्रारम्भ करके नाटक की कथावस्तु कवि परिचय आदि देता हुआ नाटक का शुभारम्भ करता है। अंक की समाप्ति तक रंगमंच खाली नहीं रहता।

प्रथम अंक के प्रारम्भ में या दो अंकों के मध्य में 'विराकम्भक' का प्रयोग होता है जिसमें सम्वाद या स्वागत भाषण द्वारा दर्शकों को ऐसी घटनाओं की सूचना दी जाती है, जिनको रंगमंच पर दिखाया जाना आवश्यक नहीं होता किन्तु कथासूत्र के सफल निर्वाह के लिये जिनका जानना नितान्त अनिवार्य होता है।

नाटक की परिसमाप्ति भरत वाक्य से होती है। जिसमें प्रधान पात्र देश या समाज की उन्नति की शुभ कामना करता है। संस्कृत नाटकों में कम–से–कम पाँच और अधिक–से–अधिक 10 अंक होते हैं।

संस्कृत नाटकों में प्रकृति चित्रण पर विशेष बल दिया जाता है क्योंकि प्रकृति की रमणीयता नाटक की चारूता में अभिवृद्धि करती है। उपवन एवं उद्यान के लता, वृक्ष, पशु, पक्षी, क्रीडा सरोवर आदि नाटक के अभिन्न एवं सजीव अंग होते हैं।

संस्कृत नाटकों में अन्तः प्रकृति के साथ–साथ बाह्य प्रकृति का भी विशद् एवं सुन्दर चित्रण किया जाता है। सूक्ष्म एवं सुकुमार भावनाओं के चित्रण के लिये बाह्य प्रकृति चित्रफल का कार्य करती है। नाट्यशास्त्र में भरत मुनि का कहना है कि नाटक दुःख परिश्रम अथवा शोक से त्रस्त लोगों के लिये विश्राम और विनोद का साधन है–

"दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्

विश्राम जननं लोके नाद्यमेतद्भविष्यति।।"

महाकवि कालिदास ने नाटक को भिन्न रूचि वाले लोगों का एक सामान्य मनोविनोद बतलाया है–

"नाटकं भिन्नरूचेजर्ननस्य बहुधाप्येकं समारापत्रम्"

भवभूति के अनुसार–विभिन्न रसों का प्रयोग, कमनीय कार्य–कलापों का अभिनय, पराक्रम और प्रणय का चित्रण, विचित्र कथावस्तु तथा निपुण सम्वादों से युक्त नाटक ही उत्कृष्ट कहे जाते हैं।

आचार्य धनञ्जय ने, अपने ग्रंथ 'दशरूपक' में कहा है नाटक तो आनन्दातिरेक की विशुद्ध अभिव्यक्ति मात्र होते हैं जो अल्पमति उन्हें इतिहास आदि के समान व्यत्पत्तिजनक बौद्धिक ग्रंथ ही मानता है। उसे कलाजन्य सौंदर्य अथवा आनन्द का लेशमात्र भी बोध नहीं।

16.4 बोध प्रश्नाः

1. संस्कृत नाटकों की कतिपय सामान्य विशेषताओं का उल्लेख करें।
2. संस्कृत में प्रमुख दुःखान्त नाटकों के नाम बताये।
3. संस्कृत नाटकों में कम–से–कम और अधिक–से–अधिक कितने अंक होते हैं?
4. संस्कृत नाटकों की रचना का कलात्मक प्रभाव क्या है?
5. संस्कृत नाटकों में 'प्रस्तावना' और 'विश्कंभक' की अवतारणा क्यों की जाती है?

16.5 सारांश

इस पाठ के अन्तर्गत आपने संस्कृत नाटकों की सामान्य विशेषताओं के विषय मे जो जानकारी प्राप्त की उसका सारांश इस प्रकार होगा–

संस्कृत नाटक प्रायः रसप्रधान होते हैं और उनमें प्रायः श्रृंगार और वीर रसों का मुख्य रूप से चित्रण किया जाता हैं।

अंको की संख्या कम–से–कम पाँच और अधिकाधिक 10 होनी चाहिए।

प्रायः सभी संस्कृत नाटक सुखान्त होते हैं किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि संस्कृत नाटकों में दुःखान्त नाटकों का नितान्त अभाव है। संस्कृत नाटकों में पात्रों की संख्या निश्चित नहीं रहती।

भाषा मिश्रित होती है अधिकतर संस्कृत और प्राकृत भाषा का ही समावेश होता है। संस्कृत नाटकों का कथानक प्रायः पौराणिक कवि कल्पित या ऐतिहासिक ही हुआ करता है।

संस्कृत नाटकों में स्थान तथा समय की निश्चितता भी कम पाई जाती है।

संस्कृत नाटकों में प्रायः तीन प्रकार के मंगला चरण द्वारा नाटक को आरम्भ करने की प्रथा है। प्रकृति चित्रण संस्कृत नाटकों का आवश्यक अंग है। इसमें प्रकृति दोनों रूपों अन्तर और बाह्य का विशद् चित्रण किया जाता है।

संस्कृत नाटकों की रचना का कलात्मक प्रभाव यह है कि इनके द्वारा दुःख, परिश्रम अथवा शोक संतप्त लोगों को विश्रान्ति और मनोविनोद का सहज साधन उपलब्ध हो जाता है। वास्तव में नाटकों की रचना केवल मात्र विशुद्ध आनन्दातिरेक की अद्‌भुत अभिव्यक्ति मात्र है।

16.6 उपयोगी पुस्तकें

इस पाठ की विशद् जानकारी हेतु तथा संस्कृत नाटक एवं नाटककारों के विषय मे अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु आप निम्नलिखित पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं–

1. संस्कृत नाटक समीक्षा (डॉ0 इन्द्रपाल सिंह इन्द्र)
2. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा (चन्द्रवली पांडेय)
3. संस्कृत वाङगमय (डॉ0 बलदेव उपाध्याय)
4. प्राचीन संस्कृत नाटक (राम जी उपाध्याय)
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास (डॉ0 बलदेव उपाध्याय)
6. संस्कृत काव्यकार – (डॉ0 हरिदत्त शास्त्री)

B.A. II SEM. **PAPER SANSKRIT**

Unit — IV **Lesson No. 17**

***Writer* : Dr. Ram Bahadur**
Deptt. of Sanskrit
Jammu University, Jammu

17 (क) शूद्रक नाटककार के रूप में

17.0 पाठशीर्षक

17.1 उद्देश्य

(क) विद्यार्थियो को शूद्रक के नाटक में उपलब्ध जीवनदर्शन से परिचित कराना

(ख) शूद्रक के नाटक मे उपलब्ध उपदेशों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

(ग) शूद्रक की नाट्यकला से विद्यार्थियों को परिचित कराना

17.2 पाठ परिचय

17.2.0 मृच्छकटिक का कथानक वर्णन

17.2.1 पात्रों का चरित्र–चित्रण

17.2.2 सामाजिक विवरण

17.2.3 नाटकीय तत्त्वों का विवरण

17.2.4 दशा निरूपण

17.2.5 कला विवरण

17.2.6 धार्मिक मान्यताओं का निरूपण

17.2.7 सूक्ति विवरण

17.2.8 रस विवेचन

17.2.9 शूद्रक की भाषा शैली

17.3 सारांश एवं उपसंहार

17.4 परीक्षोपयोगी प्रश्न

17.5 उपयोगी पुस्तकें

17 (क) "शूद्रक–नाटककार के रूप में"

17.0 शूद्रक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे। संस्कृत नाट्य जगत में भास के बाद इनका नाम आता है। इनकी एक मात्र रचना "मृच्छकटिकम्" है, जो भास के दरिद्रचारूदत्तम् से प्रभावित है। विद्वानों ने शूद्रक को कालिदास से पूर्ववर्ती एवं भास से परवर्ती नाटककार घोषित किया है। वास्तव में मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रंथ है जो रूपक का एक भेद है। प्रकरण में नाटक की अपेक्षा इतिवृत्त (कथानक) लौकिक तथा कविकल्पित होता है, श्रृंगार मुख्य रस होता है, ब्राह्मण, अमात्य, या वणिक् में से कोई एक नायक होता है। वह नायक धीरप्रशान्त होता है तथा विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म, अर्थ एवं काम में परायण होता है। प्रकरण की नायिका कुलस्त्री या वेश्या होती हैं। इसमें धूर्त, जुआरी, विट, चेट आदि पात्रों का भी विवरण होता है। यह प्रकरण नाटक का ही एक परिवर्तित रूप है अतः शेष सन्धि, प्रवेशक आदि नाटक के ही समान होते हैं। मृच्छकटिकम् के अध्ययनोपरान्त यह कहना समीचीन होगा, कि इसमें शूद्रक ने चारूदत्त की अपूर्ण कथा को पूर्ण रूप प्रदान किया। इसमे दस अंक हैं जबकि भास के चारूदत्त नामक नाटक में चार अंक हैं जिसके कथानक का आधार लेकर शूद्रक ने मृच्छकटिक की रचना की। इसमे चारूदत्त एवं वसन्त सेना तथा, सर्विलक एवं मदनिका के प्रेम का विवरण शूद्रक ने विभिन्न परिस्थितियों का चित्रांकन करते हुए दिया है, जिसमें शूद्रक की एक सफल नाटककार की भूमिका देखने को मिलती है।

17.2.0 शूद्रक ने मृच्छकटिक के कथानक को अत्यन्त सुरूचिपूर्ण ढंग से विवर्णित किया है। निःसंदेह संस्कृत नाटकों मे सूद्रक अनूठे ढंग के नाटककार हैं। उन्होंने बड़ी ही कुशलता से प्रेम के कथानक को राजनीतिक घटनाओं के साथ सम्बन्ध किया है। मृच्छकटिक के प्रमुख पात्र हैं चारूदत्त और बसन्तसेना। नाटक का संक्षिप्त कथानाक इस प्रकार है उज्जयिनी की प्रसिद्ध वेश्या बसन्तसेना चारूदत्ता नामक–व्यापारी ब्राह्मण से प्रेम करती है उधर राजश्यालक शकार बसन्तसेना पर अनुरक्त है। वह उसे अपने वश में करना चाहता है। एक रात वह बसन्तसेना की पीछा करता है, और बसन्तसेना भागकर चारूदत्त के घर में छिप जाती है। शकर के भय से वह अपने आभूषण चारूदत्त के घर में रख जाती है। शर्विलक चारूदत्त के घर में सेंध लगाकर उन अभूषणों को चुरा लेता है। वह बसन्तसेना की दासी मदनिका का प्रेमी है। शर्विलक उन आभूषणों को बसन्तसेना को सौंपकर मदनिका को सेवा मुक्त कराता है। चारूदत्त की पत्नी धूता बसन्तसेना को अपने घर से चोरी हुए आभूषणों के बदले अपनी रत्नावली दे देती है। एक दिन चारूदत्ता का पुत्र रोहसेन अपनी मिट्टी की गाड़ी (मृच्छकटिका) लेकर बसन्त सेना के घर जाता है, और पड़ौसी के बच्चे की सेने की गाड़ी लेने की जिद करता है इस पर बसंत सेना और आभूषणों से उसकी गाड़ी भर देती है और उससे सोने की गाड़ी बनवा लेने को कहती है। इसी घटना पर इस नाटक का नामकरण हुआ है। चारूदत्त और बसन्तसेना के पुष्पकरण्डक नामक उद्यान में मिलने का निश्चय होता है। शकार को इसका पता लग जाता है। अतः चारूदत्त के साथ वह भी अपना शकट (यान या गाड़ी) लेकर उद्यान में पहुँच जाता है। बसन्तसेना भ्रमवश शकार के शकट में बैठ जाती है और राजा पालक के बंदीगृह से निकलकर भागा हुआ आर्यक चारूदत्त के शकट में बैठ जाता है। जब बसन्तसेना पुष्पकरण्डक उद्यान में पहुंचती है, तो वहां चारूदत्त के स्थान पर दुष्ट शकार मिलता है, जो बसन्तसेना से अपना प्रणय स्वीकार करने को कहता है, बसन्तसेना को मना करने पर वह उसका गला घोंट देता है। उसी समय

संवाहक नामक बौद्ध भिक्षु वहाँ पहुँचकर उसे पुनजीर्विज करता है। उधर, शकार चारूदत्त पर बसन्तसेना के वध का अभियोग लगाता है, जिससे उसे मृत्युदण्ड मिलता है। इसी बीच चारूदत्त का मित्र आर्यक राजा पालक की हत्या कर स्वयं राजा बन बैठता है और चारूदत्त को मुक्त कर शकार को बंधवा लेता है।

किंतु उदार चारूदत्त के आग्रह पर शकार को क्षमा कर देता है अंत में चारूदत्त और बसन्तसेना का विवाह हो जाता है। वैसे तो नाटककार कृत मृच्छकटिकम् की कथवस्तु कल्पित है लेकिन शूद्रक ने इसकी कथावस्तु को ऐसा रूप प्रदान किया है कि वह लोक जीवन में घटित घटनाओं की यथार्थ झांकी प्रस्तुत करती दिखती है। इसमें नाटकीयता के साथ काव्य का भी समन्वय द्रष्व्य है। कथावस्तु में प्ररंभ से लेकर अंत तक गतिशीलता विद्यमान रहती है, संवाद, सजीव हैं, लम्बे कथोपकथन का आभाव, संवादों में यथार्थता और स्वाभाविकता का दर्शन होने के साथ साथ व्यंग्य और हास्य का सुंदर पुट भी दर्शनीय है। साथ ही इसकी कथा आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है।

17.2.0 शूद्रक ने अने इस ग्रंथ में समाज के सभी वर्गों के दोषों का भाण्डाफोड़ किया है। नाटक में उच्च से उच्च तथा निम्न से निम्न वर्ग के पात्रों के चरित्र का चित्राण सफलतापूर्वक करना शूद्रक जैसे नाटक कार के ही वश की बात थी। राजा का साला शकार, उसके अनुयायी विट एवं चेट, दरिद्र, किंतु उदार ब्राह्मण युवा चारूदत्त, गुणानुरागिणी गणिका बसन्तसेना, जुएँ का दीवाना कार कर भागा हुआ संवाहक, चौरकर्मनिपुण शर्विलिक आदि सभी पात्रों का यथार्थ चित्रण नाटककार शूद्रक ने सफलता पूर्वक किया है। शूद्रक ने जुआरी संवाहक से जुएं की प्रशंसा करवाता हुआ लिखा है, कि जुआ मनुष्य के लिए बिना सिंहासन का राज्य है "द्यूतं हि नाम पुरूषस्य अहिंसासनं राज्यम्।" साथ ही उसके लाभ हानि को दिग्दर्शित करते हुए शूद्रह ने मध्यमवर्गीय परिवार वालों को सचेष्ट भी किया है कि अंत में जुए से सर्वनाश ही होता है अतः जिसे घोर कष्ट और घेर अपमान सहने का अभ्यास हो वही द्यूत क्रिया में प्रवृत्त हो यथा–

द्रव्य लब्धं द्यूतेनैव, दारा मिंत्र द्यूतैनैव।

दत्तं भुक्तं द्यूतेनैव, सर्व नष्टं द्यूतैनैव।।

अपिच–

यः स्तब्धं दिवसान्तमानतशिरा नास्ते समुल्लम्बितो।

यस्योद्घर्षण लोष्ठकैरपि पृष्टे न जातः किणः।

यस्यैतच्च न कुक्कुरैरहार्जघ्ङान्तर चर्व्यतके।

तस्यात्यायत कोमलस्य सततं द्यूतप्रसग्ङेन किम्।। मृ0 2/12

17.2.2 शूद्रक ही ऐसे नाटककार है जिसके नाटक में सामाजिक जीवन की अपूर्व रोचकता, घटनाओं का घात–प्रतिघात तथा कथानक का क्रमिक विकास पाया जाता है, उसमें जीवन की घटनाओं का विविध एवं वास्तविक स्वरूप उपस्थित किया गया है, वह उसे रंगमंच के लिए सर्वथा उपयुक्त बना देता है। विदूषक के पूछने पर चारूदत्त जीवन का यथार्थ कह बैठता है कि मित्र! दुःखों का अनुभव करने के अंतर सुख अच्छा लगता है, जिस प्रकार गहन अंधकार में दीपक का दर्शन, किंतु जो मनुष्य सुख भोगने के अंतर निर्धनता को प्राप्त होता है, वह शरीर धारण किये हुए भी मृतक के समान जीवन व्यतीत करता है। यथा–

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते।

घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।

सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां

धृतः शरीरेण मृतः पश्यति।।

निःसंदेह समाज में निर्धनता एक कोढ़ है। उसी निर्धनता के बारे में जब विदूषण्क चारूदत्त से पूछता है, तो वह कह बैठता है कि उसे निर्धनता और मृत्यु में मृत्यु अच्छी लगती है क्योंकि मृत्यु में थोड़ा कष्ट है, और निध् निता कभी समाप्त न होने वाला दुःख है। निश्चित रूप से शूद्रक ने तत्कालीन समय में व्याप्त निर्धनता और निर्धनता से युक्त प्राणियों की दशा को देखा होगा, अनुभव किया होगा, तभी उसने ऐसे मार्मिक विचार व्यक्त किये होंगे कि निर्धन होने से अच्छा तो यह उचित है कि मृत्यु ही हो जाये, कम से कम घुट घुट के जीवन तो नहीं जीना पड़ेगा, जैसी की स्थिति आज भी निर्धन व्यक्तियों के जीवनचर्या से विदित होती है, निर्धनता स संबंधित कितनी मार्मिक उक्तियां शूद्रक ने की हैं–

1) दारिद्रयान्माणाद्वा मरणं मम रोचते न दरिद्रयम्। अल्पक्लेशं मरणं दरिद्रयमनन्तकं दुःखम्।।

2) दारिद्रपुरूषसंक्रान्तमनाः खलु गणिका लोकाऽवचनीया भवति।

3) दारिद्रयाद् ह्रियेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसः।

17.2.3 शूद्रक ने अपने ग्रन्थ में नाटकीय तथ्वों का सन्निवेश भी किया है। रूपक में वस्तु या इतिवृत्त दो प्रकार का होता है (1) आधिकारिक (2) प्रासग्ङिक। प्रधान नायक से सम्बद्ध इतिवृत्त आधिकारिक कहलाता है, और आधिकारिक इतिवृत्त की सहायक प्रासग्ङिक कहलाती है। मृच्छकटिक में चारूदत्त और बसन्तोना की प्रेम कथा अधिकारिक (मुख्य) है जबकि राजा पालक और आर्यक की कथा प्रासग्ङिक है। प्रासग्ङिक कथा दो प्रकार की होती है पताका और प्रकारी। जो प्रासग्ङिक वृत्त छोटा होता है उसे प्रकरी कहते हैं। इनके साथ ही मुख्य कथा के विकास के लिए तीन तत्व आवश्यक होते हैं–बीज, बिंदु और कार्य। इन पांचों को नाट्यशास्त्र में अर्थ प्रकृति कहा जाता है। इनमें बीज, बिंदु, कार्य प्रत्येक रूपक में अनिवार्य है किंतु पताका को होना अनिवार्य नहीं है, लेकिन शूद्रक ने पांचों तत्वों को अपने ग्रंथ में स्थान दिया है।

कार्य का हेतु जो अत्यंत अल्पमात्रा में होता है तथा अनेक प्रकार से विकसित हुआ करता है, बीज कहलाता है। मृच्छकटिक के प्रथम अंक में शकार की यह उचित "एषा गर्भदासी कामदेवायत्नात् प्रभृति तस्य दरिद्रचारूदत्तस्य अनुरक्ता" से "बसन्तसेना का चारूदत्त के प्रति अनुराग प्रकट होता है, यही इस प्रकारण की कथावस्तु का बीज है। किसी अवान्तर घटना के द्वारा द्यूतकारों के वर्णन से मूलकथा विच्छिन्न होने लगती है किंतु कर्णपरक से चारूदत्त का प्रावारक पाकर बसन्त्सेना प्रसन्न होती है, और मूलकथा का तांता जुड़ जाता है, यहाँ कर्णपूरक सम्बंधी घटना "बिंदु" है। कथा का अंतिम उद्देश्य, जिसकी प्राप्ति होते ही समस्त प्रयत्न समाप्त हो जाते हैं, कार्य कहलाता है। चारूदत्त का बसन्तसेना को वधू रूप में स्वीकार करना मृच्छकटिक की कथा वस्तु का कार्य है। शर्विलक का वृत्त मूलकथा के साथ बहुत दूर तक चलता है, अतः यह मूलकथा की पताका है, और भिक्षुक का वृत्तांत तथा चन्दन का वृत्तन्त मूलकथा की प्रकरी कहा जा सकता है।

इतिवृत्त के विकास की दृष्टि से कार्य की पाँच अवस्थाएँ होती है, आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्तयाशा, नियताप्ति और फलगाम। शूद्रक ने इन पांचो अवस्थाओ का निर्देश मृच्छकटिक में किया है। जिसमें मुख्य फल की प्राप्ति के लिए उत्सुकता दिखलाई जाती है, वह आरंभ कहलाता है–"जैसे प्रथम अंक में आश्चार्यम्। जातीकुसुमवासितः प्रावारकः–मन्दभागिनी खल्वहं तवाभ्यन्तरस्य" इत्यादि से बसन्तसेना की उत्सुकता प्रकट होती है तथा प्रविश गृहमिति प्रतोद्यमाना न चलति भाग्यकृतां दशामवेक्ष्य इत्यादि में चारूदत्त का औत्सुक्त प्रकट होता है अतः यह कार्य की आरम्भवस्था है। फल की प्राप्ति के लिए जो शीघ्रता पूर्वक उपाय किये जाते हैं यह प्रयत्नावस्था कहलाती है। मृच्छकटिक में अलंकार न्यास से लेकर पच्चम अंक के अंत तक प्रयत्नावस्था है। उपय और विघ्नों के होते होते जब फलप्राप्ति की संभावना हो जाती है। वह प्राप्त्याशा–अवस्था कहलाती है। मृच्छकटिक में छठे अंक से लेकर दशम् अंक में बसन्तसेना की इस उक्ति "आर्या एषा अहं मन्दभागिनी गस्याः कारणदेष व्यापद्यते। पर्यात प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था है। इसमें फल प्राप्ति के प्रति आशा और निराशा बनी कहती है। विघ्नों के दूर चले जाने पर जब फलप्राप्ति का निश्चय हो जाता है, वह अवस्था नित्यप्राप्ति कहलाती है। दशम अंक में–"का **पुनस्तवरितमेषांसपतता चिकुरभोण"** चाण्डाल की इस उक्ति से बसन्तसेना के आगमन की सूचना मिलती है, तथा चारूदत्त की प्राणरक्षा होती है, फिर पालक के मारे जाने पर शकार भी शरण में आ जाता है और चारूदत्त धूता को अग्नि में कूदने से बचा लेता है, इस प्रकार समस्त विघ्न दूर होने से फलप्राप्ति का निश्चय हो जाता है। फलागम कार्य की वह अवस्था है जहाँ समग्र फल की प्राप्ति हो जाती है, जब शर्विलक यह घोषणा करता है, कि राजा आर्यक बसन्तसेना को वधूपद से सुशोभित करते हैं यही फलागम की अवस्था है।

किसी भी नाटक में अर्थप्रकृतियों और कार्यावस्थाओं के योग से नाटकीय इतिवृत्त के पांच भाग हो जाते हैं, जिन्हें पाँच सन्धियाँ कहा जाता है। शूद्रक ने इन पाँचों सन्धियों का प्रयोग भी अपने मृच्छकटिक में किया है। एक प्रयोजन से अन्वित कथाओं का किसी एक अवान्तर प्रयोजन से सम्बन्ध होना सन्धि कहलाता है ये संधियाँ पाँच हैं 1. मुख, 2. प्रतिमुख, 3. गर्भ, 4. विमर्श, 5. उपसंहति या निर्वहण। बीज (अर्थप्रकृति) और आरम्भ (कार्यावस्था) के संयोग का नाम मुखसन्धि है। यहाँ बीज नाना रसों की अभिव्यंजना सहित उदित होता है। मृच्छकटिक के प्रथम अंक में "चतुरो मधुरश्चायमुपन्यासः" बसन्तसेना के इस स्वगत कथनपर्यन्त मुखसन्धि है। अर्थात् बिंदु और प्रयन्त के संयोग से प्रतिमुख सन्धि होती है। प्रथम अंक में "यद्येवमहमार्यस्यानुग्राह्या" बसन्तसेना की इस उक्ति से लेकर पंचम अंक से अंत तक प्रतिमुख सन्धि है। गर्भसन्धि –दिखलाई देकर नष्टहो जाने वाले बीज का बार बार अन्वेषण है। यह पताका और प्राप्त्याशा के संयोग से होती है, किंतु पताका का होना–अनिवार्य नहीं है, प्राप्त्याशी तो होती ही है। मृच्छकटिकम् में षष्ठ अंक में आरम्भ में तथा दशम अंक में चाण्डाल के हाथ से खड्ग छूट जाने के पश्चात् बसन्तसेना के "आर्या एषा अंह मन्दभागिनी" इत्यादि कथन तक गर्भसन्धि है। विमर्श सन्धि को अवमर्श सन्धि भी कहते है। इस सन्धि में गर्भ सन्धि की अपेक्षा बीज अधिक विकसित हो जाता है और साथ ही शाप आदि के द्वारा विध्युक्त भी दिखलायी देता है, इसमे प्रकरी नामक अर्थप्रकृति और नियताप्ति (कार्यावस्था) का योग होता है, किन्तु प्रकरी का होना अनिवार्य नहीं है। दशम अंक में "त्वरितं का पुनरेषा" इत्यादि चाण्डाल की उक्ति से लेकर "आश्चर्य! पुनरूज्जीवितोऽस्मि" शकार की इस उक्ति तक विमर्श सन्धि है। निर्वहण सन्धि में इधर उधर बिखरे हुए अर्थों का एक प्रधानफल में उपसंहार कर दिया जाता है। कार्य (अर्थप्रकृति) और फलागम के मिलन का नाम ही निर्वहण सन्धि है दशम अंक में "नेपथ्ये कलकलः" से अन्त तक निर्वहण सन्धि है। इस प्रकार नाट्यशास्त्रीय सम्पूर्ण तत्त्वों का सन्निवेश शुद्रक ने मृच्छकटिक में किया है।

17.2.4 शूद्रक ने नाट्यशास्त्रीय तत्त्वों के साथ–साथ तत्कालीन समाज की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दशा का निरूपण भी मृच्छकटिक में किया है। उस समय समाज भिन्न–भिन्न हो रहा था, जुएँ की प्रथा भी थी, यह खेल वैद्य था, और जुआरियों के अपने नियम थे। जिसका पालन प्रत्येक जुआरी के लिए आवश्यक था। समाज में वेश्याओं का भी योगदान था। समाज के प्रतिनिष्ठत व्यक्ति भी वेश्याओं से सम्बन्ध रखते थे जैसा कि चारूदत्त और बसन्तसेना क सम्बन्ध से प्रतीत होता हैं, हाँ समाज की दृष्टि से यह अवश्य ही बुरा समझा जाता था यही कारण है कि जब नवम् अंक में नयायाधीश चारूदत्त से पूछते हैं आर्य! गणिका तव मित्रम्? तो चारूदत्त लज्जित हो जाता है। इससे सिद्ध होता है कि वेश्याओं को समाज में घृणित समझा जाता था, परन्तु उस समय अनुभवशी गणिकाओं को पवित्र वधू पद के प्रति समाज में अच्छी भावना नहीं थी। यथा– "कायस्थसर्पास्पदम्" से सिद्ध होता है। पर्दा प्रथा नहीं थी, परन्तु प्राकृत जनों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। जातियां पृथक–पृथक मुहल्लों में निवास करती थीं पुरूष कई विवाह कर सकते थे, स्त्रियों में आभूषण प्रचलन अधिक था। जन्म से जाति मानने एवं जातिगत अभिमान की स्थितियां समाज में विद्यमान थीं। मीरक और चन्दनक के विवाद में हमें उसकी झलक मिलती है। ब्राह्मण श्रेष्ठ जाति थी उन्हें समाज में विशेष अधिकार एवं सम्मान प्राप्त था "यथा–अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मनुरब्रवीत्।" से स्पष्ट होता है। इन वर्णनों से जाहिर है कि शूद्रक को सामाजिक विवरण में दक्षता हासिल थी।

शूद्रक ने मृच्छकटिक में तत्कालीन राजनैतिक अवस्था का भी निरूपण किया है। उस समय राजनैतिक स्थिति अच्छी नहीं थी। राजा स्वेच्छाचारी, एवं विलासी होता था। वह राजमहिषी के अतिश्रिक्त अन्य स्त्रियां भी रखता था। राजा के अत्याचारों से जनता में क्षोभ उत्पन्न होने का ही परिणाम था कि चन्दनक ने आर्यक को जाने दिया, जिसे राजा पालक ने जबरदस्ती बन्दीगृह में डाल रखा था, और बाद में वहीं आर्यक पालक की हत्या कर राजा बन बैठा। शासन प्रबन्ध शिथिल होने के कारण कोई भी षड्यन्त्र सहज ही सफल हो सकता था, इस षडयन्त्रों में चोर, जुआरी, विद्रोही, राजकर्मचारी, असंतुष्ट पदाधिकारी सम्मिलित हो जाते थे। यथा– "ज्ञातीन् विटान् स्वभुज विक्रमलब्ध ावर्णान्" से स्पष्ट हो जाता है। राजा को ऐसे षड़यंत्रों का भय रहता था। राजा ही न्याय का अंतिम निर्णय करता था, उसकी सहायता के लिए मन्त्री, न्यायाधीश और अन्य दण्डाधिकारी नियुक्त होते थे। रजकुल में कोई हर्षोत्सव होने पर अपराधियों को दण्ड युक्त भी किया जाता था। यथा– "कदापि राज्ञः पुत्रों भक्ति, तेन वृद्धिमहोत्सवेन सर्ववध्यानां मोक्षो भवति" से मालूम होता है। अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देने का विधान था। यथा–शूली पर चढ़ाना, तलवार से सिर काटना, कुत्तों से नोचवाना, आरा से चीरकर प्राणदण्ड देना।

शूद्रक ने आर्थिक स्थिति का रूपांकन भी मृच्छकटिक में किया है। उस समय देश आर्थिक दृष्टि से समृद्धशाली था। व्यापार उन्नत था, जहाजों से समुद्र पार तक व्यापार होता था। धनिकों के वहाँ सुवर्णराशि और अनेक प्रकार के सुवर्णाभूषण थे। चारूदत्त की पत्नी धूता की "चतुः समुद्रभसारभूता"। रत्नमाला और बसनतसेना के स्वार्णाभूषण इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। धनी लोगों के पास घोड़, हाथी भी थे। बसन्तसना के पास "खुण्टमोटक" नाम का हाथी था।

17.2.5 शूद्रक ने कलाओं का निरूपण भी अपने इस ग्रंथ मे किया है। संगीत कला उन्नत दशा में थी चारूदत्त रेभिल के यहाँ संगती सुनने जाता था। वाद्यो में वीणा, बाँसुरी, दर्दुर, मदंग, और पणव प्रमुख थे। चित्रकला का उस समय प्रचार था। चतुर्थ अंक में बसन्तसेना चारूदत्त का चित्र मदनिका को दिखलाती है। संवाहन एवं चौर कर्म को भी कला ही माना जाता था। मूर्तिकला का विवरण भी शूद्रक ने दिया है। यथा– "कथं काष्ठमयी प्रतिमा........ शैल

प्रतिमा" से मालूम होता है।

17.2.6 शूद्रक ने धर्मिक मान्यताओं एवं विश्वासों का विवरण भी मृच्छकटिक में किया है। उस समय देश में वैदिक धर्म उन्नत अवस्था में था। अनेक प्रकार के यज्ञ कियो जाते थे जैसे कि "मखशतपरिपूत" वाक्य से ध्वनित होता है। पूजा, पाठ, बलि, तर्पण, क्रियाओं का विशेष महत्त्व था। देवपूजा, बलि, और तप में चारूदत्त का अटल विश्वास दिखलाई देता है, और वह उनकी पूजा करना नित्य क र्विय समझता है। यथा–

तपसा मनसा वाग्भिः पूजिताबलिकर्मभिः।

तुष्यन्ति शमिनां नित्यं देवता किं विचारितैः।।

नागरिक जन भांति–भांति के व्रत एवं उपवास रखते थे, ब्राह्मणों को दान देते थे। निम्न वर्ग के लोग भी धर्मभीरू थे। चाण्डाल की भी अपने देवताओं क प्रति श्रद्ध थी। जैसे दशम अंक में चाण्डाल सह्यवासिनी का स्मरण करता है। बौद्ध धर्म ह्यसोन्मुख था। बौद्ध भिक्षु का दर्शन अपशकुन समझा जाता था। "यथा– अनाभ्युदयिकं श्रमणकदर्शनम्" से स्पष्ट है। बौद्धों के साथ बौद्ध भिक्षुणियां भी बिहार में रहती थीं। उनका एक कुलपति था। धर्मिक मान्यताओं के साथ अन्य प्रकार के विश्वास प्रचलित थे। जैसे कुछ ग्रहों के योग को अनिष्ट समझा जाता था। अर्थात् उस समय ज्योतिष पर भी लोगों की आस्था की। यथा–चारूदत्त के कथन पर अधिकरणिक कहता है कि मंगलग्रह है विरूद्ध, जिसके ऐसे दुर्बल वृहस्पति के समीप धूमकेतू के समान यह दूसरा ग्रह उपस्थित हुआ। यथा–

अङगारकविरूद्धस्य प्रक्षीणस्य वृहस्पतेः।

ग्रहोऽयमपरः पार्श्वो धूमकेतुरिवोत्थितः।।

ज्योतिष के साथ–साथ शकुन विवरण को भी शूद्रक ने अपने ग्रंथ मे स्थान दिया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय समाज में अपशकुनों का विचार भी किया जाता था। यथा–चारूदत्त को फांसी मिलने पर वह कहता है कि उसकी बायीं आंख फड़क रही है, कौआ रूखे स्वर में बोल रहा है, और सर्प क्रोधपूर्वक उसकी तरफ आ रहा है, बायीं भुजा बार–बार कांप रही है। यथा

रूक्षस्वरं वासति वायसोऽय–

ममात्या भृथ्या मुहुराह्वयन्ति।

सव्यं चनेत्रं स्फुरति प्रसह्य

ममानिमित्तनि हि खेदयन्ति 119/10,

17.2.7 शूद्रक ने लोक जीवन को दिशा निर्देश करने वाली एवं लोकग्राही सुन्द्र उक्तियों का प्रयोग भी अपने इस ग्रंथ मे किया है यथा– अनतिक्रमणीय भगवती गोकाम्या ब्राह्मणकाम्या च, अपण्डितास्ते पुरूषा मता में ये स्त्रीषु च श्रीषु विश्वसन्ति। अपक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्, अर्थतः पुरूषः नारी या नारी साऽर्थतो पुमान् ह्रदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यातम्, गणयिन्त न शीतोष्णं रमणाभिमुखाः स्त्रियः गुणः खल्वनुरागस्य कारणं न पुनर्बलात्कारः,

गुणर्युक्तों दरिद्रोऽपि नश्ररैगुणैः समः, छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भावन्ति, बहुदोषा हि शर्वरी, सुखंहि दुःखान्यनुभूय शोभते इत्यादि सैकड़ों उक्तियाँ है जो मानव मन को प्रभावित किये बिना नहीं रहतीं। इससे स्पष्ट होता है कि नाटककार शूद्रक का मानव हृदय एवं समाज का यथेष्ट ज्ञान था।

17.2.8 शूद्रक ने अपने इस ग्रंथ में श्रृंगार, हास्य, करूण रस का सन्निधान किया है। श्रृंगार विवरण बसन्तसेना एवं चारूदत्त के वर्णन में, हास्य का वर्णन–विट के कथन में एवं करूण रस का प्रसंग बसन्तसेना के गलामर्दन विवरण एवं चारूदत्त को फांसी मिलने पर धूता के क्रिया कलाप में दिखालाई पड़ते हैं। इसमें अंगीरस सम्भोग श्रृंगार। है। शूद्रक ने प्रायः लघु कलेवर के छन्दों का प्रयोग किया है। अलंकारों का मनोरम विन्यास करना उनकी वैदग्धता को ही प्रमाणित करता है। यथ–हाथी बन्धनस्तम्भ में बांधकर रोका जाता है, और घोड़ा लगाम से, इसी प्रकार स्त्री हृदय से अनुरक्त होने पर वशीभूत होती है। **यथा–**

आलाने गृह्यते हस्ती बाजी वल्गासु गृह्यते।

हृदयं गृह्यते नारी यदिदं नास्ति गम्यताम्।।

17.2.9 भाषा का सारल्य स्थापन नाटककार की विशिष्ट विशेष्ता होती है। शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् के गद्य एवं पद्य दोनों सरल भाषा में सृजित है। उनके श्रेष्ठ पात्र संस्कृत एवं निम्न पात्र प्राकृत की अनेक विधाओं का प्रयोग व्यवहार में अपनाते हैं। शूद्रक ने वैदर्भी रीति को प्रधान रूप से अपनाया है कहीं–कहीं गौड़ी रीति के भी दर्शन मृच्छकटिक में होते हैं। वर्णन अपेक्षाकृत छोटे है। इसमें कल्पना की ऊँची उड़ानों का सर्वथा अभाव है तथापि वर्णनों में सहृदयता और रोचकता की भरमार देखने को मिलती है। इस प्रकार उनकी शैली में सरलता, स्पष्टता, और अकृत्रिमता के दर्शन होते हैं।

17.3 संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शूद्रक एक सफल नाटककार होने के साथ ही कुशल कवि भी हैं। उन्होंने अपने इस ग्रंथ मे समाजोपयोगी सम्पूर्ण बिन्दुओं का दिग्दर्शन कराने के साथ–साथ सभी नाटकीय तत्त्वों का विवरण प्रस्तुत किया है। प्रकृति वर्णन, वर्षा वर्णन, न्यायालय वर्णन, नारी स्वभाव वर्णन, द्यूत वर्णन आदि अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो सहृदय पाठक का हृदय बलात् हर लेते हैं। शूद्रक का मनोवैज्ञानिक निरीक्षण उच्चोटि का है, उसने स्त्री स्वभाव के उच्च नीच दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण किया है। इनके पात्रों के चरित्र में कुछ ऐसा जादू है कि वह दर्शकों के सिर पर चढ़कर बोलने लगता है। मृच्छकटिक के अमेरिकन भाषान्तरकार डॉ0 राइडर ने ठीक कहा है कि इस नाटक के पात्र सार्वभौम (कास्मोपालिटन) हैं। सम्पूर्ण विवरणों से यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि शूद्रक की नाट्यकला श्लाघनीय भी है और स्पृहणीय थी। तथा नाटककार के रूप में शूद्रक को प्रथम श्रेणी के नाटककारों की पंक्ति में रखने में सहृदयों को और सुधीज्ञनों को भी गर्व का ही अनुभव होगा।

17.4– 1. नाटककार के रूप में शूद्रक का मूल्यांकन कीजिए?

2. शूद्रक की नाट्य शैली पर निबन्ध लिखिये?

3. नाटकीय तत्त्वों के आधार पर मृच्छकाटिकम् की कथावस्तु का विवेचन कीजिए?

4. शूद्रक रचित मृच्छकटिक में निरूपित सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दशा का निरूपण कीजिए।

17.5– उपयोगी पुस्तके

1. मृच्छकटिकम् हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्याकार– डॉ. श्री निवास शास्त्री साहित्य भण्डार, मेरठ–250002

2. मृच्छकटिकम् – हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्याकार – निरूपण विद्यालंकार

3. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य कपिलदेव द्विवेदी

4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – चन्द्रशेखर पाण्डेय

5. संस्कृत साहित्य का इतिहास पं0 बलदेव उपाध्याय

17 (ख) हर्ष नाटककार के रूप में

17.0 पाठशीर्षक

17.1 उद्देश्य

(1) विद्यार्थियों को हर्ष के नाटकों से परिचित करवाना

(2) हर्ष की नाट्यशैली का ज्ञान देना

(3) हर्ष के नाटकों में वर्णित सामाजिक, राजनैतिक दशाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

17.2 पाठ परिचय– (हर्ष के नाटकों का इतिवृत्त (कथानक) निरूपण)

17.2.0. प्रियदर्शिका का कथानक

17.2.1. रत्नावली का कथानक

17.2.2. नागानन्द का कथानक

17.2.3. वस्तु विनयास कथानक

17.2.4. रीति विवेचन

17.2.5. पात्रों का चरित्र चित्रण

17.2.6. छन्द योजना

17.3. सारांश एवं उपसंहार

17.4. परीक्षोपयोगी प्रश्न

17.5. उपयोगी पुस्तकें–

17 (ख) **"हर्ष नाटककार के रूप में"**

17.0 संस्कृत नाटककारों में हर्ष का नाम श्रद्धा के साथ लिया जाता है। भारत के प्राचीन विद्याव्यसनी राजाओं में सम्राट हर्षबर्धन (606–648 ई0) का नाम परम प्रसिद्ध है। महाकवि बाण के आश्रय दाता हर्ष ने तीन नाटकों की रचना की। वे हैं 1. प्रियदर्शिका, 2. रत्नावली, 3. नागानन्द। कुछ विद्वान इन कृतियों को हर्ष के किसी आश्रित कवि

ने रचना बताते हैं, किंतु तीन ग्रंथों की प्रस्तावना में हर्ष का उल्लेख होने एवं तीनों में भाषा साम्य होने के आधार पर इन्हें हर्षबर्धन या हर्ष की कृति मानने में किसी संकोच का अनुभव नहीं होता। वास्तव में प्रियदर्शिका और रत्नावली को नाटिका के अंतर्गत ही रखा जाना चाहिए जब कि नागानन्द को नाटक के रूप में स्थान देना नाट्य शास्त्रीय सम्मत मत होगा। हर्षवर्धन पर महाकवि भास का प्रभाव स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है।

17.2.0 नाटककार हर्ष की प्रथम कृति है "प्रियदर्शिका" अंक की इस नाटिका का कथानक वृहत्कथा से लिया गया है। इसे कवि ने अपनी अनूठी कल्पनाओं से सरस एवं रूचिकर बना दिया है। इसमें युद्ध में पराजित दृढ़वर्मा की कन्या प्रियदर्शिका दुर्घटनावश वत्स देश के राजा उदयन के अंतपुर में पहुंच जाती है। वहीं अरण्यका नाम से परिचारिका बनती है। वत्सराज आरण्यका के रूपलावण्य के प्रति आकृष्ट होता है। वासवदत्ता की इच्छा से अन्तपुर में उदयन एवं वासदत्ता के विवाह का अभिनय होता है जिसमें मनोरमा उदयन बनती है, और आरण्यका, वासवदत्ता किंतु मनोरमा की जगह उदयन पहुंच जाते हैं फलतः वासवदत्ता आरण्यकस को कारागार में डाल देती है लेकिन यह मालूम होने पर कि आरण्यका राजकुमारी है–उदयन एवं प्रियदर्शिका का विह हो जाता है। इसकी कथावस्तु भाव के स्वप्नवासवदत्तम् से प्रभावित है।

17.2.1 नाटककार हर्ष की द्वितीय कृति "रत्नावली" है। 4 अंकों की इस नाटिका में सिंहलराज की कन्या रतनावली और उदयन के विवाह की ही चर्चा है। इसकी कथावस्तु भी भास के स्वप्नवासवदत्ता नामक नाटक से प्रभावित हैं। सिंहलनरेश की कन्या रत्नावली से जिसके पाणिग्रहण होगा वह चक्रवर्ती सम्राट होगा, इस भविष्यवाणी के सुनन के वत्सनरेश उदयन का मंत्री यौगन्धरायण रानी वासवदत्ता के जल जाने की अफवाह फैलाकर रत्नावली को उदयन के लिए मांगता है। मार्ग में समुद्र में नौका दुर्घटना में रत्नावली बच जाती है और सागरिका नाम से उदयन के अंतपुर में प्रवेश करती है। उदयन उसके रूप सौन्दर्य पर मोहित हो जाते हैं, एवं वसन्तोत्सव के समय उससे मिलने की योजना बनाते हैं किंतु वासवदत्ता को योजना का पता चल जाने पर सागरिका कैद कर ली जाती है, इसी बीच अंतपुर में आग लगती है, और सागरिका को बचाने की प्रार्थना वासवदत्ता उदयन से करती है, इसी बीच रत्नावली माला से रत्नावली के पिता का मंत्री वसुभूति सागरिका को पहचान लेता है कि सागरिका के ममा की लड़की रत्नावली है। फलतः उदयन एवं रत्नावली का विवाह हो जाता है।

17.2.2 "नागानन्द" हर्ष की प्रौढ़ वय की कृति है। इसमें पाँच अंकों में राजकुमार जीमूतवाहन के आत्मत्याग की कथा का उल्लेख नाटककार ने किया है। गरूण प्रतिदिन एक सर्व का भक्षण करता थ, जब जीमूतवाहन को ऐसा ज्ञात होता है, तो उस दिन के भक्ष्य शंखचूड़ सर्व के बदले में वह अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देता है। गौरी अपने प्रभाव से जीमूतवाहन को जीवित कर देती है, अमृत की वर्षा होती है, और सभी मारे गये सर्व जीवित हो जाते हैं। गरूण भविष्य में उनका वध न करने की प्रतिज्ञा करता है। इस नाटक का रस वीर (दयावीर) है। किंतु रस शांत है।

17.2.3 "निःसंदेह" हर्ष एक कुशल नाटककार हैं। उनकी नाटिकाओं मे वस्तुविन्यास अत्यंत प्रभावोत्पादक और यौजनाबद्ध है, साथ ही उनकी कथावस्तु में गतिशीलता और कार्यव्यापार में धाराप्रवाह के दर्शन होते हैं। हर्ष की कल्पनाओं में मनोरमता और उत्कर्षता की अन्विति भी देखने को मिलती है। रत्नावली और प्रियदर्शिका तो श्रृंगार रस प्रधान हैं। उदयन सागरिका के चित्र को देचाकर कहते हैं कि जब ब्रह्मा ने सागरिका के मुख रूपी अनुपम चंद्र की

रचना की, तो ब्रह्मा का आसन कमन भी उसके सौन्दर्य पर लज्जित हो गया होगा, या संकुचित हो गया होगा, उस समय ब्रह्माा बड़ी कठिनाई से उस असानभूत कमल पर बैठ सके होंगे। यथा–

विधायापूर्वपूर्णेन्दुमस्या मुखमभूद्ध्रुवम्।

धाता निजासनाम्भेजविनिमीलमदुः स्थितः।

प्रियदर्शिका में कवि का कल्पना पक्ष उतना नहीं निखरा जितना रतनावली में। रत्नावली नाटककार हर्ष की प्रौढ़ कल्पना का आदर्श है। प्रियदर्शिका में गर्भ नाटक मौलिक और रत्नावली में ऐन्द्रजालिक का दृश्य हर्ष की मनोज्ञ कल्पना का परिचायक है। तीनों नाटकों में रत्नावली शास्त्रीय दृष्टि से अनुपम रत्न है। इसमें सभी नाट्यशास्त्रीय तत्त्व अनायास प्राप्त होते हैं। अर्थप्रकृतियों, अवस्थाओंः सन्धियों और सन्ध्ङगों का इतना विशद निरूपण है कि प्रत्येक नाटकीय तत्त्व का उदाहरण इसमें प्राप्त है। अतएव दशरूपककार धनञ्जय और साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ इसके गुणों पर मन्त्रमुग्ध हैं। दोनों ने नाटकीय तत्त्वों के उदाहरण के रूप में इसके पद्य प्रस्तुत किये हैं इससे श्री हर्ष की नाट्यकुशलता का ज्ञान होता है।

17.2.4 श्रीहर्ष वैदर्भी रीति के कवि हैं। उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य गुणों का समन्वय हैं। नाटककार का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। वह सरल से सरल और कठिन से कठिन पद्यों की रचना में समान रूप से समर्थ है। भावों के अनुसार उनकी भाषा में उतार चढ़ाव है। सामान्यवर्णनों में सरल और मधुर भाषा का प्रयोग है परन्तु वीर, वीभत्स, और रौद्र रसों के वर्णन मे ओजपूर्ण शब्दावली तथा समस्त पदावली वाली गौड़ी रीति का प्रयोग नाटककार ने किया है। भाषा प्रौढ़, परिष्कृत एवं प्रवाहपूर्ण है। कवि में प्रौढ़ कवित्व है और उदात्त कल्पना शक्ति भी। इन कृतियों में संगीतात्मकता का भी समन्वय देखने को मिलता है। दोनों नाटिकाओं में जहाँ श्रृंगारस प्रधान है वहीं नागानन्द में शान्तरस। अलंकारों का प्रयोग प्रायः अनायास ही सहज ढंग से हर्ष की इन कृतियों में विकसित हो गया है। श्रम साध्य अलंकारों का अभाव है। स्वाभाविक रूप से उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षाः अर्थानतरन्यास आदि अलंकारों का प्रचुर प्रयोग हर्ष ने इन नाटकों में किया है। कवि के प्रकृति वर्णन तो विशेष रूप से मनोरम हैं। यथा–अस्ताचल के शिखर पर किरण डाले हुए सूर्य प्रियतमा कमलिनी से विदा होते समय कह रहा है कि कालनयने! देख अब मेरे चलने का समय हो गया है। अब जब कल तू सोई ही हुई होगी आकर तुम्हें जगाऊँगा। **यथा–**

यातोऽस्मि पद्यनयने समयो ममैष

सुप्ता मयैव भवती प्रतिबोधनीया।

प्रत्यायनामयमितीव सरोरूहिण्याः

सूर्योऽस्तमस्तकनिविष्टकरः करोति।।

इसी प्रकार सायंकालीन प्राकृतिक छटा का वर्णन जब कि कमलबन्द हो रहे हैं, भौरें उनमें छिप रहे हैं, कवि की उत्प्रेक्षा शक्ति का कमाल ही कहा जा सकता है।

यथा– देवि त्वन्मुखपङक जेन शशिनः शोभातिरस्कारिणा

पश्याब्जानि विनिर्जितानि सहसा गच्छन्ति विच्छायताम्।

श्रुत्वा त्वत्परिवारवारवनितागीतानि भृङ्गाङ्गना

लीयन्ते मुकुलान्तरेषु शनकैः संजातलज्जा इव।।

17.2.5 नाटककार हर्ष के नाटकों मे पात्रों का चरित्र चित्रण आदर्श ढंग से निरूपित किया गया है। इसमें एक पात्र दूसरे व्यक्ति का रूप भी धारण कर लेता है जैसा की रत्नावली में वासवदत्ता का रूप सागरिका ग्रहण कर उदयन से सम्मिलन की आकांक्षा करती है, जिसे विदूषक और उसकी सखी नियोजित करते हैं। उसी प्रकार प्रियदर्शिका में आरण्यका वासवदत्ता का रूप ग्रहण करती है और मनोरमा उदयन का।

श्रीहर्ष के नाटक रंगमंच की दृष्टि से भी अभिनेय हैं। अन्तःपुर के प्रणय व्यापार के विशद वर्णन में वह अनुपम हैं। प्रणय नाटिका के वर्णन में वह अद्वितीय हैं। प्रेमी प्रेमिका के प्रेम में यदि कोई त्रुटि हो जाती है, तो वह असह्य होती है। ऐसा ही वयावहारिक तथ्य का विवरण हर्ष ने राजा उदयन के वर्णन में दिया है जिसमें सागरिका उदयन के प्रति अनुरक्त है, और वह प्रणय के फलीभूत न होने पर लतापाश से अपनी जीवनलीला समाप्त करना चाहती है जबकि सागरिका के प्रति राजा के प्रेम से वासवदत्ता क्षुब्ध है जो कि व्यावहारिक तथ्य है कि कोई भी स्त्री अपनी सौतन को पसन्द नहीं करती, और वह (वासवदत्ता) अतिसनेही राजा से ऐसे व्यवहार की आशा ही नहीं करती। सम्भव है वह प्राण भी त्याग दे, स्त्री स्वभाव का कितना संजीव चित्रण हर्ष ने किया हैं। रत्नावली में विदूषक से राजा उदयन कहता है कि– **यथा–**

समारूढा प्रीतिः प्रणयबहुमानादनुदिनं

व्यलीकं वीक्ष्येवं कृतमकृतपूर्व खलुमया।

प्रिया मुञ्चतयद्य स्फुटमसहना जीवितमसौ

प्रकृष्टस्य प्रेम्णः स्खलितमविषह्यं हि भवति।।

जीमूतकेतु का पुत्र वात्सल्य, शंखचूड की माता का निवर्याज पुत्र स्नेंह, मलयवती की स्वाभाविक अनुरक्ति के वर्णन में भी हर्ष की नाट्यकला के दर्शन होते हैं। इन सभी तथ्यों के परिणाम स्वरूप हम कह सकते हैं कि नाटकों की अभिनेयता की दृष्टि एवं पात्रों के यथेष्ट चरित्र–चित्रण को प्रस्तुत करने की दृष्टि से वह मूर्धन्य नाटककारों में अवश्य परिगणित कियो जा सकते हैं। उनके नाटकों की विषय वस्तु के अध्ययन से यह भी विदित होता है कि वह संगीत, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, दर्शन, नीतिशास्त्र, कामशासत्र, ज्योतिष, वैद्यक आदि के भी विशेषज्ञ हैं। शायद यही कारण है कि उनके नाटकों में यथा स्थान शास्त्रीय पाण्डित्य का मनोरम समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

17.2.6. छन्द योजना मे भी हर्ष को दक्षता हासिल है। उन्होंने अपने नाटकों में शर्दूलविक्रीडित, आर्या सनग्ध ारा, जैसे बड़े छन्दों के साथ श्लोक को भी स्थान दिया है।

यद्यपि बड़े छन्द नाटकीय दृष्टि से अनुपयुक्त हैं यथापि वर्णन की दृष्टि से वे उपयोगी हैं। बड़े छन्दों के माध्यम से हर्ष ने अपने भावों, श्लिष्ट कल्पनाओं और वर्णनों का अधिक व्यापक रूप से चित्रित करने में सफलता पायी है। बड़े छन्दों के प्रयोग उनकी प्रौढ़ता और विदग्धता के परिचायक है। इससे ज्ञात होता है कि उसने प्राचीन कथाओं को नवीन रूप देकर प्रस्तुत किया है। नाटकोचित परिवर्तन और नवरूप संभार नाटककार की मौलिकता का परिचायक है।

इस प्रकार नाटककार श्रीहर्ष अपने उदात्त गुणों के कारण संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य नाटककारों में से एक जाने जा सकते हैं। उनका कवित्त्व, उनकी प्रतिभा, उनकी कमनीय कल्पनाएं अनूठीं हैं, इसीलिए संस्कृत के महाकवि और काव्यशास्त्री भी उन पर मन्त्रमुग्ध हैं। महाकवि बाण ने उन्हें कवि, विद्वान, शास्त्रज्ञ, काव्यामृत वर्षी, और सरस्वती का मूर्तरूप बताया है, जैसा कि हर्षचरित्र में वर्णन मिलता है कि– **यथा–**

"विग्रहिणीमिव मुखवासिनीं सरस्वतीं दधानम् एवं

प्रज्ञायाः शास्त्राणि कवित्वस्य वाचः..................... न पर्याप्तो विषयः आदि"

"ग्यारहवीं शताब्दी के सोड्ढल कवि ने हर्ष को अपने ग्रन्थ उदयसुन्दरी कथा में राजा, कवीन्द्र, और गीहर्ष (वाणी का आनन्द) उपाधियों से समलंकृत किया– "श्रीहर्ष इत्यवनि–वर्तिषु पार्थिवेषु".......... आदि। ग्यारहवीं शती के जयदेव ने भी अपने ग्रंथ प्रसन्नराघव में भास, कालिदास, बाण, आदि के साथ हर्ष को भी कवि और कविता का हर्ष कहा है जो "हर्षो–हर्षो हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः" से निदर्शित किया जा सकता है। "श्री हर्षो निपुणः कविः" ऐसा रत्नावली में भी उल्लिखित मिलता है। उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह निर्भ्रान्त रूप से कहा जा सकता है कि श्रीहर्ष एक अत्यनत सफल नाटककार, कवि और शास्त्रज्ञ हैं।

17.4 1. नाटककार के रूप में हर्ष का मूल्यांकन कीजिए?

2. हर्ष के तीनों नाटकों की कथावस्तु संक्षेप में लिखिये।

3. हर्ष अपने नाटकों में पात्रों का चरित्र–चित्रण करने में कहाँ तक सफल हुए हैं? वर्णन कीजिए।

4. हर्ष किस नाटककार से प्रभावित हैं, एवं कहाँ तक? अपने तर्क के समर्थन में प्रमाण दीजिये?

उपयोगी पुस्तके

17.5 1. नाटककार श्रीहर्ष – कमलापति मिश्र साहित्य अकादेमी नयी दिल्ली

2. नाटककार साहित्य का इतिहास – बहादुर चंद छाबड़ा

3. नाटककार साहित्य का इतिहास – कपिलदेव द्विवेदी

4. नाटककार साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय

5. नाटककार साहित्य का इतिहास – चन्द्रशेखर पाण्डेय

6. रत्नावली (नाटिका) – व्याख्याकार, तारिणीश झा, इलाहाबाद

7. नागानन्द व्याख्याकार डॉ0 संसार चन्द्र

8. प्रियदर्शिका व्याख्याकार रामचन्द्र मिश्र

–डॉ. रमणीका जलाली
संस्कृत विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय

(ख) भवभूति की नाट्यकला।

18.1 उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों को प्राचीन संस्कृत नाटकों से परिचित कराना।
2. नाटक से सम्बन्धित कवि की नाट्यकला इत्यादि का विद्यार्थियों को परिचित कराना।
3. विद्यार्थियों को प्राचीन संस्कृत नाटकों के पठन–पाठन के लिए प्रेरित कराना।

18.2 पाठ परिचयः–

भवभूति की नाट्यकला का वर्णन एवं कवि द्वारा रचित नाटकों में वर्णित रस, अलंकार एवं छंदों का विस्तृत वर्णन।

18.3 मूल पाठ –

भवभूति की नाट्यकला।

(क) कवि परिचय।

(ख) काल–क्रम।

(ग) नाट्यकला।

(1) शैली

(2) रस

(3) छंद

(ख) भवभूति की नाट्यकला।

नाटककार की परिचय

भवभूति का जन्म आधुनिक महाराष्ट्र के विदर्भ खण्ड में पद्मपुर नामक नगर में हुआ था। इनके वंश का नाम उदुम्बर है। कहते है कि इस वंश का प्रादुर्भाव कश्यप मुनि से हुआ था। कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी यह ब्राह्मण कुल था। वे ब्रह्मवादी थे और सोमयज्ञ का प्रचलन उस कुल में था। भवभूति ने इस कुल का श्लोकाख्यान किया है– **यथा–**

ते श्रोत्रियास्तत्त्वविनिश्चयाय

भूरि श्रुतं शाश्वतमद्रियन्ते।

इष्टाय पूर्ताय च कर्मणेऽर्थान्

दारानपत्याय तपोऽर्थमायुः।।

अर्थात् वे क्षत्रिय थे, उच्चकोटि के विद्वान थे। इष्ट और पूर्त का सम्पादन उनकी विशेषता थी। उनका जीवन ही तप के लिए था। भवभूति के पिता का नाम नीलकंठ और माता का नाम जातुकर्णी था। ऐसे कुल में उत्पन्न कवि का अध्ययन सार्वक्षेत्रिक था। कविवर के विविध दर्शनों, वेदों और उपनिषदों का अध्ययन तो किया ही था। काव्य–रचना में उनकी में उनकी लोकप्रियपक्षात्मक दृष्टि भी सफल थी।

भवभूति की शिक्षा दीक्षा सम्भवतः उज्जयिनी में हुई। वे गृहस्थाश्रम में कभी कन्नोज में यशोवमार्र की राजसभा की विद्वत्परिषद् के सदस्य थे। मालतीमाधव में जो पद्मावती के उस रूपक की घटनास्थली है, वह ग्वालियर के पास पवाया हो सकता है। इस स्थान से भवभूति का निकट सम्बन्ध किसी न किसी रूप में दीर्घकालीन रहा होगा। तभी इसका विवरण इतना स्टीक और रूचिपूर्ण हो सकता था। भवभूति के नाटकों के प्रथम अभिनय कालप्रियनाथ की यात्रा में हुए। यह कालप्रिय उत्तर प्रदेश की आधुनिक कालपी है।

भवभूति की रचनाओं से ज्ञात होता है कि वे बहुत ऐश्वर्यशाली नहीं थे। आरम्भ में उसकी रचनाओं का कोई विशेष सम्मान नहीं हुआ। तभी तो उन्हें लिखना पड़ा–

"ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।

उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा कालो ह्मयं निखधिर्विपुला च पृथ्वीं।।"

अपि च – सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्मवचनीयता।

यथ स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनाः।।

कवि ने मालतीमाधव और उत्तररामचरित में आदर्श का जो स्वरूप निरूपित किया है, उससे ज्ञात होता है कि इस विषय में उनका निज अनुभव ही प्रधान कारण है। उनका कौटुम्बिक जीवन सरल, सरस और सौहार्दपूर्ण रहा होगा।

भवभूति का भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों में विश्वास था। उन्होंने जिस प्रकार के कथानक लिये हैं और आदर्श पात्रों के चरित्र–चित्रण का जैसा निर्वाह किया है, उससे प्रतीत होता है कि कविवर को अपनी कृतियों के द्वारा समाज को विकासोन्मुख गति देने का उत्साह था। सदाचार, सत्य, सत्संगति, यशः काम और कर्तव्यपालन के द्वारा वे व्यक्ति और समाज का वास्तविक अभ्युदय मानते थे।

काल–निर्णय

कन्नौज के राजा यशोवर्मा के राजकवि वाक्पतिराज की रचना गौऽवहा में भवभूति का उल्लेख है कि वाक्पतिराज ने भवभूति से बहुत कुछ सहायता ली। कल्हण ने भी राजा का वर्णन करते हुए कहा है कि वाक्पतिराज और भवभूति यशोवर्मा के सभा में थे–

"जितो ययौ यशोवर्मा तद्‌गुणस्तुतिवन्दिताम्।।"

यशोवर्मा की यह पराजय आठवीं शमाब्दी के मध्य में हुई थी। उपर्युक्त उल्लेखों के आधार पर कहा जा सकता है कि गौऽवहां की रचना जब यशोवार्मा की पराजय के पहले हुई थी तो भवभूति इस समय से पहले हुए। यदि इस कथन का सत्य अप्रमाणित है तो भी भवभूति इस समय के पहले हुए। यदि इस कथन का सत्य अप्रमाणित है तो भी भवभूति को 736 ई. के पहले मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

नाटककार की नाट्‌यकला–

भवभूति के तीन नाटक उपलब्ध है–महावीरचरित, मालतीमाधव, उत्तररामचरित। भवभूति के तीनों नाटकों का अभिनय जैसा कि प्रस्तावना से मालूम पड़ता है, भगवान कालप्रियनाथ के उत्सव पर हुआ था। विद्वानों की सम्मति में उज्जयिनी के महाकाल महादेव का ही दूसरा नाम कालप्रियनाथ है। महावीरचरित तथा मालतीमाधव की प्रस्तावना से पता चलता है कि भवभूति की नटों से घनिष्ठ मित्रता थी, अतः यह स्पष्ट है कि भवभूति के नाटक अभिनय के ही लिखे गए थे।

1. **महावीरचरित** – भवभूति का प्रथम नाटक है। इसमें सात अंकों में रामायण के पूर्वार्ध–राम विवाह, राम–वनवास, सीताहरण और राम–राज्याभिषेक की कथा वर्णित है। आरम्भ से अन्त का रावण राम के विनाश के लिए भाँति–भाँति के कुचक्र करता है। सीता के स्वयंवर में रावण सीता की याचना के लिए दूत भेजता है, किन्तु राम शिव–धनुष तोड़कर सीता का वरण कर लेते हैं।

इस पराजय का बदला लेने के लिए रावण और उसकी मंत्री माल्यवान्, परशुराम को राम के विरूद्ध उकसाते हैं। परशुराम राम से युद्ध करते हैं, पर मुँह की खाते हैं। तब माल्यवान् शूर्पणखा को मन्थरा के रूप में भेजता है। उस समय राम जनक के यहाँ मिथिला में थे। मंथरा–रूपीधारी शूर्पणखा कैकेयी का एक पत्र राम को देती है, जिसमें उन्हें चौदह वर्ष का बनवास दिया जाता है। माल्वान ही बाली को राम से लड़ने के लिए प्रेरित करता है। रावण और मेघनाथ के वध के पश्चात् लंका और अलकापुरी की अधिष्ठात्री देवियाँ परस्पर समवेदना प्रकट करती हैं।

भवभूति ने रामायण की कथा को रोचक नाटक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पर इस कृति में भवभूति की नाट्‌यकला का पूर्ण परिपाक नही हुआ है। लम्बे–लम्बे संवादों या वर्णनात्मक प्रसंग के कारण इस नाटक में कई स्थलों पर घटनाओं की गति में अवरोध उत्पन्न हो गया है। पात्रों के चरित्र का उत्तरोत्तर विकास नहीं देख

पड़ता। साथ ही इसमें मानव हृदय का वह सूक्ष्म निरीक्षण नहीं और भाव–भाषा की वह उदात्तता नहीं जो उनके बाद के दो नाटकों में र्पा जाती हैं।

रस–भवभूति ने वीर–रसों का बहुत सुन्दर प्रयोग किया है। शिव धनुषभंग होने पर लक्ष्मण की कैसी दर्पपूर्ण उक्ति हैं – जैसे –

दोर्दण्डञ्चितचन्शेखरधनुर्दँ।द्यत–

ष्ट.रध्व निरार्यबाल चरित प्रस्ताव नाडिडिमः

द्राक्पर्यस्तकपाल सम्पुट मिलद् ब्रह्माण्डमाण्डोदर–

भ्राम्यत्पिण्डित चण्डिमा कथमहो नाद्यपि विश्राम्यति

छन्द–महावीरचरित में पद्य संख्या 284 हैं, जिनमें 100 अनुष्टुप, हैं इनके अतिरिक्त शार्दूलविक्रीडित 63, वसन्ततिलका 34, शिरिणी 17, मन्दाक्रान्ता 13 और मालिनी 11 पद्यों में हैं।

2. **मालतीमाधव –** 'मालतीमाधव' दस अंको का एक 'प्रकरण' है। इसमें मालती और माधव के प्रेम और विवाह की कल्पना प्रसूत कथा चित्रित है। पद्मावती–नरेश के मन्त्री भूरिवसु अपनी पुत्री मालती का विवाह अपने बचपन के मित्र देवरात के पुत्र माधव के साथ करना चाहते हैं। इधर राजा का साला और सखा नन्दन मालती से विवाह करना चाहते हैं। इसमें राजा, नन्दन का समर्थक है। माधव का साथी मकरन्द है और मालती की सुखी मदयन्तिका है। मालती और माधव दोनों एक शिव–मन्दिर में मिलते हैं। वहां मकरन्द मदयन्तिका की एक बाघ से रक्षा करता है और दोनों परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। इधर राजा, नंदन और मालती का विवाह कराने पर तुले हुये हैं। माधव अपनी प्रेम–सिद्धि के लिये श्मशान में जाकर तंत्र की साधना करता है। वहां अघोरघण्ट और उसकी शिष्या कपाल–कुण्डता मालती को चामुडादेवी की बलि चढ़ाने वाले ही थे कि संयोगवश माधव वहाँ पहुँच जाता है और अघोरघण्ट को मारकर मालती को बचा लेता है। राजा की आज्ञा से मालती का विवाह नन्दन से होने जा रहा है पर मकरन्द मालती का स्थान ले लेता है। उधर माधव और मालती भाग जाते हैं। वधू–रूप में मकरन्द नन्दर को दुत्कार देता है। इस पर मदयन्तिका अपनी भाभी को उलाहना देने आती है। पर उसे अपना प्रेमी मकरन्द पाकर वह स्वयं उसके साथी भाग जाती है। माधव अपनी प्रियतमा की खोज करता है। सौदामिनी की सहायता से उसे मालती मिल जाती है और राजा की अनुमति से दोनों का विवाह हो जाता है।

'मालतीमाधव' की रचना भास के 'अविमारक' नाटक से प्रभावित हुई जान पड़ती है। दोनों का कथानक लोक–कथाओं से लिया जाता है तथा दोनो के प्राकृतिक चित्रण में शैली का साम्य देख पड़ता है।

शैली : – भाषा तथा शैली में भी यथावसर सरलता एवं सजीवता का समावेश दर्शनीय है। पति–पत्नि के आदर्श सम्बन्ध का सुन्दर वर्ण देखिये–

प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितंवा।

स्त्रीणां भर्ता धर्मदारश्य पुंसामित्यन्योन्यं वत्सयोज्ञतिमस्तु।।

रस – मालतीमाधव में शृंगार–रस की व्यापकता है। यद्यपि नवयुवकों के शृंगार की चर्चा है किन्तु भवभूति ने असाधारण संयम से इसके विभावादि का वर्णन किया है। इसके साथी ही शृंगार के विरूद्ध या अविरूद्ध रस, रौद्र तृतीय अंक में, वीर तृतीय और सप्तम अंक में, वीभत्स और भयानक पंचम अंक में, करूण नवम अंक में तथा अद्‌भुत नवम और दशम अंक में विशेष रूप से हैं। **यथा–**

छन्द – भवभूति ने इस प्रकरण में विविध छन्दों का वैचित्रय प्रस्तुत किया है। इनमें से सबसे कठिन प्रया है। दण्डक छन्द का, जिसमें 54 अक्षर होते हैं सब मिलाकर 25 प्रकार के छन्द प्रयुक्त हुए हैं इनमें से अपरवक्त्र आदि विशेष प्रचालित हैं। कवि के प्रिय छन्द वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, मालिनी, मन्दाक्रान्ता और हारिणी हें। कोमल भावों की व्यजना के लिए लघु छन्दों का प्रयोग हुआ है तथा साहस पराक्रम आदिकी अभिव्यक्ति बड़े छन्दों से की गई है।

3. **'उत्तररामचरित'**– 'उत्तररामचरित' भवभूति का अन्तिम और सर्वोत्कृष्ट नाटक है। इसमें कुल सात अंक हैं। इसके कथानक का संक्षिप्त सार इस प्रकार है – प्रथम अं में रामाराज्याभिषेक के अनन्तर जनक के चले जाने पर सीता उदास हो जाती है। राम उन्हें सान्त्वना देते हैं। सीता के मनोविनोदार्थ राम सीता और लक्ष्मण के साथ उन चित्रों को देखते हैं जिनमें उनके पूर्व चरित्र अंकित हैं। सीता एक बार पुनः भगवती भागीरथी में अवगाहन करने की अभिलाषा प्रकट करती हैं। चित्र–दर्शन के श्रम से सीता थककर सो जाती हैं। दुर्मुख नामक गुप्तचर सीता के चरित्र के सम्बन्ध में प्रचलित लोकपवाद की सूचना राम के कान में देता है। इस दुःसंवाद में राम को मर्मान्तक पीड़ा होती है, किन्तु कर्त्तव्यापालन के लिए वे सीता का परित्याग करने को तैयार हो जाते हैं। भागीरथी–दर्शन की इच्छा सीता की थी ही। इसी इच्छा की पूर्ति के बहाने वह निर्वासित कर दी जाती हैं। राम इससे दुःखी तो बहुत होते हैं मगर कहते हैं – **यथा–**

स्नेह दयां सौख्यं च यदि वा जानकीनपि।
अराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति में व्यथा।

बारह वर्ष बीत जाने पर दूसरे अंक का आरम्भ होता है। इसमें आत्रेयी नामक तपस्वनी तथा वासन्ती नाम वनदेवता के संवाद से विदित होता है कि राम ने अश्वमेध–यज्ञ आरम्भ कर दिया है। महर्षि बाल्मीकि एक देवी द्वारा सौंपे गए दो कुशाग्र–बुद्धि सुन्दर बालकों को लालन पालन कर रहे हैं।

तीसरे ंअंक में तमसां और मुरला नदियाँ परस्पर सम्भाषण में बताती हैं और सीता अपने जीवन का अंत करने के लिए गंगा में कूद पड़ी थी वहीं जल में लव–कुश का जन्म हुआ। गंगा ने सीता की रक्षा की तथा दोनों बालको को महर्षि वाल्मीकि के सरंक्षण में सौंप दिया। इसके बाद सीता छाया के रूप में प्रकट होती है। राम भी आते हैं, पर सीता को देख नहीं पाते हैं। राम पुराने क्रीड़ास्थलों को देखकर मूर्छित हो जाते हैं तब सीता अपने स्पर्श से उन्हें चेतन करती हैं। चौर्थ अंक में कौशल्या और जनक परस्पर सांत्वना प्रदान करते हैं। इसी समय वाल्मीकि आश्रम के बालक खेलने–कूदते उनके पास आते हैं। इसमें से एक विशेष कान्तिमान है वह खेलते–कूदते अश्वमेध के घोड़े का पकड़ लेता है। पांचवे अंक में यज्ञीय अश्व में रक्षक चन्द्रकेतु और लव में दर्पयुक्त कथोपकथन होता है, पर साथ ही दोनों में परस्पर अनुराग भी होता हैं।

छठे अंक में दोनों वीरों में युद्ध का वर्णन एक विद्यादर और उसकी पत्नी के संवाद के रूप में किया है राम के आगमन से युद्ध रूक जाता है। उनके ह्दय में लव और कुश के लिए अनुराग उत्पन्न हो जाता है, पर उन्हें ये मालूम नहीं कि वे दोनो उन्हीं संतान है। दोनो बालक राम को देखते ही रह जाते हैं, तभी कुश ने उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कहा –

अहो प्रासादिकं रूपमनुभावश्च पावनः

स्थाने रामायणकविर्देवीं वाचं व्यवीवृतत्।।

सातवें अंक में एक दिव्य नाटक का अभिनय होता है। परित्यक्ता सीता गंगा में कूद पड़ती हैं। किन्तु एक–एक शिशु को लेकर भागीरथी और पृथ्वी सीता को जल से बाहर ले प्रकट होती है। पृथ्वी राम की कठोरता की निन्दा करती है, गंगा उसका कारण बताती है। दोनों सीता को आदेश देती हैं कि तुम इन दोनो शिशुओं की तब तक रक्षा करो जब तक कि ये महर्षि बाल्मीकि के संरक्षण में रखने के योग्य न हो जायें। इस दृश्य को राम वास्तविक समझ शोकवेग से मूर्च्छित हो जाता हैं। सहसा अरून्धात्री सीता को लेकर प्रकट होती है। सीता स्वामी की परिचर्या कर उन्हें स्वस्थ करती है। वाल्मीकि भी लव–कुश को समर्पित करते हैं। इस प्रकार इस नाटक का सुखद पर्यावसान होता है।

शैली –

संस्कृत भाषा पर भवभूति का असामान्य अधिकार था। 'उत्तररामचरित' के आरम्भ में ही उन्होंने जो गर्वोक्ति की है –

"यं ब्राहमणमियां देवी वाग् वश्येवानुवर्त्तते," यह अक्षरशः सत्य है। वास्तव में, भाषा एक दासी की भांति उनके संकेत पर चलती है। भवभूति की शैली का विशेष गुण उनका समुचित शब्द विन्यास है। उनका शब्द–शोधन अद्वितीय है। अवसर के अनुरूप भाषा का प्रयोग करते हैं। उनके भाषा तथा भावों में अनुपम सामजञ्जस्य है। जो भवभूति भयंकर युद्ध–वर्णन के समय अथवा प्रकृति के प्रचण्ड और भैरव दृश्यों के चित्रण के समय लम्बे–लम्बे समास वाले ओजोगुणयुक्त किलष्ट पद्य लिख सकते हैं, वहीं भवभूति ललित एवं सुकुमार भावों का वर्ण करते समय समास रहित सरल मधुर पदावली का प्रयोग भी करते हैं। जब कभी वे हमारी अन्तर्भावनाओं को आन्दोलित कर किसी तीव्र मनोराग की व्यञ्जना करना चाहते हैं, तब वे सरल–सुगम शैली का ही आश्रय लेते हैं। जैसे वासन्ती राम को सीता का परित्याग के कारण उपालम्भ दे रही हैं :– **यथा–**

त्वं जीवितं त्वमसि में ह्मदयं द्वितीयं,

त्वं कौमदी नयनयोरमृतं त्वमैं.।

इत्यादिभिः प्रिश्शतैंरनुध्यं मुग्धां,

तामेव शान्तमथवा किमहीन्तरेण।।

छन्द –

भवभूति ने उत्तररामचरित में विविध प्रकार के बड़े–छोटे छन्दों में बहुसंख्यक श्लोकों को भरा है। पूरे पद्यों की संख्या 255 हैं, जिनमें 19 प्रकार के छन्द प्रयुक्त हुये हैं। संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द अनुष्टुप् हैं। जो 89 पद्यों में मिलता है। इनके अतिरिक्त शिखरिणी 30 पद्यों में, वसन्ततिलका 26 पद्यों में, शार्दूलविक्रीडित 25 में, मालिनी 17, मन्दाक्रकान्ता 13 में और हारिणी 9 पद्यों में प्रयुक्त है। **यथा–**

रस – 'उत्तररामचरित' भवभूति का करूण रस–प्रधान नाटक है। इसमें करूण रस की अपूर्व व्यञ्जना हुई है। वे तो यहां तक कहते हैं कि और सब रस करूण–रस के ही रूपांतर हैं– **यथा–**

एको रसः करूण एव निमित्तभेदाद,

भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्त्तान्।

आवर्त्तबुद्ध बुदतरंगमयान विकारान्

अम्यो यथा सलिलमेव हि तत् समग्रम।।

अर्थात् करूण रस ही एम मात्र मुख्य रस है।

18.4 सारांश –

इस पाठ के अन्तर्गत भवभूति की नाट्यकला के विषय में जो जानकारी प्राप्त की उसका सारांश इस प्रकार है – सर्वप्रथम कवि के विषय में जानकारी प्राप्त की तथा उसके काल–निर्णय का परिचय प्राप्त किया। नाटककार की नाट्यकला के विषय में जानकारी प्राप्त की तथा उसमें वर्णित रस–अलंकारों के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करके प्राचीन संस्कृत नाटकों को हृदसंगम करने का प्रयास किया गया।

18.5 परीक्षार्थ प्रश्नों के नमून –

(i) भवभूति कृत–'महावीरचरित' की नाट्यकला का परिचय दें।

(ii) 'उत्तरामचरितम्' की नाट्यशैली वर्णित करें।

(iii) मालतीमाधव शृंगार रस प्रधान नाटक है–स्पष्ट

18.6 उपयोगी पुस्तकें –

(i) प्राचीन संस्कृत नाटक – रामजी उपाध्याय

(ii) संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – चन्द्रवली पाण्डेय

(iii) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ० बलदेव उपाध्याय

(iv) संस्कृत वाङ्.मय – श्री बलदेव उपाध्याय

(v) संस्कृत काव्यकार – डॉ० हरिदत्त शास्त्री

संस्कृत नाटक समीक्षा – डॉ० इन्द्रपाल सिंह इन्द्र

———

B.A. II SEM. **PAPER SANSKRIT**

Unit — V (Part A) **Lesson No. 19**

Dr. Rajesh Sharma
Asstt. Prof. in Skt.
Govt. M.A.M, College, Jammu.

पाठशीर्षक :–जम्मू विश्वविद्यालय Directorate of Distance Education द्वारा B.A.-2nd Sem पत्र संस्कृत के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम से सम्बद्ध प्रश्न और उत्तर ।.

प्रश्न : साहित्यदर्पण के आधार पर रूपक का लक्षण एवं भेदों का सामान्य परिचय।

रूपरेखा :

1. पाठ परिचय
2. उद्देश्य
3. विषय विवेचन
4. परीक्षार्थ प्रश्न
5. प्रश्नों के उत्तर
6. उपयोगी पुस्तके

1. **पाठ परिचय** :

मानव में स्वभाव से ही अनुकरण वृति पाई जाती है। अनुकरण वृत्ति का एकमात्र लक्ष्य आनन्द प्राप्त करना, मन का रञ्जन करना ही माना गया है। काव्य या कला में अनुकरण वृत्ति को मूल कारण मानना अनुचित न होगा। शायद इसलिए पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तु ने तो 'कला को ही अनुकरण माना है। जहाँ तक नाटक (रूपक) का प्रश्न है, उसमें तो अनुकरण स्पष्टतः दिखाई देता है। धनञ्जय की नाट्य (रूपक) की परिभाषाएँ इस बात को अच्छी तरह स्पष्ट कर देती हैं:

''अवस्थानुकृतिर्नाटयम्'', ''रूपकंतत्समारोपात्''।

भारतीय परम्परा के अनुसार जैसा का नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि ने बताया है कि नाटक की उत्पत्ति त्रेतायुग में ब्रह्मा द्वारा की गई थी। उनके अनुसार त्रेतायुग में देवता लोग ब्रह्मा जी के समीप गये, और उनसे प्रार्थना की कि वे ऐसे वेद की रचना करें जो हम आँखो से देख सके और कानों से सून सके जिसके द्वारा वेद श्रवण के अन्याधिकारी शूद्र एवं स्त्रीजन भी अपना मनोरंजन कर सकें। इस पर ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से संवाद, यजुर्वेद से अंभिनय, सामवेद से संगीत और अथर्ववेद से रस के तत्वों को लेकर पञ्चमवेद नाट्यवेद (नाट्यशास्त्र) की रचना कर दी **यथा–**

''जग्राह पाठ्यम् ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतिमेव च।

यजुर्वेदादभिनदान् रसानाथवर्णादपि।।''

नाट्याचार्य भरतमुनि एवं दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने 10 रूपको का वर्णन किया है। यथा :

''नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः।

व्यायोग समवकारौ वीहयङ्केहामृगा इति।।

रूपक तो रसाश्रय प्रबन्ध होने के नाते नाट्य भेद है। दृश्य काव्य का नाम रूपक है। इस पाठ में आप रूपक का लक्षण (स्वरूप) 10 भेद व भेदक तत्व एवं उपरूपको का समग्र विवेचन समझ पायेंगे।

2. उद्देष्य :

- ✓ छात्रों को रूपक के लक्षण (स्व–रूप) से परिचित करवाना।
- ✓ रूपक के 10 भेदो की समग्र जानकारी प्राप्त करवाना।
- ✓ रूपको के 10 भेदो के अतिरिक्त 18 उपरूपको को विद्यार्थियो की स्मृति में संयोना।

3. विषय विवेचन :(रूपक का लक्षण एवं भेद)

रूपक के भेद–प्रभेदो की चर्चा से पूर्व रूपक के स्वरूप (लक्षण) का निरूपण करते हैं कि अंग्रेजो में जिस अर्थ में Drama शब्द का प्रयोग किया गया है। वैसे अधिकतर व्यक्ति इस Drama शब्द का अर्थ 'नाटक' शब्द के द्वारा किया करते हैं, किन्तु नाटक रूपकों का ही एक भेदमात्र है वह रूपको के दस (10) प्रकारों में से एक प्रकार है। वैसे यह प्रकार रूपक का प्रमुख भेद है। काव्य की विवेचना करते समय हम देखते हैं कि काव्य दो प्रकार का होता है एक दृश्य काव्य और दूसरा श्रव्य काव्य यथा :

दृश्यश्रव्यत्र्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधामतम्''

श्रव्य काव्य में श्रवणेन्द्रिय के द्वारा बुद्वि एवं ह्रदय का सम्पर्क होता है जिसे सुनकर आनन्द की अनुभूति होती है। दृश्य काव्य मुख्य रूप से देखने की वस्तु है वैसे यहाँ भी पात्रों के संलाप में श्रव्यत्व रहता है। श्रव्य काव्य का

कोई रंगमञ्च नहीं होता। वह अध्ययनकक्ष की वस्तु भी हो सकता है, जबकि दृयकाव्य देखने योग्य, दर्शनीय प्रधान तथा देखने से आनन्द की अनुभूति देता है, यह रंगमंच की वस्तु है, उसका लक्ष्य अभिनय के द्वारा सामाजिकों का मनोरंजन और उसमें रसों को उत्पन्न करना है। यही दृश्य काव्य ''रूपक'' कहलाता है। इसे रूपक इसलिए कहा जाता है कि इसमें नट पर ततत् पात्र का रामापि का आरोप कर लिया जाता है अतः रूप का आरोप होने से रूपक कहा जाता है। इसी बात बात को आचार्य धनञ्जय ने दशरूपक में कहा है कि **''अवस्थानुकृतिर्नाटयम्''** अर्थात् अवस्था का अनुकरण नाट्य कहलाता है। दृश्य होने के कारण यह नाटय 'रूप' भी कहलाता है–''रूपं दृश्यतयोटषते'' आरोप किया जाने के कारण वह नाटय रूपक कहलाता है। जिस प्रकार मुख में चन्द्रमा का आरोप किया जाने के कारण 'मुखचन्द' में रूपक अलंकार होता है, इसी प्रकार नट में राम आदि के स्वरूप का आरोप होने के कारण 'नाटय' 'रूपक कहलाता है। प्रमुख रूप से रूपक के 10 भेद किए गये हैं। वैसे तो रूप कों से ही सम्बद्व 18 उप रूपक माने जाते हैं जिसका उल्लेख भरत मुनि के नाट्यशास्त्र और विश्वनाथ कृत् साहित्य दर्पण में मिलता है किन्तु धनञ्जय व धनिक ने उपरूप को का वर्णन नहीं किया है। ये 10 रूपक हैंः **यथा**

''नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।

ईहामगाड्.कवीक्ष्यः प्रहसनमिति रूपकाणिदश।।

अर्थात्– रूपक के निम्न 10 प्रकार हैं–

1.	नाटक	2.	प्रकरण
3.	भाण	4.	व्यायोग
5.	समवकार	6.	डिम
7.	ईहामृग	8.	अंक
9.	वीथी	10.	प्रहसन

उपर्युक्त रूपक के दस (10) प्रकारो (भेदों) का विस्तार से वर्णन।

1. **नाटक :–**

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्।

विलासर्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः।।

सुखदुःखसमुदभूति नानारसनिरन्तरम्।

पञ्चादिका दश परास्तत्राड्.काः परिकीर्त्तिताः।।

प्रख्यातवंषो राजर्शिधीरोदात्त प्रतापवान्।

दिव्योऽधदिव्यादिव्योवा गुणवान्नायको मतः।।

एक एवं भवेदङ.गो कार्यो निर्वहणेद्भुतः।।

चव्वारः प ञ्चवा मुख्याः कार्यव्यापृतपूरूषाः।

गोपुच्छाग्रसमाग्रं तु बन्धनं तस्य कीर्तितम्।।

अर्थात् 'नाटक' नामक रूपक वह दृश्य काव्य है जिसकी कथावस्तु इतिहास, पुराणदि प्रसिद्व होनी चाहिए। वह मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निवर्हण इन पाँच सन्धियों से युक्त होना चाहिए। इसकी रचना गोपुच्छ के अग्रभाग के समान होनी चाहिए। कम से कम 5 और अधिक से अधिक 10 अंकों में पूर्ण हुआ करता है। इसका नायक किसी प्रसिद्व राजवंश का राजर्षि हो और उसमें नाटकोचित गुण सम्पन्न होना अत्यन्त आवश्यक है। धीरोदात्त, प्रतापी, दिव्य, दिव्यादिव्य क्षत्रिय या क्षत्रिय से भिन्न होना चाहिए। इस रूपक प्रकार में श्रृंगार या वीर रस प्रधान रूप में तथा अन्य रस गौण रूप में होने चाहिए। साथ ही कार्यों में व्याप्त चार या पाँच प्रधान पुरूषों का चरित वर्णन भी अपेक्षित है। यथा : महाकवि भवभूति रचित 'उतररामचरित' एवं कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' आदि।

2. प्रकरणः

''भवेत्प्रकरणे वृत्तं लौकिकं कविकल्पितम्।।

श्रृंगारोडंगी नाटकस्तु विप्रोमात्योथवा वणिक्।

सापाय धर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तकः।।

नायका कुलजा क्वापि वेश्या क्वादि द्वयंवचित्।

तेन भेदास्त्रयस्तस्यतत्र भेद तृीयकः

कितवधूतकारादिविटचेटकसंकुलः।।

अर्थातः– रूपक के दूसरे भेद प्रकरण में कथावस्तु लौकिक एवं कविकल्पित होती है। इसमें श्रृंगार की अभिव्य ञ्जना अंगी रस में हुआ करती है। नायक विप्र (ब्राह्मण),अमाव्य (मन्त्री), अथवा वणिक् (वेश्य) श्रेणी में से कोई एक हो सकता है जो विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म काम और अर्थ परायण में आसक्त धीर प्रशान्त होता है। प्रकरण में कुलस्त्री नायिकारूप में चित्रित की गयी है। कहीं वेश्या को नायिका बनाया गया है और कही कुलजा (कुलीन) तथा वैश्या दोनों नायिकारूप में वर्णित की गयी है। इन तीनो प्रकरण भेदों में तृतीय 'कुलजा–वेश्या–नायिका–द्वयात्मक' जो प्रकरण है उसमें धूर्त, धूतकार, विट और चेट आदि का भी पर्याप्त चित्रण रहा करता है। यथा–

महाकवि शूद्रक विरचित 'मृच्छकटिकम्', जिसका नायक (चारूदत्त) एक ब्राह्मण है। महाकवि भवभूति रचित 'मालतीमाधव' जिसका नायक माघव एक राजसचिव है और पुष्पभूषित जिसका नायक एक वणिक् है।

3. भाण :

भाणः स्याद्धूर्तचरितो नानावस्थान्तरात्मकः

एकाङ.क एक एवात्रनिपुणः पण्डितो विटः।

रंगे प्रकाशयेत्स्वेनानुभूतमितरेण वा।।

संबोधनोक्तिप्रत्युक्ती कुर्यादाकाशभाषितैः।

सूचयेद्वीरश्रृंगारौ शौर्यसौभाग्यवर्णनैः।।

तत्रोतिवृत्तमुत्पाद्यं वृत्तिः प्रायेण भारती।

मुखनिवर्हणे सन्धी लास्याङ.ानि दशापिच ।।

अर्थात्– धूर्त नायको के चरित्र वाला, नाना प्रकार की विभिन्न अवस्थाओं के स्वरूप वाला, एक (01) अंक में समाप्त होने वाला रूपक भाण कहलाता है। इसमें एक ही निपुण बुद्विमान नायक, जो कि 'विट' हुआ करता है वहीं नाट्यशाला को प्रकाशित करता है। इसमें श्रृंगार और वीर इस की अभिव्य-जना हुआ करती है। जिसके लिए विलास वर्णन और शौर्य वर्णन अपेक्षित रहा करती हैं। इतिवृत्त (कथावस्तु) कविकल्पित हुआ करती है और भारती नामक वृत्ति से युक्त तथा मुख एवं निवर्हण सन्धि का होना आवश्यक है। यथा – लीलामधुकम्।

4. व्यायोग :–

ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः स्वल्पस्त्रीजनसंयुतः।

ही नो गर्भविमर्शाभ्यां नरैर्बहुभिराश्रितः।।

एकांकश्च भवेदस्त्रीनिमित्त समरोदयः।

कैशिकीवषतिरहितः प्रख्यातस्तत्र नायकः।।

हास्यश्रृंगारशान्तेभ्यः इतरेऽत्राङि.गनो रसाः।।

अर्थात्: इतिहास प्रसिद्व कथानक वाला और स्त्री पात्रों की संख्या कम तथा पुरूष पात्रों की संख्या की अधिकता वाला व्यायोग है। गर्भ और विमर्श सन्धि से रहित, एक अंक वाला अर्थात् एक ही अंक में समाप्त हो जाने वाला, स्त्री कारण के बिना युद्व की उपस्थिति वाला, कौशिक वृत्ति से रहित साथ ही साथ इस का नायक राजर्शि, दिव्य पुरूष और धीरोद्वत लक्षण वाला होता है। इसमें हास्य, श्रृंगार और शान्त इन तीन रसो को दौडकर, अन्य रसों में से किसी को भी अंगो अथवा प्रधान रूप में रखा जा सकता है। यथा – ''सौगन्धिकाहरणम''।

5. समवकार

वृत्तं समवकारे तु ख्यातं देवासुराश्रयम्।

सन्धयो निर्विमर्षास्तु त्रयोऽड.कास्तत्र चादिमे।।

सन्धी द्वावन्त्ययोस्तद्वदेक एको भवेत्पुनः।

नायका द्वादशोदात्ताः प्रख्याता देवमानवाः।

फलं पृथक्पृथक्तेषां वीरमुख्योडखिलो रसः।

वृत्तयो मन्दकैशिक्यो नाम बिन्दुप्रवेशकौ।।

अर्थात् : समवकार में देव और असुरों से सम्बन्धित पुराण एवं ऐतिहासिक कथानक होना चाहिए इसमें विमर्श सन्धि से रहित चार सन्धियों का होना और तीन अंकों में परिसमाप्य करना चाहिए। कौशिकी वृत्ति एवं बिन्दु व प्रवेशक का अभाव होता है। नायको की संख्या 12 हो जो देव तथा मनुष्य होने चाहिए। वीर रस की प्रधानता से युक्त गायत्री, उष्णिक आदि छन्दो वाला होना परमावश्यक है। यथा–

समुद्रमन्थनम्।

6. डिम : मायेन्द्रजालसंग्रामक्रोधोद्भ्रान्तादिचेष्टितैःउपरागैश्च भूयिष्ठो डिमः ख्यातेतिवृत्तकः अंड्गो रौद्ररसस्तत्र र्स्तेऽड.गनि रसाः पुनः।

चव्वारोऽड.का मता नेह विष्कम्भकप्रवेशकौ।।

नायका देवगन्धर्वयक्षरक्षोमहोरगाः।

भूतप्रेतपिशाचाद्याः शोडशान्त्यन्तमुद्वताः।।

वृत्तयः कैशिकीहीना निर्विमर्शाश्रचसन्धयः।

द्रीप्ताः स्युः षड्साः शान्तहास्यश्रृंगारवर्जिताः।।

अर्थातः माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध तथा उद्भ्रान्त आदिको चेष्टाओं से युक्त एवं सूर्य्रहण और चन्द्रग्रहण से व्याप्त प्रसिद्व कथानक वाला रूपक डिम कहलाता है। इसका प्रधान रस रौद्र एवं इसमे अंको की संख्या 4 होती है। इसमे विष्कम्भक और प्रवेशक की योजना आवश्यक नहीं है। इसमे देव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, महोरग, भूत–प्रेत और पिशाचादिक 16 प्रकार के नायक होते हैं। यह कौशिकी वृत्ति और विमर्श सन्धि से रहित तथा इसमें शान्त हास्य एवं श्रृंगार को छोड़कर अन्य 6 रसों की दीप्ति होनी चाहिए। यथा–त्रिपुरदाह–

7 ईहामृग–

ईहामृगो मिश्रवृत्तश्रचतुरड.कः प्रकार्तितः।

मुखप्रतिमुख सन्धी तत्र निर्वहणं तथा।।

नरदिव्यावनियमौ नायकप्रतिनायकौ।

ख्यातौ धीरोद्वतावन्यो गूढ़भावादयुक्तकृत्।।

दिव्यस्त्रियमनिच्छन्तमिपहारादिनेच्छतः।

शृंगाराभासमप्यस्य किञ्चितक्किञ्चत्प्रदर्शयेत्।

पताकानायका दिव्या मर्त्या वापि दशोद्वसाः।

युद्धमानीय संरम्भ परं व्याजान्निवर्तते।।

अर्थात् : ईहामृग नामक रूपक की कथावस्तु ऐतिहासिक और मिश्रित होती है। इसके 4 अंको का होना अनिवार्य माना गया है। इसके मुख, प्रतिमुख और निवर्हण नामक 3 सन्धियों का होना बताया गया है। शृंगार इस की प्रधानता के साथ–साथ मानव तथा देवता प्रसिद्व धीरोद्वत नायक और प्रतिनायक होते हैं। जिसमें प्रतिनायक का कुछ–कुछ शृंगाराभास भी दिखाना चाहिए। दिव्य अथवा मनुष्य उद्वत प्रकृति वाले 10 पताका के नायक होते हैं। ईहामृग नाम इसलिए है क्योंकि इस रूपक प्रकार में नायक मृग (हिरण), की भान्ति ऐसी नायिका की ईहा अथवा कामना मे निरत चित्रित किया जाता है जो कि अलभ्य हुआ करती है।

यथा– कुसुमशेखरविजय।

8 अंक

उत्सृष्टिकाऽ कएंकाऽ को नेतारः प्राकृता नराः।

रसोऽत्र करूणः स्थायी बहुस्त्रीपरिदेवितम्।।

प्रख्यातमितिवृत्तं च कविर्बुद्वया प्रप ञ्चयेत।

भाणवत्सन्धिवृत्यड.गान्यस्मि ञ्जयपराजयौ।।

युद्वं च वाचा कर्त्तव्यं निर्वेदवचनं बहु।।

अर्थात्–

अंक का ही दूसरा नाम उत्सृष्टिकाऽक है। अंक नामक रूपक इतिहास प्रसिद्व कथानक वाला होता है जिसमें ही अंक होता है। साधारण व्यक्ति नायक एवं करूण इस से भरपूर होता है इस रूपक में बहुत सी स्त्रियों का विलाप होता है। मुख एवं निवर्हण नामक सन्धि तथा कौशिकी वृत्ति से युक्त होता है।

यथा : शर्मिष्ठाययाति

9 वीथी

वीध्यामेको भवेदड.कः कश्चिदेकोऽत्र कहप्यते।

आकाशभाषितैरूक्तौश्रिचत्रां।।

सूचयेद्भूरि शृंगार कि ञ्चदन्यान्रसान् प्रति।

मुखनिर्वहण सन्धी अर्थप्रकृतयोडखिलाः।।

अर्थात् : वीथी नामक रूपक में एक अंक हुआ करता है। कथा वस्तु या इतिवश्त कविकल्पित और एक ही नायक 'आकाशभाषित' के द्वारा, चित्र–विचित्र, उत्तर–प्रत्युत्तर–पूर्वक, अन्यान्य काल्पनिक पात्रो से, आलाय–संलाप करते हुए

चित्रित किया जाता है। श्रृंगार रस की अधिकता के साथ–साथ अन्य रसों की भी सूचना दी जाता है। मुख एवं निर्वहण नामक दो सन्धियों के साथ–साथ कौशिकी वृत्ति 13 अंगो सहित और पाँचों अर्थप्रकृतियों से युक्त होता है। विद्वानों ने वीथी के 13 अंग बताये हैं।

यथा : महाकनि कालिदास विरचितम्।

मालविकाग्निमित्रम्।

10 प्रहसनः

भाणवत्सन्धिसन्हयऽग लास्याऽगाकैर्विनिर्मितम्।

भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्द्यानां कविकल्पितम्।।

अत्र नारभरी नापि विष्कम्भकप्रवेशकौ।

अऽगो हास्यरसस्तत्र वीहयडंगानां स्थितिर्नवा।।

तपस्विभगवद्विप्रप्रभृतिष्वत्र नायकः।

एकोयत्र भवेद्धृष्टो हास्यं तच्छुद्वमुचयते।।

यथा –

भाण के समान मुख, निर्वहण नामक सन्धि, नाना प्रकार के सन्ध्यंग, दस लास्यांग तथा 1 अंक से युक्त कवि द्वारा निन्दनीय व्यक्तियों के कथानक वाला प्रहसन होता है। इस प्रहसन नामक रूपक में आरभरी वृत्ति एवं विष्कम्भक तथा प्रवेशक भी नहीं होते हैं। हास्य रस की प्रधानता, नायक तपस्वी, सन्यासी और ब्राह्मण में से कोई एक होता है।

उपर्युक्त रूपको के दस भेदों को विस्तार से बताने के बाद अब 18 प्रकार के उपरूपको की संख्या है।

यथा :–

नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकंनाटयरासकम्।

प्रस्थानोल्लाप्यकान्यानि प्रेड्.रवणं रासकं तथा।।

संलापकंश्रीगदितं शिल्पंकच विलासिका।

दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेतिच।।

अष्टादश प्राहरूपरूपकाणि मनीशिणः।

विना विशेषं सर्वेषं लक्ष्म नाटकवन्मतम्।।

अर्थात् :

1)	नाटका	2)	त्रोटक	3)	गोष्ठी	4)	सटटक
5)	नाटयरासक	6)	प्रस्थान	7)	उल्लाप्स	8)	काव्य
9)	प्रेड्.खल	10)	रासक	11)	संलापक	12)	श्रीगपित
13)	शिल्पक	14)	टिलासिका	15)	दुर्मल्लिका	16)	प्रकरणी
17)	हल्लीश	18)	भाणिका।				

ये 18 उपरूपक होते हैं। कुछ विशेषताओं को छोड़कर सभी रूपक तथा उपरूपकों के लक्षण नाटक की तरह होते हैं।

4) **परीक्षार्थ प्रश्न**

क) रूपक कितने हैं?

ख) दस रूपको के नाम लिखें (संस्कृत में)।

ग) उपरूपको की संख्या कितनी है ?

5) **प्रश्नों के उत्तर**

क) 10 (दस)

ख) नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनम् डिमः।
व्यायोग समवकार वीथीऽकईहामृगा इति।।

ग) 18

6) **उपयोगी पुस्तके :**

1) दशरूपक धनञ्जय कृत–

2) नाट्यशास्त्र भरतमुनिविरचित।

3) साहित्य दर्पणः विश्वनाथप्रणीत
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

दशरूपकों को (एक दृष्टि में) निम्न तालिका द्वारा दर्शाया जा रहा है।

क्रम	रूपक	कथावस्तु	अंक	नायक	सन्धियां	वृति रस	उदाहरण
1	नाटक	इतिहास एवं पुराण प्रसिद्ध	5–10	धीरोदात्त, राजा या क्षत्रिय	5	–	उत्तररामचरित अभिज्ञान–शाकुन्तलम
2	प्रकरण	लौकिक एवं कवि कल्पित	10	धीर प्रशान्त, ब्राह्मण, मन्त्री आदि	5	–	मृच्छकटिकम
3	भाण	कवि कल्पित	1	धूर्त	मुख एवं निर्वहण 2 सन्धियाँ	कौषिकी	लीला–मधुरकम
4	प्रहसन	कवि कल्पित	1	पुरूष, तपस्वी, ब्राह्मण	मुख एवं निर्वहण 2	आरभटी से रहित	कन्दर्पकेलि
5	डिम	इतिहास प्रसिद्ध	4	छेव, गर्न्धव आदि 16 प्रकार के नायक	4 सन्धियां	कौषिकी से रहित	त्रिपुरदाह
6	व्यायोग	इतिहास चर्चित	1	राजर्षि एवं धीरोद्धत	3 सन्धियां	कौषिकी से रहित	सौगन्धिकाहरणम्
7	समवकार	पुराण एवं ऐतिहासिक	3	देवता या मानव	4	कौषिकी से रहित	समुद्रमन्थनम्
8	वीथी	कवि कल्पित	1	कल्पित	मुख एवं निर्वहण	कौषिकी वृत्ति के 13 अंगों सहित	मालविकाग्निमित्रम्
9	अंक	इतिहास प्रसिद्ध	1	साधारण	2	कैषिकी	शर्मिष्ठा ययाति
10	ईहामृग	मिश्रित कथानक	4	मानव या देवता	2 मुख प्रतिमुख	–	कुसमशेखर विजय आदि

B.A. II SEM. **PAPER SANSKRIT**

Unit — V (Paper A) **Lesson No. 20**

पाठशीर्षक :–जम्मू विश्वविद्यालय Directorate of Distance Education द्वारा B.A.-2nd Sem पत्र संस्कृत के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम से सम्बद्ध प्रश्न और उत्तर ।

साहित्य दर्पण के आधार पर नायक का लक्षण और भेद

पाठ की रूपरेखा :–

1. प्रस्तावना
2. उद्धेश्य
3. वस्तु विवेचन
1. अभ्यास कार्य
2. उपयोगी पुस्तकें

1. प्रस्तावना

नाटकादि के इतिवृत्त का नायक वही बन सकता है, जिसमें विनीतत्वादि अनेक गुण विद्यमान हो। नायक को नाटयशास्त्र में चार प्रकार का माना गया है। यह चार प्रकार के भेद नायक की प्रकृति के आधार पर किये गये है। ये चारों प्रकार के नायक 'धीर' तो होते ही हैं, धीरत्व के अतिरिक्त इनमें अपनी–अपनी प्रकृतिगत विशेषता पाई जाती है। नायक का प्रकार 'ललित' या धीरललित है, 'शान्त' या धीरशान्त, 'उदात्त' या धीरोदात और 'उद्वात' या 'धीरोद्वत' है। इनके उदाहरण क्रमशः वत्सराज उदयन, चारूदत्त, राम तथा भीमसेन दिये जा सकते है। संस्कृत नाटाकें में नायक की मुख्य भूमिका होती है। नाटक का प्रधान तत्त्व नायक ही है। नायक को धीरोदात्त उच्च्कुलोत्पन्ना, और सर्वगुण सम्पन्न होना चाहिये। रूद्रट को छोड़कर अन्य आचार्यों ने नायक के गुणों की और विशेष ध्यान नहीं दिया। नाटक के साथ ही कही–कही प्रतिनायक की भी स्थिति होती है। इसी प्रकार नायिका के साथ साथ कहीं नाटाके में प्रतिनायिका या उपनायिका की

भी स्थिति होती है। इससे नाटकीय कथा वस्तु में संघर्ष उत्पन्न किया जा सकता है तथा रोचकता और गतिशीलता लाई जा सकती है। नायक नाटक का प्रधान पात्र होता है, और उसके उदात्त गुणों से ही नाटक में गुणवत्ता पैदा की जा सकती है। उसमें दया, दाक्षिण्य ललित कला ज्ञान वीरता साहस, तथा गुणज्ञता आदि गुण होने आवश्यक है।

2. उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप –

1. नायक का लक्षण तथा उसके भेदोपभेद जान पायेंगे।
2. किन किन गुणों के आधार पर नायक को किस कोटि में रखा जा सकता है यह भी जानने में समर्थ होंगे।

3. वस्तु विवेचन

नायक का स्वरूप निरूपण

नायक वह है जो त्याग भावना से भरा हो, महान् कार्यों का करने वाला हो महान कुलोत्पन्न हो, बुद्धि वैभव सम्पन्न हो, रूप यौवन और उत्साह की भावनाओं से सम्पन्न हो। निरन्तर उघोग शील रहने वाला हो। जनता का स्नेहभाजन हो। तेजस्विता चातुर्य और सुशीलता का प्रतीक हो।

अभिप्राय यह है कि जिस व्यक्ति में त्याग आदि गुणों का सर्वतोभद्र सद्भाव हो वही (काव्य–नाटक में) नायक अथवा नेता सहदय सामाजिक को कवि किं वा नाटककार के आदर्शो की ओर ले जाने वाला? हुआ कराता है। यथा

त्यागी कृती कुलीनः सुश्रीको रूप यौवनोत्साही।

दक्षो.नुरक्तलोकस्तेजोवैदग्ध्यषीलवान्नेता।।

साहित्य दर्पणकार आर्चाय विश्वनाथ का कथन हैं कि नायक के चार प्रकार के भेद होते है :–

1. धीरोदात्त
2. धीरोद्वत
3. धीरललित
4. धीरप्रशान्त

यथा–

धीरोदातो धीरोद्वतस्तथाधीरललितश्च

धीरप्रशान्त इत्यमुत्तः प्रथमश्चतुर्भेदः।

1. धीरोदात्त नायक लक्षण

धीरोदात्त प्रकृति का नायक प्रायः राजा या राजकुलोत्पन्न होता है। वह निरभिमानी, अत्यन्त गम्भीर, स्थित तथा अविकत्थन होता है, जिस व्रत को वह धारण कर लेता है उसे छोड़ता नहीं। धीरोदात्त नायक, नायक के सम्पूर्ण आदर्शों से युक्त होता है। साहित्यदर्पणकार काभी कथन है कि जो आत्मश्लाघा की भावना से रहित हो, क्षमाशील तथा अति गम्भीर स्वभाव वाला हो। दुःख और सुख में सर्वदा प्रकतिस्थ रहने वाला हो। स्वभाव से स्थिर स्वाभिमानी और विनीत हो अपनी बात का पक्का हो। जैसे उत्तररामचरित के रामचन्द्र और अभिज्ञानशाकुन्तलम का दुष्यन्त धीरोदात्त नायक है।

यथा–

अविकत्थनः क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्वः।

स्थेयान्निगूढ़मानो धीरोदात्तो दृढ़व्रतः कथितः।।

2. धीरोद्वत नायक का लक्षण

धीरोद्वत कोटी के नायको में परशुराम या भीमसेन का नाम आता है। धीरोद्वत नायक उग्र स्वभाव वाला, ध
ामण्डी, अहंकार और दर्प से भरा हुआ ईर्ष्यापूर्ण, विकत्थन तथा छली होता है। तथा आत्मश्लाघा में सदैव निरत हो। यथा

मायापरः प्रचण्डचपलोऽहंकारदर्पभूयिष्ठः।

आत्मश्लाघानिरतो धीरैधीरोद्वतः कथितः।।

3. धीरललित नायक का लक्षण

धीरललित नायक राजपाट की या दूसरी चिन्ताओं से मुक्त होता हैं। वह संगीत, नृत्य, चित्र आदि कला का प्रेमी और रसिक–वृत्ति का होता है। प्रेम उसका उपास्य होता है, वह भोगविलास में लिप्त रहता है, तथा प्रायः अनेक पत्नीवाला होता है। धीरललित नायक अधिकतर राजा होता। उसका राज्कार्य मन्त्री आदि संभाले रहते हैं और वह अन्तःपुर की चारदीवारी में प्रेमक्रीड़ा किया करता है। यहीं पर वह नई–नई सुन्दरियों के प्रति अपने प्रेम–प्रदर्शन की धुन में रहता है। अपने इस व्यापार में वह अपनी महादेवी से सदा डरता हुआ, शंकित होकर, प्रवृत्ति होता है। भास तथा हर्षवर्धन का वत्सराज उदयन ऐसा ही धीरललित नायक है। यथा

निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो धीरललितः स्यात् ।

4. धीरप्रशांत्त नायक का लक्षण

धीरप्रशांत्त प्रकृति का नायक धीरललित से सर्वथा भिन्न होता है। उसमें त्याग आदि गुण प्रचुर मात्रा विद्यमान होते है। कुल की दृष्टि से वह शान्त प्रकृति का होता है। शान्त प्रकृति प्रायः ब्राह्मण या वैश्य में ही होती है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि धीरप्रशांत्त कोटि का नायक या तो ब्राह्मण होता है या वैश्य हाता है। यह दूसरी बात है किवह चारूदत्त या माधव की तरह कलाप्रिय भी हो। प्रकरण नामक रूपकभेद का नायक प्राय धीरप्रशांत्त ही होता है। शूद्रक के मृच्छकटिक का नायक 'चारूदत्त' तथ भवभूति के मालतीमाधव प्रकरण का नायक 'माधव' धीरप्रशान्त है। यथा

सामान्य गुणैर्भूयान्द्विजादिको धीरप्रशान्त स्यात्।

नायक का एक दूसरे ढंग का वर्गीकरण भी किया जाता है। वह वर्गीकरण उसके प्रेमव्यापार एवं तत्सम्बन्धी व्यवहार के अनुरूप होता है। प्रेम की अवस्था में नायक के दक्षिण, शठ, धृष्ट तथा अनुकूल ये 4 रूप देखे जा सकते हैं। ये रूप अपनी परिणीता पत्नी के प्रति किये गये उसके व्यवहार में पाये जाते हैं। जो 16 भेदों में विभक्त हो जाते हैं।

दक्षिण नायक

एक से अधिक प्रियाओं को एक ही तरह से प्यार करता है। रत्नावली नाटिका वत्सराज उदयन दक्षिण नायक है।

शठ नायक

अपनी ज्येष्ठा नायिका के साथ बुरा वर्ताव तो नहीं करता, पर उससे छिप–छिप कर दूसरी नायिकाओं से प्रेम करता है।

घृष्ट नायक

धोखेबाज है, वह ज्येष्ठा नायिका की पर्वाह नहीं करता, कभी–कभी खुलेआम भी दूसरी नायिका–कनिष्ठा से प्रेम करता है। एक ही नायक में भी तीनों असवस्थाएं मिल सकती है। रत्नावली का उदयन वैसे कई स्थान पर दक्षिणरूप में, कई स्थान पर शठरूप में तथा कई स्थान पर घृष्टरूप में सामने आता है। फिर भी उसमें प्रधानता दक्षिणत्व की ही है।

अनुकुल नायक

सदा एक नायिका के प्रति आसक्त रहता है। जैसे उत्तररामचरित के रामचन्द्र अनुकूल नायक है, जो केवल सीता के प्रति आसक्त हैं। यथा –

एषु त्वनेक महिलासमरागो दक्षिणः कथितः।

शठोऽयमेकत्र बद्वभावो यः।
दर्शितबहिरनुरागो विप्रयमन्यत्र गूढ़माचरति।।

कृतागा अपि निःशकस्तर्जितोऽपि न लज्जितः

दृष्ट दोषोऽपि मिथ्यावाक् कथितो धृष्टनायकः।।

अनुकूल एकनिरत।

उपर्युक्त 16 प्रकार के नायकों के पुनः उत्तममध्यम और अघम रूप होने से कुल मिलाकर नायक के 48 भेद समझे जा सकते है। जिसे निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है।

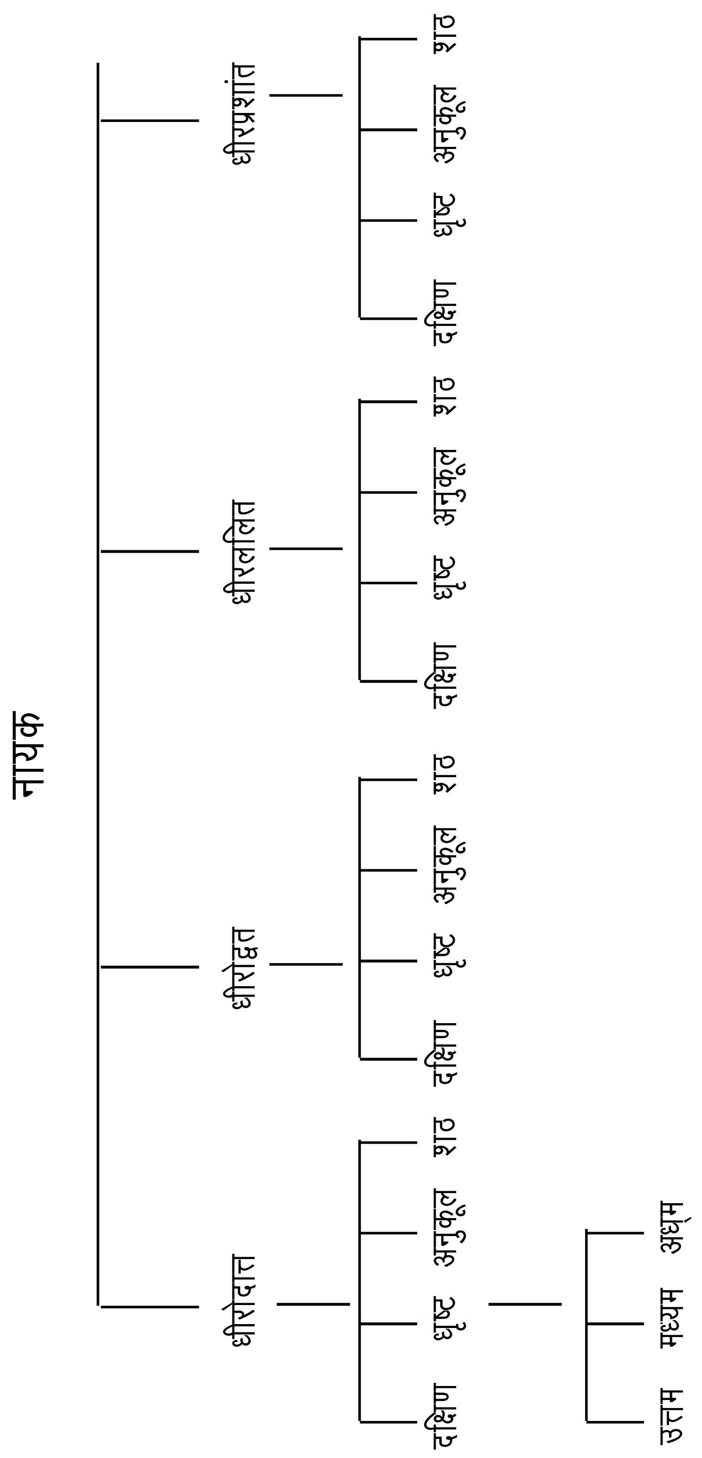
नायक
धीरोदात्त
धीरोद्धत
धीरललित
धीरप्रशांत
दक्षिण
धृष्ट
अनुकूल
शठ
दक्षिण
धृष्ट
अनुकूल
शठ
दक्षिण
धृष्ट
अनुकूल
शठ
दक्षिण
धृष्ट
अनुकूल
शठ
उत्तम
मध्यम
अधम

4. अभ्यास कार्य :

प्रश्न 1 नायका का लक्षण लिखें ?

प्रश्न 2 नायका के चार भेदों का निरूपण करें।

प्रश्न 3 नायक के लक्षण एवं भेदों को तालिका द्वारा स्पष्ट करें।

5. उपयोगी पुस्तके :

1. दशरूपक धनञ्जय कृत –

2) नाट्यशास्त्र भरतमुनिविरचित।

3) साहित्य दर्पणः विश्वनाथ विराजप्रणीत
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

–Dr. Rajesh Sharma
Asstt. Prof. In Sanskrit
Govt. M.A.M, College Jammu

पाठशीर्षक :–जम्मू विश्वविद्यालय Directorate of Distance Education द्वारा B.A.-2nd Sem. पत्र संस्कृत के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम से सम्बद्व प्रश्न और उत्तर ।

<u>नायिका का लक्षण एवं भेदः–</u>

पाठ की रूपरेखा :–

1) पाठ परिचय

2) प्रस्तावना

3) उद्देश्य

4) वस्तुविवेचन

5) तालिका

6) अभ्यासकार्य

1. **पाठ परिचयः**– प्रस्तुत पाठ में साहित्यदर्पण के आधार पर नायिका के लक्षण एवं भेदों पर प्रकाश डाला गया है।

2. **प्रस्तावनाः**–

संस्कृत नाटकों में नायक की मुख्य भूमिका के साथ–साथ नायिका का भी ठीक उतना ही महत्व है जितना की नायक का। क्योंकि दोनों एक दूसरे के सहयोगी बन कर नाटकादि रूपकों में साहित्य की श्री वृद्धि करते हैं और इन दोनों

के बिना नाटक अधूरा ही रह जायेगा। इसी प्रकार नायिका के साथ–साथ कही–कही नाटकों में प्रति नायिका या उपनायिका की भी स्थति देखने को मिलती है। जिससे नाटकीय कथा वस्तु में संघर्ष उत्पन्न किया जा सकता है और रोचकता लाई जा सकती है। नायक के गुणों की भाँति नायिक का में भी गुणों की स्थिति मानी गई हैं। नायिका में ये गुण–अलंकार कहलाते हैं जो गणना में 20 तक होते हैं। नायिकाओं में राजा की पट रानी महादेवी कहलाती है। जो उटचकुलोत्पन्न होती है। राजा की रानियों में कई निम्नकुल की उपपत्नियाँ भी हो सकती हैं। जिन्हें स्थायिनी या भोगिनी कहा जाता है। अन्तपुर में रानियों की कई सखियाँ, दासियाँ आदि भी वर्णित की जाती हैं। सेविकाये महादेवी या रानियों को ''भटिटनी'' या ''स्वामिनी'' कहती है तथा राजकुमारियाँ ''भृर्तदारिका'' शब्द से सम्बोधित की जाती है।

3) उद्देश्यः–

1. इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी नायिका के स्वरूप से परिचित होगें।

2. नाटकादि रूपकों में नायिका का भी ठीक उतना ही महत्व है जितना की नायक का उसकी जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

3. छात्र–छात्राएँ नायिका के भेदोपभेदों के विस्तृत स्वरूप को समझने में सक्ष्म हो सकेगें।

4) वस्तुविवेचन :–

नाटकादि दस प्रकार के रूपकों में नायिका का भी ठीक इतना ही महत्व है, जितना की नायक का, विशेष रूप से श्रृंगार रस के रूपकों में नायिका का विशेष व्यक्तित्व देखने को मिलता है। नायिका का वर्गीकरण तीन प्रकार का होता है। प्रथम रूप का वर्गीकरण उसके तथा नायक के सम्बन्ध पर आधृत होता है। द्वितीय रूप का वर्गीकरण एक और उसकी उम्र और अवस्था तथा दूसरी ओर नायक के प्रतिकूलाचरण करने पर उसके प्रति नायिका के व्यवहार के आधार पर किया जाता है। तृतीय रूप का वर्गीकरण उसकी प्रेमगत दशा के वर्णन के सम्बद्ध है।

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने स्वरचित ग्रन्थ साहित्यदर्पण के तृतीय परिच्छेद मे नायिका का निरूपण करते हुए लिखता है कि–

''अथ नायिकात्रिभेदास्वान्यासाधारणास्त्रीति।

नायकसामान्यगुणैर्भवति यथासम्भवैर्युक्ता।।''

अर्थात् :

नायिका तीन प्रकार की हुआ करती है।

1) स्वीया

2) अन्या (परकीया)

3) सामान्या

इस आलम्बन रूप में नाटय–काव्यादि में उपस्थापित 'नायिका' में भी 'नायक' के ही समान त्याग, आर्जव आदि सामान्यगुण यथा–सम्भव उपनिबद्ध किये जाते हैं अतः नायिका के स्वस्त्री (स्वीया) अन्यस्त्री (परकीया) और साधारणस्त्री (सामान्या) ये तीन भेद पाये जाते हैं।

इसी बात को आचार्य धनञ्जय ने 'दशरूपक' में भी कहा है कि नायिका के मोटे तौर पर तीन भेद होते हैं। (1) स्वीया (स्वकीया) अर्थात् नायक की स्वयं की परिणीता पत्नी, जैसे महाकवि भवभूति रचित उत्तररामचरित की सीता। (2) अन्या अर्थात् वह नायिका जो नायक की स्त्री नहीं है, यह या तो किसी व्यक्ति की अनूढ़ा कन्या हो सकती है या किसी की परिणीता पत्नी जैसे महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शकुन्तला, और मालतीमाधव में मालती में अनूढ़ा कन्या का रूप हम देख सकते हैं। (3) सामान्या अर्थात् साधारण स्त्री या गणिका। कई रूपकों में विशेषकर प्रकरण तथा भाण में गणिका भी नायिका के रूप में चित्रित की जा सकती है जैस महाकवि शूद्रक विराचित मृच्छकटिक की नायिका वसन्तसेना एक गणिका है।

1) **स्वीया नायिका निरूपण**

स्वरूप (लक्षण) है।

''विनयार्जवादियुक्ता गृहकर्मपरा पतिव्रता स्वीया''

यथा :

''लज्जापर्याप्तप्रसाधनानि परभर्तुनिष्पिपासानि।

अविनयदुर्मेद्यानि धन्यानां गृहे कलत्राणि।।''

अर्थात् :

वह स्त्री जिसमें नम्रता और सरलता आदि गुण रहा करते हैं, जो गृहकार्य में तत्पर और पतिव्रता हो स्वीया नायिका कहलाती है। इसका उदाहरण देते हुए कविराज विष्वनाथ का कहना है कि वे लोग बहुत ही भाग्यषाली हैं जिनकी स्त्रियाँ अपनी लज्जा को ही अपना एकमात्र अलंकार माना करती हैं, अपने हृदय में दूसरी स्त्रियों के पतियों के प्रेम की प्यास नहीं रखा करती और अपने व्यवहार में भी किसी प्रकार के अनाचार का परिचय नहीं दिया करती स्वीया कहलाती है। उनका कथन है कि काव्य–साहित्य में ''स्वीया'' नायिका का चित्रण वर्णाश्रम–व्यवस्था की मर्यादा के अनुसार ही किया गया है। और स्वीया नायिका के भी तीन भेद हुआ करते हैं।

''स्वीया नायिकाऽपि कथतात्रिभेदा मुग्धा–प्रगल्भेति'' अर्थात् (क) मुग्धा, (ख) मध्या और (ग) प्रगल्भा।

क) मुग्धानायिका निरूपण :

''प्रथमावतीर्णयौवनमदनविकारा रतौ वामा।

कथितामश्दक्ष्च् माने समधिकलज्जावती मुग्धा।।

अर्थात्– मुग्धानायिका प्राप्तयौवना होती है जिसके शरीर में यौवन अवतरित हो चुका होता है, जिससे मन में काम का उन्मेश प्रारम्भ हो रहा हो, वह बड़ी भोली, प्रेम कलाओं से अज्ञात, प्रेम लीला से डरी सी रहती है, जिसका प्रणयकोप कोमलता लिये हो और जो अपनी लज्जाशीलता के कारण प्रेम प्रकाषन में विवश, नायक के समीप अकेली जाने (रहने) से डरती हो तथा नायक के प्रतिकुलाचरण करने पर उस पर क्रोध नहीं करती बल्कि स्वय–आसु गिराती है।

ख) मध्या नायिका निरूपणः

''मध्या विचित्रसुरता प्ररूढस्मरयौवना।

ईषत्प्रगल्भवचना मध्यमव्रीडिता मता।।''

अर्थात्–

मध्या वह नायिका है जो रंग–बिरंग की रतिकलाओं में निपुण हो चुकी होती है, सम्प्राप्ततारूण्यकामा होती है जिसमें कामपिपासा बढ़ती दिखाई दे, यौवन उभार पर हो, जिसे प्रणयालाप में कोई विषेश हिचक नहीं हुआ करती और जिसकी रती लज्जा बहुत अधिक नहीं रही हो मध्या नायिका कहलाती है।

(ग) प्रगल्भा नायिका निरूपणः

''स्मरान्धा गाठतारूण्या समस्तरतकोविदा।

भावोन्नता दरव्रीडा प्रगल्भाक्रान्तनायका।।''

अर्थात्– प्रौढ़ा (प्रगल्भा) नायिका प्रेमकला में दक्ष होती है, प्रेमक्रीडा में वह कई प्रकार के अनुभव रखती है, जिसका यौवन पूरे उभार पर पहुँच गया हो, स्मरोन्माद बढने पर हो, जिसमें रति कला के समस्त कौषल सभ चुके हो, जिसमें हाव–भाव पूर्ण रूप से विकसित हो चुके हो, रति लज्जा धोड़ी ही मात्र बच गई हो तथा जो रतिकलाओं में नायक को भी पछाड़ने की शक्ति रखने लगी हो प्रगल्भा नायिका कहलाती है।

तत्पश्चात् आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण के तृतीय परिच्छेद में मुग्धा नायिका को छोड़कर मध्या और प्रगल्भा के 6–6 भेद तथा मुग्धा को मिलाकर कुल स्वीया नायिका को 13 भेद किये हैं।

यथा–

ते धीराचाप्यधीरा च धीराधीरेति षड्विद्ये।

प्रियंसोत्प्रासवक्रोक्त्या मध्या धीरा दहेद्रुषा।।

धीराधीरा तु रूदितैरधीरा पुरूषेक्तिभिः।

प्रगल्भा यदि धीरा स्याच्छन्न कोपाकृतिस्तदा।।

उदास्ते सुरते तत्र दर्शयन्त्यादरान् बहिः।

धीराधीरा तु सोल्लुण्ठभषितैः रवेदयत्यमुम।।

तर्जयेत्ताऽयेदन्या प्रत्येकं ता अपि द्विधा।

कनिष्ठज्येष्ठरूपत्वान्नायकप्रणयं प्रति।।

मध्याप्रगल्भयोर्भेदास्तस्माद् द्वादश कीर्तितताः।

मुग्धा त्वेकैव तेन स्युः स्वीयाभेदास्त्रयोदशः।।

अर्थात्:

प्रथम तीन रूप 1. धीरा 2. अधीरा 3. धीराधीरा। धीरा मध्या प्रतिकूलाचरण वाले नायक को श्लिष्ट वाक्यों के द्वारा उपालंभ देती है। अधीरा कटु शब्दों को प्रयोग करती है। धीराधीरा मध्या एक ओर रोती है, दूसरी आरे नायक को व्यंग्य भी सुनाती है। इस प्रकार मध्या तीन प्रकार की होती हैं। प्रौढ़ा या प्रगल्भा नायिका प्रेमकला में दक्ष होती है, प्रेमकीड़ा में वह कई प्रकार के अनुभव रखती है। कृतापराधप्रिय के प्रति उसका आचरण मध्या की भाँति ही तीन तरह का हो सकता है। अतः वह भी तीन प्रकार की होती हैः . धीरा 2. अधीरा 3. धीराधीरा। धीरा प्रौढा प्रिय को कुछ नहीं कहती, वह केवल उदासीन वृत्ति धारण कर लेती है। इस प्रकार वह नायक की कामक्रीडा में हाथ नहीं बॅटाती और उसमें बाधक सी होकर अपने क्रोध की व्यन्जना करती है। अधीरा प्रौढा नायक को डराती, धमकाती और यहाँ तक कि मारती–पीटती भी है। धीराधीरा प्रौढ़ा मध्या धीराधीरा की भाँति ही व्यंग्योत्ति का प्रयोग करती है। इसके साथ ही मध्या तथा प्रौढ़ा के तीन–तीन भेदों का फिर से ज्येष्ठा तथा कनिष्ठा के रूप में वर्गीकरण किया जाता है। ज्येष्ठा नायिका नायक की पहली, तथा कनिष्ठा उसकी अभिनव प्रेमिका होती है। उदाहरण के लिए रत्नावली नाटिका में वासवदता ज्येष्ठा है, सागरिका कनिष्ठा। इस प्रकार मध्या 6 के भेद तथा प्रौढा के भी 6 भेद हो जाते है। मुग्धा नायिका केवल एक ही तरह की मानी जाती है। उसे इन भेदों में मिला देने पर इस वर्गीकरण के अनुसार नायिका के 13 भेद होते हैं।

2) परकीया (अन्या) नायिका भेदनिर्देशः

स्वीया नायिका के भेदो के उपरान्त आचार्य विश्वनाथ परकीया नायिका के भेदों का निर्देश करते हुए कहते हैं कि–

''परकीया द्विधा प्रोक्ता परोढा कन्यका तथा''।

अर्थात् परकीया (अन्य स्त्री, अन्या) नायिका के दो भेद हुआ करते हैं।

1) परोठा (पर–परिणीता)

2) कन्यका (अपरिणीता)

इन द्विविध 'परकीया' नायिकाओं में परोठा (पर–परिणीता) नायिका वह है जो यात्रा आदि की शौकीन हुआ करती है। अन्य जनों से प्रेम प्रसड्ग रखा करती है और जिस किसी से भी बातचीत अथवा संग साथ रखने में भी कोई लज्जा (शर्म) नहीं हुआ करती है। यथाः

''यात्रादिनिरताऽन्योठा कुलटा गलितत्रपा''

इसके अतिरिक्त कन्यका (अपरिणीता) वह नायिका है जो नवयुवती हो, अतिवाहित हो और लज्जाशील हुआ करती हो। यथा :

''कन्या त्वजातोपयमासलज्जा नवयौवना''।

परकीय नायिका का स्वरूप हमें', मालती माधव' आदि नाटक में चित्रित 'मालती' आदि के चित्र में देखा जा सकता है।

3) सामान्या (साधारण स्त्री) नायिका निरूपण :

धीराकलाप्रगल्भा स्योद्वेश्या सामान्यनायिका।।

निर्गुणानपि न द्वेष्टि न रज्यति गुणिष्वपि।

वित्तमात्रं समालोक्य सा रागं दर्शयेद्वहिः।।

काममड़ीकृतमपि परिक्षीणधनं नरम्।

मात्रा निःसारये देषा पुनः संधानकाड़्क्षया।।

तस्कराः पण्डका मूर्खाः सुखप्राप्तधनास्तथा।

लिंगनश्छन्नकसमसद्या अस्याः प्रायेण वल्लभाः।।

एषापि मदनादत्ता क्वापि सत्यानुरागिणी।

रक्तायां वा विरक्तायां रतमस्यां सुदुर्लभम्।।

अर्थात्– सामान्य वह नायिका है जो रति कला में कुशल, संगीत, कला आदि में पारंगत हुआ करती है तथा जिसे साधारण तथा वेश्या कहते हैं। यह नायिका साधारण स्त्री होती है न तो यह गुणहीन पुरूषों से नफरत करती है और न गुणी लोगों से प्रेम करती है। यह केवल धन देखकर किसी से भी बाहरी प्रेम प्रकट करती है। इस नायिका के प्रेमी चोर, नपुंसक, मूर्ख, बिना मेहनत का धन पाने वाले, सन्यासी, ब्रहमचारी, छिपे प्रेमी आदि हुआ करते हैं। कभी–कभी इस प्रकार की नायिका जब मदनातुर हो, किसी के प्रति सच्चा प्रेम भी रखने लग जाती है तथा ऐसी नायिका के साथ–चाहे वह अनुरागवती हो या विरक्त हो, रति प्रसड्.ग की बात बड़ी कठिन हुआ करती है।

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त 16 प्रकार की नायिकाओं (13 प्रकार की स्वीया, 2 प्रकार की परकीया और 1 प्रकार की साधारणी (सामान्य स्त्री)) के भी अवस्था भेद से आठ भेद होते हैं

1) **स्वाधीनभर्तृका** : जिसका प्रणयी उसके प्रेम की डोर से बंधा हुआ उसे छोडकर अन्यत्र नहीं जा सकता क्योंकि नायक के प्रति इसके विविध विलास बडे मनोरंजक और विचित्र हुआ करते हैं।

2) **खण्डिता** : का नायक दूसरी नायिका के साथ रात गुजार कर उसका अपराध करता है और प्रातः जब लौटता है तो परस्त्री संम्भोग के चिहनो से युक्त होता है जिसे देखकर खण्डिता कुलपित हो जाया करती है।

3) **अभिसारिका** : नायिका सजधजकर या तो स्वय नायक से मिलने जाती है या दूती आदि के द्वारा उसे अपने पास बुला लेती है।

4) **कलहान्तरिता** : नायिका कलह के कारण प्रिय से वियुक्त हो जाती है तथा गुस्से में आकर प्रिय का निरादर करती है फिर स्वयं पछताया करती है।

5) **विप्रलब्धा** : नायिका वह है जो संकेतस्थल पर प्रिय से मिलने जाती है, पर वहाँ प्रियतम को नहीं पाती, उसके द्वारा ठगी सी जाती है।

6) **प्रोषितभर्तृका** : वह नायिका है जो कि किसी कारणवश, अपने प्रियतम के परदेश चले जाने के कारण, कामवेदना से व्यक्ति रहा करती है।

7) **वासकसज्जा** : नायिका नायक के आने की राह से सजधज की बैठी रहती है। नायक के आने के विषय में उसके हृदय मे पूर्ण आशा होती है।

8) **विरहोत्कण्ठिता** : वह नायिका है जिसका प्रियतम उससे मिलने के लिए, उत्सुक होने पर भी ठीक समय पर नहीं आता। जिसके कारण नायिका के हृदय में खलबली मची रहती है कि वे आयेगी कि नहीं इसी आशा तथा निराशा का संधर्ष उसके दिल में रहता है।

5. निम्न तालिका द्वारा नायिका के भेदों को स्पष्ट किया जा रहा है।

1	2	3
स्वीया (स्वस्त्री) (1) मुग्धा (2) मध्या — धीरा, धीराधीरा, अधीरा (3) प्रगल्भा — धीरा, धीराधीरा, अधीरा	अन्या (परकीया) (अन्यस्त्री) (1) परोठा (पट–परिणीता) (2) कन्यका (अपरिणीता)	सामान्या (साधारण स्त्री) अवस्था भेद से आठ भेद 1. स्वाधीनर्भतश्का 2. खण्डिता 3. अभिसारिका 4. कलहान्तरिता 5. विप्रलब्धा 6. प्रोषितमर्तश्का 7. कसकसज्जा 8. विरहोत्कण्ठिता

6) अभ्यास कार्य :

प्रश्न–1 नायिका का लक्षण लिखें?

प्रश्न–2 नायिका के तीन भेदों के नाम लिखें?

प्रश्न–3 तालिकाद्वारा नायिका के भेदोपभेदो को स्पष्ट करें ?

B.A. II SEM.	**PAPER SANSKRIT**
Unit — V (Part B)	**Lesson No. 22**

Dr. Rajesh Sharma
Asstt. Prof. in Skt.
Govt. M.AM. College, Jammu.

पाठषीर्शक :–जम्मू विश्वविद्यालय Directorate of Distance Education द्वारा B.A.-2nd Sem पत्र संस्कृत बहुविकल्पीय प्रश्न (Objective Type Questions) और उनके उत्तर.

रूपरेखा :–

- उद्देश्य

इस पाठ द्वारा छात्र सम्पूर्ण पाठयक्रम से सम्बद्ध सम्भावित प्रश्नों के लधु उत्तर देने में सक्ष्म होंगे।

- ✓ स्वप्नवासवदतम नाटक में वर्णित कथा से प्राप्त होने वाली शिक्षा से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- ✓ प्रश्नों से सम्बद्ध जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ✓ नाटकार भास से परिचित होंगे।
- ✓ नाटकार कालिदास भवभूति, हर्ष और भवभूति से सम्बन्धित प्रश्नों का अधिक कुशलता से उत्तर दे सकेंगे।
- ✓ साहित्यदर्पण को अन्तर्गत 10 रूपकों और नायक नायिका से सम्बन्धित प्रश्नों को समझ सकेंगे।

- पाठ परिचय

इस पाठ में बुहविकल्पीय प्रश्न (Objective Type Questions) और उनके उत्तर दिये गए हैं, जिनमें से एक सही और तीन गलत हैं। विद्यार्थी ठीक (सही) उत्तर को (√) चिह्न से चिह्ति करेंगें। प्रश्नों के सही उतरों को इसी पाठ के अन्त में 'उत्तरमाला' द्वारा दर्षाया गया है। पाठ में महाकवि भास विरचित स्वपन्वासवदतम नाटक, कालिदास, शूद्रक, हर्षवर्धन और भवभूति कथा 10 रूपकों एवं नायक–नायिका आदि विशयों से सम्बन्धित प्रश्न हैं।

प्र॰1 महाकविभास विचरित नाटकों की संख्या हैं।

(क) 10 (ख) 13

(ग) 12 (घ) 05

प्र॰2 प्रतिमा नाटक के रचनाकार।

(क) शूद्रक (ख) हर्ष

(ग) भास (घ) बाणभट्ट

प्र॰3 अभिषेक नाटक के कर्ता।

(क) शूद्रक (ख) कालिदास

(ग) विशाखादत्त (घ) भास

प्र॰4 बालचरित के लेखक कौन हैं।

(क) भास (ख) शूद्रक

(ग) भवभूति (घ) कालिदास

प्र॰5 उरूभंङ्ग नाटक किसने लिखा।

(क) भास (ख) राम

(ग) देव (घ) कालिदास

प्र॰6 दूतघटोत्कच के रचनाकार।

(क) हर्ष (ख) माघ

(ग) भवभूति (घ) भास

प्र॰7 भासविरचित नाटक है।

(क) दूतवाक्य (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम

(ग) भच्छकटिकम् (घ) उतररामचरित

प्र०8 कर्णभार नाटक के लेखक का नाम।

(क) कालिदास (ख) भास

(ग) श्रीहर्ष (घ) हर्ष

प्र०9 मध्यम व्यायोग नाटक किसने लिखा।

(क) हर्ष (ख) भवभूति

(ग) भास (घ) दिन्यानन्द

प्र०10 पञ्चरात्र नाटक के कर्ता कौन हैं?

(क) हर्ष (ख) भवभूति

(ग) भास (घ) कालिदास

प्र०11 प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक के कर्ता हैं।

(क) हर्ष (ख) कालू

(ग) भास (घ) चारूदत

प्र०12 स्वप्नवासवदतम नाटक के रचनाकर।

(क) भवभूति (ख) हर्ष

(ग) शूद्रक (घ) भास

प्र०13 अविमारक और चारूदत नाटक के कर्ता हैं।

(क) भास (ख) भवभूति

(ग) कालिदास (घ) हर्ष

प्र०14 स्वप्नवासवदतम नाटक के अंकों की संख्या है

(क) 6 (ख) 8

(ग) 10 (घ) 5

प्र०15 स्वप्नवासवदतम नाटक का नायक कौन है।

(क) उदयन (ख) प्रद्यति

(ग) विदूषक (घ) दौगन्धरायण

प्र०16 राजा उदयन किस देश के राजा थे ?

(क) अवन्तिका (ख) वत्स

(ग) मगघ (घ) उज्ययिनी

प्र०17 वासवदता के पिता का नाम क्या था?

(क) उदयन (ख) प्रद्योत

(ग) विदूषक (घ) यौगन्धरायण

प्र०18 उदयन की प्रथम पत्नी का क्या नाम है ?

(क) पद्मावती (ख) सुन्दरी

(ग) वासवदता (घ) सरभी

प्र०19 वत्सदेश के राजा उदयन की द्वितीय पत्नी थी?

(क) वासवदता (ख) जीया

(ग) पद्मावती (घ) महादेवी

प्र०20 उदयन के मन्त्री का क्या नाम था?

(क) यौगन्धरायण (ख) महासेन

(ग) विदूषक (घ) प्रद्योत

प्र०21 राजा दर्शक की बहन थी

(क) वासवदता (ख) महासेन

(ग) पद्मावती (घ) महादेवी

प्र०22 स्वप्नवासवदतम नाटक के नामकरण का आधार है–

(क) वासवदता का विवाह (ख) प्रतिमा

(ग) अनुराग (घ) स्वप्नदृश्य

प्र॰23 वासवदता के वीणा षिक्षक कौन हैं

(क) उदयन (ख) दामोदर

(ग) विदूषक (घ) रूमण्वान

प्र॰24 उदयन वासवदता को किस की शिक्षा देता है?

(क) वीणा वादन (ख) अभिनय

(ग) ठोल (घ) नृत्य

प्र॰25 स्वप्नवासवदतम नाटक की नायिका कौन है ?

(क) महादेवी (ख) वासवदता

(ग) आरूषी (घ) पद्मावती

प्र॰26 नाटक की उपनायिका है

(क) वासवदता (ख) महादेवी

(ग) पद्मावती (घ) आरूषी

प्र॰27 रूमण्वान कौन हैं ?

(क) चोर (ख) द्वितीय मन्त्री

(ग) प्रथममन्त्री (घ) सिपाही

प्र॰28 राजा उदयन के विदूषक हैं

(क) यौगन्धरायण (ख) वीर

(ग) रूमण्वान (घ) वसन्तक

प्र॰29 नाटक में किस गाँव में आग लगने का वर्णन है।

(क) लावाणक (ख) अवन्तिका

(ग) पाटलीपुत्र (घ) उज्जयिनि

प्र.30 राजा प्रद्योत की पुत्री थी।

(क) पद्मावती (ख) तापसी

(ग) धात्री (घ) वासवदता

प्र.31 उज्जयिनी के राजा कौन थे ?

(क) उदयन (ख) प्रद्योत

(ग) यौगन्धरायण (घ) वत्स

प्र.32 वासवदता ने नाटक में किस का वेश धारण किया था?

(क) अवन्तिका (ख) तापसी

(ग) सुन्दरी (घ) तपोवनी

प्र.33 मगधराज दर्शक की बहन कौन है ?

(क) वासवदता (ख) सुन्दरी

(ग) तापसी (घ) पद्मावती

प्र.34 वासवदता की माता का नाम क्या था ?

(क) तापसी (ख) अंगारवती

(ग) मधुरिका (घ) वसुन्धरा

प्र.35 मगधराज्य के तपोवन में रहने वाली तपस्विनी कौन थी?

(क) तापसी (ख) वासवदता

(ग) धाई (घ) पद्मावती

प्र.36 पद्मावती की उपमाता थी।

(क) यक्षणी (ख) धर्मप्रिया

(ग) धात्री (घ) वसुन्धरा

प्र.37 स्वप्नवासवदतम नाटक के श्लोक संख्या हैं–

(क) 57 (ख) 47

(ग) 67 (घ) 37

प्र॰38 स्वप्नवासवदतम नाटक का अंगीरस क्या हैं–

(क) रौद्र (ख) श्रृंगार

(ग) करूण (घ) भयानक

प्र॰39 'अनतिक्रमणीयो हि विधि' उक्ति किस नाटक में मिलती हैं–

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम (ख) प्रतिमा

(ग) स्वप्नवासवदतम (घ) अभिषेक

प्र॰40 ''चकार पंक्ति इव गच्छति भाग्य पंक्ति'' यह सूक्ति किस नाटक में प्राप्त होती है?

(क) मृच्छकटिक (ख) दशावतार

(ग) अभिषेक (घ) स्वप्नवासवदतम

प्र॰41 स्वप्न में वासवदता को देखने का वर्णन किस अंक में मिलता है?

(क) 5 (ख) 4

(ग) 3 (घ) 6

प्र॰42 वत्सराज्य के शत्रु का क्या नाम था ?

(क) महायोद्दा (ख) विदुशक

(ग) आरूणि (घ) यौगन्धरायण

प्र॰43 पद्मावती से उदयन का विवाह कराने का उपाय किसने सोचा?

(क) वासवदता (ख) विदुषक

(ग) यौगन्धरायण (घ) वसन्तक

प्र॰44 यौगन्धरायण ने किसका वेष धारण किया था ?

(क) परिव्राजक (ख) कृष्ण

(ग) पति (घ) राम

प्र.45 वासवदता ने किसका वेष धारण किया था?

(क)	माता	(ख)	अवन्तिका
(ग)	धाई	(घ)	सखी

प्र.46 नाटक किसको षिरोवेदना होती है?

(क)	महादेवी	(ख)	वासवदता
(ग)	चन्द्रमुखी	(घ)	पद्‌मावती

प्र.47 पद्‌मावती की शय्या कहा विछाई गई थी?

(क)	समुद्रगृह	(ख)	आश्रम
(ग)	जंगल	(घ)	नगरी

प्र.48 उदयन स्वप्न में किस को देखते है ?

(क)	पद्‌मावती	(ख)	वासवदता
(ग)	जंगल	(घ)	महादेवी

प्र.49 स्वप्नवासवदतम नाटक किस श्रेणी में आता है?

(क)	रामायण मूलक	(ख)	कल्पना मूलक
(ग)	उदयनकथामूलक	(घ)	महाभारतमूलक

प्र.50 भास के 13 नाटक कितने भागों में बाँटे गये?

(क)	4	(ख)	2
(ग)	6	(घ)	3

प्र.51 नाटयशास्त्र के रचनाकार कौन है?

(क)	भवभूति	(ख)	शूद्रक
(ग)	कालिदास	(घ)	भरतभूनि

प्र.52 कालिदास के कितने ग्रन्थ प्राप्त होते हैं ?

(क)	7	(ख)	4

(ग) 3 (घ) 10

प्र॰53 कालिदास किस अलंकार के लिए प्रसिद्व हैं ?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) पद्लालित्य (घ) विभावना

प्र॰54 कालिदास के नाटकों की संख्या –

(क) 4 (ख) 3

(ग) 2 (घ) 5

प्र॰55 कालिदास के महाकाव्यों की संख्या –

(क) 3 (ख) 4

(ग) 2 (घ) 1

प्र॰56 अभिज्ञान शाकुन्तलम किसकी रचना है –

(क) कालीदास (ख) भवभूति

(ग) शूद्रक (घ) कालिदास

प्र॰57 मेघदूत के कर्ता कौन है –

(क) कालिदास (ख) शूद्रक

(ग) हर्ष (घ) भवभूति

प्र॰58 माल्विकाग्निमित्रम किसने लिखा?

(क) भोलानाथ (ख) कालिदास

(ग) बाणभट्ट (घ) शूद्रक

प्र॰59 विक्रर्मोवशीयम नाटक के नाटक कार हैं

(क) भवभूति (ख) शूद्रक

(ग) कालिदास (घ) राम

प्र.60 अभिज्ञान शाकुन्तलम में कितने अंक हैं–

क) 5 (ख) 3

(ग) 8 (घ) 7

प्र.61 अभिज्ञान शाकुन्तलम की नायिका कौन हैं–

(क) शाकुन्तला (ख) वासवदता

(ग) महादेवी (घ) आरूणी

प्र.62 अभिज्ञान शाकुन्तलम का अंगीरस है?

(क) श्रृंगार (ख) हास्य

(ग) करूण (घ) वीर

प्र.63 मृच्छकटिकम के रचनाकार है?

(क) हर्ष (ख) शूद्रक

(ग) भवभूति (घ) भोलानाथ

प्र.64 मृच्छकटिकम का अंगीरस है?

(क) रौद्र (ख) करूण

(ग) भयानक (घ) श्रृंगार

प्र.65 मृच्छकटिकम में अंको की संख्या है–

(क) 10 (ख) 5

(ग) 3 (घ) 6

प्र.66 महाकवि शूद्रक का प्रकारण ग्रन्थ है–

(क) मेघदूत (ख) मृच्छकटिकम

(ग) नागानन्द (घ) उतररामचरित

प्र.67 मिट्टी की गाडी का वर्णन किस नाटक मे हैं–

(क) चारूदत (ख) नागानन्द

(ग) मृच्छकटिक (घ) महावीरचरित

प्र०68 उतरामचरित के कर्ता –

(क) कालिदास (ख) राम

(ग) हर्ष (घ) भवभूति

प्र०69 भवभूति का प्रिय रस है –

(क) करूण (ख) श्रृंगार

(ग) भयानक (घ) हास्य

प्र०70 भवभूति का मूल नाम है –

(क) नीलकण्ठ (ख) श्रीकण्ठ

(ग) भट्टगोपाल (घ) जातुकर्णो

प्र०71 भवभूति के कितने नाटक है –

(क) 04 (ख) 3

(ग) 01 (घ) 2

प्र०72 मालतीमाघव के रचनाकार –

(क) भवभूति (ख) हर्ष

(ग) कालिदास (घ) शूद्रक

प्र०73 हर्षवर्धन की कितनी कृत्तिया हैं –

(क) 3 (ख) 4

(ग) 2 (घ) 5

प्र०74 प्रियदर्शिका किसकी रचना है –

(क) कालिदास (ख) हर्ष

(ग) भवभूति (घ) भारवि्र

प्र.75 रत्नावली के कर्ता हैं –

(क) भवभूति (ख) कालिदास

(ग) भारवि्र (घ) हर्ष

प्र.76 नायक के कितने भेद हैं –

(क) 5 (ख) 4

(ग) 10 (घ) 12

प्र.77 नायिक के कितने प्रकार हैं

(क) 6 (ख) 4

(ग) 2 (घ) 3

प्र.78 नाटक में कम से कम और अधिक से अधिक कितने अंक होते हैं।

(क) 5–10 (ख) 12

(ग) 4 (घ) 11

प्र.79 उपरूपक कितने हैं।

(क) 10 (ख) 15

(ग) 18 (घ) 12

प्र.80 त्रिपुरदाह नाटक किस रूपक के अन्तर्गत आता है–

(क) नाटक (ख) प्रकरण

(ग) प्रहसन (घ) डिम

क्र **सारांश**

इन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य भी बहुविकल्पीय प्रश्न पाठ्यक्रम से सम्बन्धिन प्रश्न पत्रों में पूछे जा सकते हैं। जहाँ जो प्रश्नमाला दी गई है छात्र छात्राएँ उनसे प्रेरणा लेकर पाठ्यक्रम से सम्बद्व और भी प्रश्नों उनके उतरों की जानकारी प्राप्त करके अपनी बौद्विक क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

(उत्तरमाला) (कथा साहित्य)

1	ख	24	क	48	ख
2	ग	25	ख	49	ग
3	घ	26	ग	50	क
4	क	27	ख	51	घ
5	क	28	घ	52	क
6	घ	29	क	53	क
7	क	30	क	54	ख
8	ख	31	ख	55	ग
9	ग	32	क	56	घ
10	ग	33	घ	57	क
11	ग	34	ख	58	ख
12	घ	35	क	59	ग
13	क	36	ग	60	घ
14	क	37	क	61	क
15	क	38	ख	62	क
16	ख	39	ग	63	ख
17	ख	40	घ	64	घ
18	ग	41	क	65	क
19	ग	42	ग	66	ख
20	क	43	ग	67	ग
21	ग	44	क	68	घ
22	घ	45	ख	69	क
23	क	46	घ	70	क
		47	क	71	ख

				72	क
				73	क
				74	ख
				75	घ
				76	ख
				77	घ
				78	क
				79	ग
				80	घ